विद्या भारती प्रदीपिका

पौष से फाल्गुन, विक्रमी संवत् 2077, युगाब्द 5122

जनवरी से मार्च 2021 | वर्ष 41 अंक 2 | मूल्यः ₹35/–

विद्यालयीन शिक्षा का स्वरुप | आकाश तत्त्व | विद्या भारती ई–पाठशाला | पूज्य रज्जू भैया

School –A Centre for social Change | Natiinal Education Policy & Teacher Education

विद्या भारती उत्तरपूर्व क्षेत्र की पूर्णकालिक कार्यकर्ता बैठक राजगीर में माननीय जे.एम. काशीपति जी, अखिल भारतीय संगठन मंत्री उद्बोधन देते हुए

मा.डॉ.शिव कुमार शर्मा जी, अखिल भारतीय मंत्री से आशीर्वाद लेते हुए प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण गीता बाल भारती के भैया-बहिन

विद्या भारती प्रदीपिका

(विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका)

जनवरी से मार्च 2021 | पौष से फाल्गुन, विक्रम संवत् -2077, युगाब्द - 5122 | मूल्य 35/-रु.

मार्गदर्शक
डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा
श्री डी. रामकृष्ण राव
श्री दिलीप बेतकेकर
डॉ. रमा मिश्रा
डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे

सम्पादक
डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी

सम्पादक मण्डल
श्री राजेन्द्र सिंह बघेल
डॉ. अरुण मिश्र
श्री वासुदेव प्रजापति
डॉ. पवन शर्मा

संपादन सहायक
कौशलेश कुमार उपाध्याय

आवरण सज्जा
मारिय्याप्पा मार्टिन

प्रकाशन कार्यालय
प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे.सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गांधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली -110065
फोन नं. 011-29840126,29840013
ईमेल-vbpradeepika@gmail.com

सदस्यता शुल्क
वार्षिक शुल्क- 120/-रु.
दस वर्षीय शुल्क- 800/-रु.

शुल्क राशि 'विद्या भारती प्रदीपिका' के बचत खाता क्र. 1130307980 सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC-CBIN0283940 ब्रांच नेहरू नगर, नई दिल्ली में जमा कर, पत्र द्वारा कार्यालय को सूचित करें।

मुद्रण- जेनिसिस प्रिंटर,
सी 74, ओखला डस्ट्रीयल एरिया,
फेस-1, नई दिल्ली-110020

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी	4
विद्यालयीन शिक्षा का स्वरूप : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में	प्रो. गोविन्द प्रसाद शर्मा	5
प्रभावशाली शिक्षक	डॉ. विभा दत्ता	7
स्कूली बच्चे व सुरक्षा	श्री प्रियांक कानूनगो	10
कहना क्यों नहीं मानते आज के बच्चे	सुश्री सुषमा यदुवंशी	13
बाल केन्द्रित क्रिया आधारित शिक्षण	श्री रवि कुमार	16
विवेकानंदः पत्रावली	स्वामी विवेकानंद	19
पूज्य रज्जू भैया	डॉ. शिव कुमार शर्मा	20
आकाश तत्त्व	डॉ. उमेश चन्द वर्मा	22
डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर	प्रो. राजकुमार फलवारिया	25
विद्या भारती ई-पाठशाला	श्री राकेश शर्मा	28
संत साहित्य में जीवन मूल्य	डॉ. ऋतु	31
पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी की स्थिति एवं सम्भावनाएँ	श्री ब्रह्माजी राव	33
राष्ट्रीय चेतना व एकता के संवाहक	श्री शैलेन्द्र विक्रम	37
ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण की स्थिति	श्री संजय स्वामी	40
मंत्र (कहानी)	प्रेमचन्द	43
तप्त है फिर से जवानी	प्रो. हरीश अरोड़ा	49
School –A Centre for Social Change	Shri D.Ramkrishna Rao	50
Decoding New Education Policy	Smt. Madhu Ved	52
National Education Policy and Teacher Education	Shri Deshraj Sharma	54
Primary Education in Mother Tongue	Smt. Vidya Deshpande	57
RE Examining the Regulatory System of Indian Schools	Shri Chandrabhushan Sharma	59
Rabindranath Tagore: Modern Vaggekara	Dr. Ved Mitra Shukla	63

प्रदीपिका में प्रकाशित विचार रचनाकारों के हैं, पत्रिका की सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

इतिहास-मंथन से प्राप्त विष और अमृत, त्याज्य और वरेण्य का विवेकप्राप्त मनुष्य एवं समाज वर्तमान और भविष्य को भी, बिना रुदन के सोत्साह, स्व के अनुकूल, स्वरूप के अनुरूप ढाल लेने की क्षमता वाला हो जाता है। शर्त यही है कि इस प्रक्रिया में विगत-मोह हुआ वह अपनी स्मृति को, अपने स्वरूप को बचाए, बनाए रखे। यह सामर्थ्य भी उसमें तब आता है जब वह अपनी स्मृति और स्वरूप का सतत चिंतन और दर्शन करता हो। तभी कर्मशीलता से अलंघ्य तथा अकल्पनीय स्थितियाँ भी काल का अतिक्रमण कर गतिशील हो उठती हैं।

हमारा भारत देश आज फिर एक बार जागृति की अवस्था में आया दिखाई देता है। जड़ मानसिकता ने जिन बातों को सर्वथा अपरिवर्तनीय मान लिया था, जिन समस्याओं को भ्रमवश लाइलाज जान लिया था, जिनके समाधान की दिशा में आगे न बढ़ जाने की कसम जैसी खा ली थी, आज वे सभी बातें इतिहास के कुहासे में खो सी गईं हैं, दुःस्वप्न की तरह भुलाई जाने योग्य हो गई हैं। एकात्मता और समरसता की आड़े आने वाली धारा 370, 35ए के ध्वंसावशेष के ऊपर एकात्म भारत सुख की साँस लेता स्पष्ट दिखाई देता है। अयोध्या में राम-मंदिर के लिए सर्वोच्च न्यायालय की सम्मति, सहमति एवं सर्वसमाज का आनंदपूर्ण सहयोग इसके जीवंत उदाहरण हैं।

विश्वव्यापी करोना महामारी के भयंकर दुष्प्रभावों की गाथा, अभी अतीत की बात नहीं हुई है। यूरोप और अमेरिका में तो मायावियों की तरह नए-नए रूप धारण कर यह रक्तबीज पुनः उठ खड़ा हो रहा है। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में नव आविष्कारों और संसाधनों के लिए इस देश को अग्रणी तो दुनिया ने कभी नहीं माना। चिकित्साशास्त्रियों ने करोना के कारण कैसे भयावह परिणामों की घोषणा कर दी थी, लेकिन आज के भारत ने अपने अध्यवसाय से प्रचुर संसाधन भी जुटाए और अत्यल्प समय में करोना की चिकित्सा के लिए दो-दो वैक्सीन भी बनाईं (दो अन्य वैक्सीन भी तैयार हैं)। इतनी कि अपनी बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति कर ले और अन्य देशों की अपेक्षा भी पूरी करे। पड़ोसी भूटान, मालदीव, नेपाल, बांग्लादेश, म्यांमार, सेशेल्स को सहायता के तौर पर वैक्सीन देने में तनिक सा भी संकोच हमने नहीं किया। इसके अतिरिक्त सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, मोरक्को, ब्राजील और अत्यंत विकसित माने जाने वाले यूरोपीय देशों को भी उदारतापूर्वक वैक्सीन देना हमने स्वीकार किया है। यह देना अमृतत्व है। ऋग्वेद कहता है कि 'दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते' यानि देने वाला अमरत्व को प्राप्त करता है। करोना रक्तबीज के नाश के लिए ये वैक्सीन ही तो माँ काली का खप्पर सिद्ध होंगी।

ब्राजील के राष्ट्रपति जेयर बोलसोनारो ने ट्वीट द्वारा भारत को धन्यवाद करते हुए अपने संदेश के साथ भगवान् हनुमान जी का एक चित्र भी साझा किया है जिसमें वे भारत से ब्राजील संजीवनी लेकर जाते हुए दिखाई देते हैं। दूसरों द्वारा भारतीय प्रतीकों का ऐसा भावपूर्ण सुष्ठु प्रयोग किस भारतीय को आनंदातिरेक से नहीं भर देगा? क्या 'सर्वे संतु निरामयाः' सम्पूर्ण मानव के सुख की कामना और विधान पारंपरिक भारतीय मूल्य ये ही नहीं हैं क्या? सच्चे अर्थों में विश्वबंधुत्व, वैश्विकता, भूमण्डलीकरण (Globalisation) यही नहीं है क्या?

महामारी के दुष्प्रभावों के बावजूद अपने अर्थ जगत् को नया अर्थ देता भारत दिखाई पड़ता है तो अपने रक्षा संसाधनों को विकसित करता 'तेजस्' जैसे उत्कृष्ट हल्के लड़ाकू विमानों का निर्माण करता भारत दृष्टिगत होता है। इसकी इच्छा विदेशी राष्ट्र भी कर रहे हैं। दुष्टवृत्ति से अशुभ चाहने वाले दण्ड्य परराष्ट्रों को सबक सिखाने वाला भारत, निकट अतीत के अनेक वर्षों में, पहली ही बार अनुभव में आ रहा है।

इसमें कोई संशय नहीं कि 'गतसंदेह' होकर उठ खड़ा हुआ यह भारत अपनी शक्ति का साक्षात्कार कर देश विदेश में अपने गौरव को पुनः प्राप्त कर रहा है। सच्चे अर्थों में यह 'सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र' के रूप में अपने विराट् रूप में दर्शन दे रहा है। ऐसा विराट् रूप जो दुर्जन को दहला देता है लेकिन सज्जन शक्ति को भरोसा देने वाला है।

यह आज का प्रणम्य भारत है।

डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी

विद्यालयीन शिक्षा का स्वरूप : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

प्रो. गोविन्द प्रसाद शर्मा
अध्यक्ष, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
सुप्रसिद्ध चिंतक व विचारक,
शिक्षाविद्, भारतीय शिक्षा के विशेषज्ञ
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी ग्रंथ अकादमी,
पूर्व अध्यक्ष, विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

संपर्क
मो. 9425430172

21 वीं शताब्दी के लिए 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी। गहन विचार-विमर्श के साथ अभी तक के अनुभवों तथा वर्तमान में शिक्षा की स्थिति को ध्यान में रखकर भविष्य के भारत के लिए यह शिक्षा नीति बनाई गई है। इसका लक्ष्य ज्ञानयुक्त, समृद्ध भारत बनाना है तथा वर्ष 2030 तक सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करना है। अकादमिक दृष्टि से इस शिक्षा नीति में बहुत कुछ अच्छा है। यह समग्र है, भारत केन्द्रित है तथापि स्कूली शिक्षा को केन्द्र मानकर कुछ विशेष पहलुओं और विशेषताओं पर विचार किया जा सकता है।

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' में स्कूली शिक्षा में बुनियादी सुधार सुझाए गए हैं। परिणामतः स्कूली शिक्षा का पूरा ढाँचा और परिदृश्य बदल जाएगा। संरचनात्मक दृष्टि से स्कूली शिक्षा वर्तमान 10+2 के स्थान पर 5+3+3+4 की नई व्यवस्था के अनुसार होगी, जिसमें शिशु वाटिका, आंगनबाड़ी सम्मिलित होंगी तथा छठी कक्षा से ही व्यावसायिक शिक्षा और इंटर्नशिप जुड़ी रहेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिशु परिचर्या एवं शिक्षा को गम्भीरता से लिया गया है। इसे विद्यालयीन शिक्षा में 'फाउंडेशनल स्तर की शिक्षा' के रूप में कक्षा दो तक जोड़ा गया है। इस रूप में 'फाउंडेशन शिक्षा' कक्षा दो तक मानी गई है। शैक्षणिक दृष्टि से यह सकारात्मक परिणाम देने वाली व्यवस्था सिद्ध होगी। पर इसके परिणामस्वरूप धरातलीय समस्याओं के विकसित होने की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता। वर्तमान में लगभग 14.85 लाख प्राइमरी और माध्यमिक विद्यालय हैं। साथ ही 1.25 लाख हायर सेकेंडरी स्कूल हैं। आंगनवाड़ी केन्द्रों की संख्या भी 14 लाख के करीब है। इन सब में प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता और आंगनवाड़ी केन्द्रों में योग्य और प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं को होना बहुत बड़ी चुनौती है। आंगनवाड़ी को औपचारिक शिक्षा का भाग बनाने से लगभग 50 लाख नए बालक और बालिकाएँ औपचारिक शिक्षा का भाग होंगे। इनकी समुचित व्यवस्था एक चुनौती है। इसके साथ ही यह भी विचारणीय है कि शिक्षा समवर्ती सूची में है। ऐसी स्थिति में राज्य सरकारों की भूमिका काफी गंभीर और निर्णायक रहेगी।

अध्ययन की दृष्टि से छात्र का मनपसंद विषय चुनना और संकायों की कठोर सीमाओं को उदार बनाना, छात्र को उसकी अभिरुचि के अनुसार उसकी प्रगति करने के अवसर प्रदान करेगा। छात्र कला, विज्ञान, वाणिज्य की किसी एक धारा को चुनने के स्थान पर अब इन धाराओं में किसी भी विषय को चुन सकेगा। नई शिक्षा नीति में आर्ट्स-साइंस, करिक्यूलर, एक्स्ट्रा करिक्यूलर और व्यावसायिक-शैक्षिक विषयों के बीच कोई अंतर नहीं होगा। विषयों के चयन में किसी एक संकाय तक सीमित विकल्प और जड़ता का अंत होगा।

यह स्वागत योग्य है कि शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं/मातृभाषा को महत्त्व दिया गया है। हालाँकि 1986 की शिक्षा नीति में त्रिभाषा फॉर्मूला में भी मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा के संबंध में प्रावधान था तथापि इस शिक्षा नीति में और भी स्पष्ट रूप से मातृभाषा के महत्त्व को स्थापित किया गया है। शिक्षा पर बाजार के दबावों के बावजूद मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषाओं में प्राथमिक स्तर की शिक्षा देने की अनुशंसा भारत जैसे बहुभाषी देश में मातृभाषाओं का सम्मान तो है ही, वह भाषाओं के भविष्य में जीवित बने रहने के लिए भी आवश्यक है। विश्व के शिक्षाविद् मातृभाषा के महत्त्व और उसमें शिक्षण को लेकर एकमत हैं। वे मातृभाषा के बिना स्कूल

"एक भारतीय होने के नाते हमारे लिए यह गौरव की बात है कि शताब्दियों से उपेक्षित भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा में सम्मिलित करने और उसे सम्मानजनक स्थान देने की पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति में की गई है। इसके दीर्घकालीन परिणाम होंगे। हम अपनी समृद्ध ज्ञान परंपरा से परिचित होंगे ही, साथ ही हम मानसिक हीनभावना से भी मुक्त होंगे।"

की कल्पना ही नहीं करते। यूक्रेन के शिक्षाविद् वसीली सुखेम्लीन्स्की का कहना है कि "एक स्कूल सच्चे अर्थों में संस्कृति का मंदिर केवल तभी बन पाता है, जब उसमें चार देवता प्रतिष्ठित हों-मातृभूमि, मनुष्य (शिक्षक और छात्र), पुस्तक और मातृभाषा।" स्पष्ट है कि विद्यालय की अवधारणा में अधोसंरचना का कम महत्त्व है, महत्त्व मातृभाषा और मातृभूमि का है।

एक भारतीय होने के नाते हमारे लिए यह गौरव की बात है कि शताब्दियों से उपेक्षित भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा में सम्मिलित करने और उसे सम्मानजनक स्थान देने की पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति में की गई है। इसके दीर्घकालीन परिणाम होंगे। हम अपनी समृद्ध ज्ञान परंपरा से परिचित होंगे ही, साथ ही हम मानसिक हीनभावना से भी मुक्त होंगे। दशाब्दियों से हमें यह पढ़ाया जाता रहा है कि ज्ञान का एकमेव स्रोत पश्चिम (यूरोप) रहा है। हमारे यहाँ ज्ञान था ही नहीं। यहाँ तक कि हमें हमारा इतिहास, हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता क्या है, यह भी पश्चिम के स्रोतों से और वहाँ के विचारकों के लेखन से समझाया जाता है। शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी का कहना था कि "भारत की शिक्षा भारत केन्द्रित न होकर यूरोप केन्द्रित है।" पर अब हम भारत केन्द्रित शिक्षा के नए और बहुप्रतीक्षित युग में प्रवेश करेंगे। इसका परिणाम यह होगा कि हमरी शिक्षा यूरोप केन्द्रित शैक्षिक और वैचारिक आभामंडल से बाहर निकलकर स्वयं अपने आभामंडल का निर्माण कर सकेगी और उसकी दमक विश्व में फैल सकेगी।

शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण है। सब कुछ श्रेष्ठ है, पर शिक्षक कमजोर है तो अपेक्षित परिणाम नहीं निकल सकते। राष्ट्रीय शिक्षा नीति कहती है कि "शिक्षा व्यवस्था में किए जा रहे बुनियादी बदलावों के केन्द्र में अवश्य ही शिक्षक होने चाहिए।" शिक्षा नीति में शिक्षक को सक्षम बनाने के लिए और उसकी प्रतिष्ठा को समाज में सम्मानजनक स्थिति में प्रतिष्ठित करने के लिए बहुत कुछ है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि शिक्षक बच्चों के भविष्य का निर्माण करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक को छात्रों का रोल मॉडल (आदर्श) मानती हैं। इस दृष्टि से शिक्षक भर्ती, पद स्थापना, सेवा-शर्तो, अधिकारों तथा शिक्षक की गुणवत्ता के संबंध में इस नीति में गंभीरता से विचार किया गया है। शिक्षकों के अनावश्यक स्थानांतरण पर रोक लगाने की अनुशंसा शिक्षा नीति में है। जिस तीव्रता से शिक्षा क्षेत्र में तकनीक का प्रवेश हो रहा है, नए नवाचार हो रहे हैं, उन्हें देखते हुए शिक्षक का नवीनतम ज्ञान और अध्यापन-विधियों में निपुण होना आवश्यक है। आज का समय श्रेष्ठता का समय है। विश्व में हमें श्रेष्ठ बनने के लिए सर्वश्रेष्ठों के साथ खड़ा होना होगा। यह तब ही संभव है जब हमारी शिक्षा श्रेष्ठ हो और शिक्षक श्रेष्ठ हो। इस दृष्टि से शिक्षकों के समय-समय पर प्रशिक्षण और पुनश्चर्या कार्यक्रम होते रहने चाहिए। शिक्षक पात्रता परीक्षा (टी.ई.टी.) का विशेष महत्त्व है।

स्कूल काम्पलेक्स/क्लस्टर के माध्यम से कुशल संसाधन और प्रभावी गवर्नेंस की व्यवस्था, निजी और सरकारी स्कूलों सहित सभी स्कूलों में पारस्परिक सहयोग बढ़ाने की योजना, स्कूलों के मूल्यांकन और प्रमाणन के समान मापदंड आदि कुछ ऐसी व्यवस्थाओं के सुझाव दिए गए हैं जिसके परिणामस्वरूप स्कूली शिक्षा के परिदृश्य में सकारात्मक बदलाव आएगा। ये तीनों सुझाव सैद्धांतिक दृष्टि से ठीक हैं, पर इनका कार्यान्वयन धरातलीय आधार पर कैसे हो सकेगा ? यह प्रशासनिक कसावट और शिक्षकों के सकारात्मक सहयोग पर निर्भर करेगा। शिक्षा से सामान्यतः दो अपेक्षाएँ की जाती हैं। एक व्यक्तिगत, दूसरी सामाजिक। व्यक्तिगत दृष्टि से शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति के जीवन को श्रेष्ठ बना सके, उसके अंदर की क्षमताओं को विकसित करने में सहायक हो सके। सामाजिक दृष्टि से शिक्षा अच्छे नागरिक को बनाने में सहायक होनी चाहिए। शिक्षा के माध्यम से एक व्यक्ति में सामाजिकता के गुण विकसित होने चाहिए और उसमें मानवता के लिए प्रेम होना चाहिए।

व्यक्तिगत हितों और सामाजिकता के गुणों में कोई विरोध नहीं है, अलवत्ता एक क्षमतावान व्यक्ति सामाजिक दायित्वों का निर्वाह स्वयं की प्रेरणा से भली प्रकार कर सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 शिक्षा से इन दोनों अपेक्षाओं को पूर्ण करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सकारात्मक और उज्ज्वल भविष्य के लिए है। इसमें मनुष्य निर्माण और देश के विकास का संकल्प है। ज्ञान वैश्विक होता है, पर शिक्षा राष्ट्रीय होती है। निश्चत ही यह शिक्षा नीति राष्ट्रीय गौरव को बढ़ाने वाली और वैश्विक स्तर के योग्य छात्रों का निर्माण करने वाली सिद्ध होगी।

"व्यक्तिगत हितों और सामाजिकता के गुणों में कोई विरोध नहीं है, अलवत्ता एक क्षमतावान व्यक्ति सामाजिक दायित्वों का निर्वाह स्वयं की प्रेरणा से भली प्रकार कर सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 शिक्षा से इन दोनों अपेक्षाओं को पूर्ण करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है।"

प्रभावशाली शिक्षक

विचार पथ

डा० विभा दत्त
लेखक, शैक्षिक चिंतक,
शैक्षिक शोध परामर्शदाता,
उपाध्यक्ष,
भारतीय शिक्षा शोध संस्थान

संपर्क
मो. 9336037430

शैक्षिक तंत्र की सफलता और राष्ट्र की प्रगति, योग्य और प्रभावशाली शिक्षकों पर निर्भर करती है किन्तु प्रभावशाली शिक्षकों का चयन एक कठिन और उलझा हुआ कार्य है। इस कठिन व दुष्कर कार्य को छात्रों और राष्ट्र की प्रगति के लिए करना अत्यंत आवश्यक है। यह सत्य है कि राष्ट्र शिक्षकों की प्रगति स्तर से अधिक ऊँचा नहीं उठ सकता है। योग्य शिक्षक से क्या अभिप्राय है? यदि यह स्पष्ट हो जाए तब प्रभावशाली शिक्षक का चयन करना, प्रशिक्षित करना और गढ़ना सहज हो जायेगा।

योग्य और प्रभावशाली शिक्षक के प्रत्यय में मतैक्य का अभाव है- किसी के लिए विषय विशेषज्ञता, किसी के लिए प्रभावशाली शिक्षण विधियों का प्रयोगकर्ता, किसी के लिए परीक्षा में छात्रों को अधिक अंक दिलवाने वाला तो किसी के लिए छात्रों और अन्य शिक्षकों के मध्य लोकप्रिय, तय मानक के समान शिक्षक योग्य तथा प्रभावशील होते हैं। वास्तव में प्रभावशाली शिक्षकों में उक्त सभी विशेषताएँ तो होती ही है इसके साथ ही और भी अनेक योग्यताएँ छात्रों पर उनके प्रभाव को चिर स्थाई और अविस्मरणीय बना देती हैं। कर्वे ने कहा भी है- A Teacher effects eternity; he can never tell where his influence stops. शिक्षक उसी सीमा तक सफल है जिस सीमा तक वे छात्रों की आधारभूत योग्यताओं का विकास कर सके। भाषा पर अधिकार, स्व अनुशासन, निष्पक्ष निर्णय क्षमता, असफलता में भी सीखने का व आवश्यक सावधानी रखने के प्रयास को समझना, परिश्रमशीलता, क्रियाशीलता में एकग्रता और धीरज जैसे गुणों का छात्रों में विकास कर सकें। योग्य शिक्षक छात्रों को परिवेश के प्रति सजग बनाते हैं, कारण यह है कि व्यक्ति, समाज से अलग अर्थहीन और समाज व्यक्तियों के बिना असम्भव है। योग्य शिक्षक छात्रों के व्यक्तित्व का विकास इस प्रकार करते हैं कि निरन्तर केन्द्र (छात्र) और पर्यावरण (समाज) के हित का आपस में सम्बन्ध सुदृढ़ होता जाये। छात्र भविष्य में आने वाली समस्याओं को समझते हुए पर्यावरण की सुरक्षा करने वाला बने। शिक्षक छात्रों को समाज में सहयोग (Co-existence) से रहना सिखाते हैं।

शिक्षकों के चयन में सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है उनकी विषय में रुचि और विषय विशेषज्ञ होना। प्रभावशाली शिक्षक के लिए विषय का सम्यक् ज्ञान आवश्यक है। इस ज्ञान में अन्य विषयों से जो सम्बन्ध है वह भी छात्रों को ज्ञात कराना चाहिए। मात्र एक विषय का विशद ज्ञान छात्रों के लिए किसी गहरे कुंए की भांति हो जायेगा उसे अन्य विषयों से जोड़ कर जो विषय ज्ञान विस्तार में सहायक होगा जिससे विषय अधिक ग्राह्य और रोचक बनेगा। विषय का ज्ञान नित्य बढ़ता है। प्रभावशाली शिक्षक उससे अवगत रह कर विषय का नवीनतम ज्ञान छात्रों को देते हैं। तथा इस कार्य में वे प्रायः ज्ञात से अज्ञात का मार्ग अपनाते हैं वे निरन्तर ज्ञान को छात्रों के लिए स्थूल से सूक्ष्म बनाते हैं। अस्पष्ट से स्पष्ट, विशिष्ट से सामान्य, सम्पूर्ण से प्रत्येक अंश के स्पष्टीकरण की ओर छात्रों की प्रवृत्ति को प्रगत कराते हैं। वे शब्द प्रत्यय से वास्तविक और अधिक ग्राह्य विषय वस्तु बनाते हैं।

प्रभावशाली शिक्षक सदा उचित तैयारी के उपरान्त ही प्रभावशाली शिक्षण करते हैं। इस प्रकार शिक्षण रोचक समयानुसार और प्रभावी बनता है, कहा भी गया है- A poor teacher informs, an average teacher makes you understand, a good teacher educates and an excellent teacher inspires. केवल प्रभावशाली शिक्षक ही छात्रों में विषय को और अधिक जानने की उत्कंठा जगा सकते हैं, योग्य शिक्षक स्वयं छात्रों के स्तर पर आकर धीरे-धीरे उन्हें नई जानकारियाँ देकर उच्च स्तरों पर ले जाते हैं। इस प्रकार विषय रोचक, ग्राह्य और क्रियामय बन सकता है।

"शिक्षक का आत्मविश्वास विषय वस्तु को स्पष्ट रूप से समझने की क्षमता प्रदान करता है। उनका मधुर प्रभावपूर्ण स्वर और सामूहिक कार्यों में निष्ठापूर्वक, उत्तरदायित्व पूर्ण कर्तव्य निर्वहण, छात्रों की छिपी योग्यताओं के विकास और प्रजातांत्रिक व्यक्तित्व गठन का सफल प्रयास करती हैं।"

क्रिया पक्ष को सिद्धांत से जोड़कर योग्य शिक्षक छात्रों में नया बताने, नये ढंग से क्रिया सम्पादन की क्षमता का विकास कर सभी छात्रों को अपनी गति से विकास करने का अवसर देते हैं। शिक्षक का आत्म विश्वास विषय वस्तु को स्पष्ट रूप से समझने की क्षमता प्रदान करता है। उनका मधुर प्रभावपूर्ण स्वर और सामूहिक कार्यों में निष्ठापूर्वक, उत्तरदायित्व पूर्ण कर्तव्य निर्वहण, छात्रों की छिपी योग्यताओं के विकास और प्रजातांत्रिक व्यक्तित्व गठन का सफल प्रयास करती हैं। उनके विचारों की सादगी, निष्कपटता, पवित्रता प्रभावशाली शिक्षक के व्यक्तित्व का छात्रों पर स्थाई प्रभाव पड़ता है। योग्य शिक्षक सभी छात्रों को समान क्षमता वाला नहीं मानते हैं। वे छात्रों की वैयक्तिक विशिष्टताओं को पहचानकर समूह में भी प्रत्येक का विकास सुलभ कराते हैं। छात्रों में किसी को नैतिक बल, किसी को नियंत्रण, किसी को प्रोत्साहन आदि की आवश्यकता होती है। आवश्यकताएँ समयानुसार बदल भी सकती हैं, वे प्रत्येक छात्र की आवश्यकता हेतु साधन सुलभ कराते हैं। योग्य शिक्षक दुरूह और कठिन कार्य सम्पादन में हँसी का पुट जोड़कर स्थिति को दीर्घकालिक प्रभाव योग्य बनाना जानते हैं। यह सत्य है कि प्रभावशाली शिक्षक छात्रों की हँसी (खिल्ली) कभी नहीं उड़ाते हैं क्योंकि इसका कुप्रभाव दीर्घ कालिक होता है। प्रभावशाली शिक्षक छात्रों के प्रश्नों के उत्तर उत्साह और धैर्य से देते हैं और छात्रों के दिए उत्तरों पर आधारित प्रश्न पूछकर छात्रों की ज्ञान पिपासा बढ़ाते हैं, उन्हें जिज्ञासु बनाते हैं तथा उनमें अन्वेषण क्षमता, विषय को और अधिक जानने की रुचि विकसित करते हैं।

भारत लोकतांत्रिक राष्ट्र है। शासन की बागडोर आज के छात्रों पर आने वाली है। भविष्य मे शिक्षा से जुड़े रहे, अतः उन्हें शिक्षा के द्वारा कर्तव्य पालन की सीख देना आवश्यक हैं। शिक्षक को स्वयं भी कर्तव्य निर्वहन में सतर्कता रखनी चाहिए। शिक्षक की छोटी-छोटी सावधानियों (कक्षा समाप्ति पर श्यामपट्ट स्वच्छ करना, कागजों आदि को कूड़ेदान में ही डालना अन्यत्र नहीं) से छात्र योग्य सामाजिक सद्-संस्कार, सदाचरण सीखते हैं।

प्रभावशाली शिक्षक छात्रों का समस्त विकास उनके वैयक्तिक व समाजिक प्रगति हेतु करते हैं। वे नये दृष्टिकोण, तथ्य, विषयवस्तु के विकास हेतु अर्जित करते हैं। उन्हें छात्रों के विकास में ही अपना विकास दिखाई देता है। समाज में छात्र का बड़ा कार्य व कार्यकर्त्ताओं की प्रशंसा व्यक्तिगत यश की अनुभूति सा लगता है। आज जीवन की व्यस्तताओं, समयाभाव व स्वार्थसिद्धि हेतु की जाने वाली झूठी प्रशंसा आदि के कारण मानसिक असंतुलन से बचने की कला प्रभावशाली शिक्षक ही सिखाते हैं। वे छात्रों को एकाग्रता पूर्वक क्रिया सम्पादन/अध्ययन कार्य का अनवरत अभ्यास कराते हैं। उन्हें वर्तमान में रहना एवं (भूत के अनुभव पर) भविष्य का मार्ग बनाना सिखाते है वे सीख देते हैं- भूत भी महान् था भविष्य भी महान् है। अधिक सम्हालिये उसे जो वर्तमान है। - (मैथिलीशरण गुप्त)

प्रशिक्षण व परीक्षा में अधिक अंक अर्जित करने वाले प्रभावशाली शिक्षक बनेंगे यह आवश्यक नहीं है। परीक्षा हेतु विषय की बहुत तैयारी के बाद परीक्षा में पढ़ कर अधिक अंक प्राप्त हो सकते हैं। किन्तु विषय का विशेषज्ञ और शिक्षण में वास्तविक रुचि रखने वाले ही योग्य शिक्षक सिद्ध होते हैं। तात्पर्य यह है कि प्रायः जो और व्यवसाय योग्य नहीं समझे जाते है वे शिक्षक बन जाते हैं किन्तु आवश्यकता वास्तविक विषय विशेषज्ञ और शिक्षा में परम रुचि रखने वाले लोगों के इस क्षेत्र में चुने जाने की है। चाहे आर्थिक दृष्टि से यह क्षेत्र श्रेष्ठ न हो किन्तु जितना सम्मान योग्य शिक्षकों को मिलता है, उन्हें अन्यत्र नहीं मिल सकता। शिक्षण दीर्घकालीन भरपूर संतोष और शांति दिलाने वाला होता है।

यह सत्य है कि विषय विशेषज्ञ के लिए प्रभावशाली शिक्षक बनना सहज है किन्तु इसके साथ ही योग्य शिक्षण विधि का स्वभाविक प्रयोग भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। छात्रों की आयु के, विषय की प्रस्तुति के अनुरूप भी प्रभावशाली शिक्षक में विशेषताएँ हो सकती हैं। छोटे बच्चों के शिक्षक में व्यक्तिगत व्यवहारगत विशेषताएँ, माध्यमिक स्तर पर शिक्षण विधियों में प्रवीणता, उच्च शैक्षिक स्तर पर बौद्धिक क्षमता और बृहत् ज्ञान महत्वपूर्ण है। आजकल परम्परागत (Conformists) व्यक्ति ही शिक्षक बनते हैं। अपरम्परागत (Non Conformists) व्यक्ति भी प्रभावशाली शिक्षक बन सकते हैं उन्हें भी इस क्षेत्र में आने की प्रेरणा देनी चाहिए। शिक्षण एक सृजनात्मक कार्य है सृजन में अपने अस्तित्व को लगाकर ही छात्रों का सृजन सम्भव है। बीज अपना अस्तित्व अंकुर

"यह सत्य है कि विषय विशेषज्ञ के लिए प्रभावशाली शिक्षक बनना सहज है किन्तु इसके साथ ही योग्य शिक्षण विधि का स्वभाविक प्रयोग भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। छात्रों की आयु के, विषय की प्रस्तुति के अनुरूप भी प्रभावशाली शिक्षक में विशेषताएँ हो सकती हैं। छोटे बच्चों के शिक्षक में व्यक्तिगत व्यवहारगत विशेषताएँ, माध्यमिक स्तर पर शिक्षण विधियों में प्रवीणता, उच्च शैक्षिक स्तर पर बौद्धिक क्षमता और बृहत् ज्ञान महत्त्वपूर्ण है।"

''वही प्रभावशाली शिक्षक स्वयं को सफल समझते हैं जिनके छात्र उनसे अधिक सक्षम सिद्ध होते हैं। शिक्षक पढ़ाने के क्रम में अधिक ज्ञानवान बनते हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक, अन्वेषणकर्ता न्यूटन कभी-कभी देर रात तक अध्ययन करते हुए खाली कक्षा में जाकर पढ़ाने लगते थे और इस क्रम में हल न हो सकने वाली समस्या का हल निकाल लेते थे। वास्तविक अनुसंधान शिक्षण के बिना सम्भव नहीं है।''

हेतु लगाकर नया पौधा बनाता है, एक देदीप्यमान दीपक अनेक दीप जाज्वल्यमान कर सकता है। छात्रों के विकास में स्वयं को होम हुए शिक्षक ही उनके विकास में अपना विकास देखते हैं। प्रभावशाली शिक्षक मानव निर्माण करते हुए ही मृत्यु को प्राप्त करना चाहते व उनकी कामना होती है कि उनका पुनः जन्म हो और वह पुनः शिक्षक ही बने।

ऐसा माना जाता है कि डॉक्टर यदि गलती करे तो वह निधन का कारण हो जाता है, वकील की गलती फाइलों में दब जाती है, इंजीनियर की गलती प्लास्टर के नीचे छिप जाती है किन्तु शिक्षक की गलती को राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाता है। आज दफ्तरों में फैली अनुशासनहीनता, उत्तरदायित्व की भावना का अभाव, घूस खोरी, व्यापार में जमाखोरी, धोखाधड़ी, चोरी, डकैती इन सब समस्याओं का हल समाज को प्रभावशाली शिक्षकों के माध्यम से छात्रों को सही शिक्षा देने से दूर हो सकता है। योग्य व्यवहार के आधार-मूल्य छात्र प्रभावशाली शिक्षक से सहज ही अर्जित कर लेते हैं। छात्र शिक्षक से जितना अधिक प्रभावित होता है उतना ही सहज और स्थाई मूल्य अर्जन भी होता है। यही राष्ट्र की प्रगति का आधार भी है।

शिक्षक का प्रभावशाली होना छात्र के व्यक्तित्व में परिलक्षित होता है। वही प्रभावशाली शिक्षक स्वयं को सफल समझते हैं जिनके छात्र उनसे अधिक सक्षम सिद्ध होते हैं। शिक्षक पढ़ाने के क्रम में अधिक ज्ञानवान बनते हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक, अन्वेषणकर्ता न्यूटन कभी-कभी देर रात तक अध्ययन करते हुए खाली कक्षा में जाकर पढ़ाने लगते थे और इस क्रम में हल न हो सकने वाली समस्या का हल निकाल लेते थे। वास्तविक अनुसंधान शिक्षण के बिना सम्भव नहीं है। शिक्षक निरन्तर अनुभवों के आधार पर अपने विचारों, मूल्यों में परिवर्तन, परिवर्द्धन करते रहते हैं जिसका प्रभाव छात्रों पर पड़ता रहता है। अनेक बार इस प्रभाव को छात्र तत्काल न समझ सकने के कारण आत्मसात नहीं कर पाते है। किन्तु वयवृद्धि और यथार्थ के स्पष्टीकरण के कारण शिक्षक से अलग हुए अनेक वर्षों बाद इस मूल्य का ठीक-ठीक ज्ञान और उपयोग सम्भव होता है। इस प्रकार शिक्षक एक सक्षम सामाजिक परिवर्तन कर्ता (Agent of social change) बन जाते हैं। शिक्षक और छात्रों के बीच जितनी अन्तः क्रिया होगी उतनी सहजता से शिक्षक के जीवन आदर्शों अनुसार सामाजिक परिवर्तन होगा। जैसे-जैसे शिक्षक निःस्वार्थ क्रियाशीलता का अपने छात्रों को रसास्वादन कराते हैं वैसे-वैसे छात्र सबके हित में स्वार्थ त्यागने की प्रेरणा ग्रहण करते हैं- ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।'' इस परहित का रसास्वादन करने वाले छात्र निष्काम भाव से क्रियाशील रहते हैं।

किसी के लिए सम्पदा भौतिक संपत्ति होती है किन्तु भारतीय संस्कृति में प्रभावशाली शिक्षक की आध्यात्मिक सम्पदा इतनी अधिक होती है कि उन्हें अपने लिए भौतिक सम्पदा की अकांक्षा नही होती प्रभुता का उन्हें लोभ नहीं होता है। इस कारण प्रायः समाज और राज्य की भी ओर से उनपर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगता है। विकसित संस्कृतियों में ज्ञानवान शिक्षकों को सर्वश्रेष्ठ पद दिया जाता है, कारण यह कि वे ही राष्ट्र के वास्तविक निर्माता होते हैं।

प्रभावशाली, योग्य शिक्षकों के कारण ही श्रेष्ठ समाज में व्यक्ति स्वेच्छा से वही करता है, जो सबके हित में हो। वह सत्यवादी से अधिक उन्नत होते है, सत्यवादी स्वयं के महत्व के लिए क्रियाशील होते हैं। सत्यनिष्ठ शिक्षक सत्य की प्रतिष्ठा हेतु सत्य का सहारा लेते हैं। यह एक सार्वभौमिक सत्य है व प्रभावशाली शिक्षक के जीवन का लक्ष्य इसी प्रकार के समाज को गठित करना होता है।

विद्यालय में आचार्य मात्र अपने विषय के आचार्य नहीं होते, वे बालक के आचार्य होते हैं, समाज के आचार्य होते हैं वे बालक–बालिकाओं के विकास का दायित्व लेकर चलते हैं। मात्र पाठ्यक्रम पूर्ण करा देना उनका दायित्व है ऐसा वे नहीं समझते। आचार्य द्वारा सावधानी पूर्वक एवं सुविचारित रूप से प्रयुक्त किया गया शब्द, अर्थ तथा भाव की अभिव्यक्ति विद्यार्थी जीवन के लिए दिशा निश्चित करती है। पाठानुकूल आचार्य के भाव एवं उसकी हृदय के द्वारा भावाभिव्यक्ति होती है तभी वह पाठ बालक के मन को स्पर्श करता है, बुद्धि को जगाता है तथा विषय बालक–बालिकाओं को आत्मसात होता चला जाता है। आवश्कतानुसार आचार्य द्वारा श्यामपट्ट का प्रयोग होता है, दृश्य श्रव्य सामग्री का प्रयोग होता है, छात्र भी विषयवस्तु के विकास में सहभागी होते हैं अर्थात मात्र लैक्चर विधि से पाठ्यक्रम का निर्वाहन न करते हुए बल्कि छात्रों की जिज्ञासा वृत्ति को बढ़ाते हुए, प्रश्नोत्तर, वार्त्तालाप, प्रत्यक्ष प्रयोगादि में उन्हें सहभागी करते हुए विषयवस्तु को आगे बढ़ाया जाता है। परिणामस्वरूप कठिन से कठिन शब्द, विषय सहज रूप से बालकों को हृदयंगम हो जाता है।

स्कूली बच्चे व सुरक्षा

देखरेख

श्री प्रियांक कानूनगो
अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग

संपर्क
मो. 9425637509

स्कूलों में बच्चों की सुरक्षा राष्ट्रीय चिंता का विषय हो सकता है, ऐसा शायद नीति निर्माताओं ने सोचा भी नहीं होगा। यह विषय अब तक सिर्फ इस लिए चर्चाओं से गायब रहा क्योंकि पूर्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में स्कूलों में बच्चों की सुरक्षा के लिए कोई ठोस प्रावधान नहीं किए गए थे। विद्यालयों में छात्रों की सुरक्षा एवं बचाव एक ऐसा गम्भीर मुद्दा है जिसे पिछले कुछ वर्षों में ऐसे विषय के रूप में पहचान मिली है जिसके बिना मजबूत सामाजिक परिवेश की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हम सभी जानते हैं कि विद्यालय एक ऐसा संस्थान है जहाँ लाखों की संख्या में देश के भविष्य का नेतृत्व करने वाली पीढ़ी तैयार होती है। स्कूल में बच्चों को एक सुरक्षित सकारात्मक और अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है। लेकिन हाल के दिनों में जिस तरह से घटनाएँ प्रकाश में आई हैं उन्होंने शासन, प्रशासन, न्यायपालिका और समाज को झकझोर कर रख दिया है। देश के सभी भागों में घटित हो रही इन घटनााओं में कई नौनिहाल असमय काल के ग्रास बने हैं। बच्चों के स्कूल से सुरक्षित वापस आने की चिंता पालकों की दिनचर्या में सम्मिलित हो गई है।

स्कूल की सुरक्षा की बात करें तो इसके अन्तर्गत सभी तरह की सुरक्षा शामिल है, जैसे कि शारीरिक और मानसिक हिंसा, आपदा प्राकृतिक व मानव निर्मित, अग्नि, परिवहन, स्वास्थ्य, साइबर तथा भावनात्मक सुरक्षा आदि। भावनात्मक सुरक्षा विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बच्चों में इस तरह की समस्याओं का पता लगाना आमतौर पर शिक्षकों और माता-पिता दोनों के लिए मुश्किल होता है। तेजी से बदलती सामाजिक व्यवस्थाओं में बचपन के प्रति हमारी असंवेदनशीलता ही बच्चों के स्कूलों में असुरक्षित होने का मुख्य कारण है। जिसके चलते हादसे अनेक रूपों में घटित होते हैं। चाहे वो स्विमिंग पूल, बस दुर्घटना, पानी की टंकी, खेल के मैदान में घटी घटनाएँ हों या हत्या और बालात्कार जैसे जघन्य अपराध। विषय की गंभीरता को समझने के लिए थोड़ा पीछे चलें; 1992 से स्कूली शिक्षा में निजी क्षेत्र का दबदबा बनने की शुरुआत हुई थी। आज आठवीं तक के स्कूलों में निजी क्षेत्र की भागीदारी 23.8 प्रतिशत है। यह अपुष्ट अवधारणा विकसित हो रही है कि निजी स्कूलों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए जुटाई गईं सुविधाएँ हीं निगरानी के अभाव में दुर्घटनाओं का कारण बनती जा रही हैं। किन्तु असल में इसके पीछे पिछली सरकारों द्वारा विषय को गम्भीरता से न लेना तथा निगरानी एवं सरकार द्वारा मानकीकरण के स्पष्ट प्रावधान न किया जाना है। निजीकरण की शुरुआत से आजतक सरकारी निगरानी प्रणाली निजी क्षेत्र के स्कूलों के विन्यास में हो रहे नित नए परिवर्तनों के अनुरूप अद्यतन, विकसित नहीं हो पाई हैं। जिसके परिणास्वरूप पूरा सरकारी नियंत्रण तंत्र ही अप्रचलित हो कर अप्रासंगिक हो गया है और बच्चों के माँ-बाप की तरह ही लचार खड़ा दिखाई देता है। निजी स्कूलों की भूमिका का उल्लेख करने का मकसद ये बिलकुल नहीं है कि हादसों में सरकारी स्कूलों का हिस्सा और जिम्मेदारी नहीं है। इसके साथ ही साईबर सेफ्टी हाल के वर्षों में एक गम्भीर चुनौती और मुद्दा बनकर उभरा है। हाल ही में कई ऐसी घटनाएँ सामने आईं हैं जहाँ स्कूली बच्चों के द्वारा साईबर अपराध हो रहे हैं। इससे बच्चों की सुरक्षा के लिए नित नई चुनौतियाँ खड़ी हो रही हैं।

हालांकि बच्चों की सुरक्षा एवं बचाव लिए उच्च स्तर पर कुछ नियामक बनाए गए हैं। राज्यों के अलावा केन्द्रीय स्तर पर लगभग डेढ़ दर्जन अलग-अलग दिशा निर्देशिकाएँ बनाई गई है। जिसमे मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सीबीएसई, आपदा नियंत्रण संस्थान से लेकर पेयजल मंत्रालय तक शामिल थे। यहाँ तक की माननीय सर्वोच्च न्यायालय को भी इसमें हस्तक्षेप

"नई शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि सभी राज्य व केन्द्र शासित प्रदेश एक स्वतंत्र, निकाय स्थापित करेंगे जिसे एसएसएसए यानि राज्य स्कूल सेकुरिटी एथारिटी कहा जाएगा। इसके द्वारा निर्धारित सभी बुनियादी विनियामक सूचनाओं का पारदर्शी और जबाबदेही के लिए निगरानी का बड़े स्तर पर उपयोग किया जाएगा, इसके साथ ही सभी राज्य केन्द्रशासित प्रदेशों तक पहुँच के लिए एक केन्द्रीकृत पोर्टल स्थापित किए जाने पर भी बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त नीति के विभिन्न प्रावधानों में बच्चों की सुरक्षा एवं बचाव पर जोर दिया गया है और इसमें छात्राओं की सुरक्षा पर विशेष बल दिया गया है।"

करना पड़ा और परिवहन व्यवस्था हेतु दिशानिर्देश बनाने पड़ें। इन सभी को लागू करना तो स्कूलों की जिम्मेदारी हैं। लेकिन इन सब की जिम्मेदारी उस शिक्षा विभाग की है जो पहले से ही लचर हैं। यहाँ यह उल्लेख करना भी आवश्यक है कि पिछली सरकारों ने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के पाठ्यक्रमों में बच्चों की सुरक्षा और शिक्षकों की संवेदनशीलता बढ़ाने जैसे विषय सम्मिलित करने का प्रयास नहीं किया। साथ ही कोई समेकित प्रयास को बल नहीं दिया गया। बच्चों की सुरक्षा का विषय पृथक-पृथक दिशानिर्देशों को मात्र जारी करने से ही नहीं अपितु समेकित प्रयासों से हल करने का है। जिसके लिए सभी जिम्मेदारों को सामूहिक रूप से स्वयं की जिम्मेदारी तय कर निभाने की आवश्कता है।

विद्यालय में बच्चों की सुरक्षा हेतु नवीन प्रयास

इस दिशा में पिछले कुछ समय में केन्द्र सरकार के द्वारा कई ऐसे प्रयास किए गए हैं, जिससे बच्चों की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके। हाल ही में केन्द्र सरकार ने विषय की गम्भीरता को देखते हुए इसे नई शिक्षा नीति 2020 में जगह दी है और बच्चों की सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की है। नई शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि सभी राज्य व केन्द्र शासित प्रदेश एक स्वतंत्र, निकाय स्थापित करेंगे जिसे एसएसएसए यानि राज्य स्कूल सेकुरिटी एथारिटी कहा जाएगा। इसके द्वारा निर्धारित सभी बुनियादी विनियामक सूचनाओं का पारदर्शी और जबाबदेही के लिए निगरानी का बड़े स्तर पर उपयोग किया जाएगा, इसके साथ ही सभी राज्य केन्द्रशासित प्रदेशों तक पहुँच के लिए एक केन्द्रीकृत पोर्टल स्थापित किए जाने पर भी बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त नीति के विभिन्न प्रावधानों में बच्चों की सुरक्षा एवं बचाव पर जोर दिया गया है और इसमें छात्राओं की सुरक्षा पर विशेष बल दिया गया है।

केन्द्र सरकार की एक संस्था राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के द्वारा इस नियामावली को तैयार किया गया है। 'मैनुअल ऑन सेफ्टी एण्ड सेक्युरिटी ऑफ चिल्ड्रेन इन स्कूल' इस दिशा में उठाया गया एक ठोस कदम है। जिसमें विभिन्न विभागों द्वारा बनाए गए नियमों को एक जगह संकलित किया गया है जिससे कि विद्यालय प्रबंधन को नियमों को पालन करने में आसानी हो। इससे बच्चों की शारीरिक और मानसिक सुरक्षा का माहौल तैयार करने में सहायता मिलेगी।

हालांकि आयोग के मैनुअल के आधार माननीय केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने एक ऑन लाइन प्रोग्राम 'ए डिजिटल ऑन लाइन प्रोग्राम फॉर टीचिंग एण्ड नान टीचिंग स्टाफ ऑन चाइल्ड सेफ्टी एण्ड सेक्युरिटी एडाप्ट सीएसएस' का विमोचन किया। यह एक ऐसा ऑनलाइन प्रोग्राम है जो स्कूली बच्चों की सुरक्षा और बचाव को सुनिश्चित करने के लिए 80 लाख शिक्षकों और गैर शिक्षकों का मागदर्शन करेगा। इस प्रोग्राम से जहाँ विद्यालय एक ओर सुरक्षा के मद्दे नजर सशक्त होंगे वही देश में बच्चों की सुरक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने की शिक्षक वर्ग और गैर शिक्षकों के बीच आम राय बनेगी।

बच्चों का विकास एक प्रक्रिया है जिसके एक भाग में बच्चे विद्यालय में ज्ञानार्जन के लिए जाते हैं। बच्चों के विकास में माता-पिता और विद्यालय दोनों बराबर के हिस्सेदार हैं और उन्हें अपनी जिम्मेदारी को भली भांति निभाना चाहिए। एक ओर जहाँ विद्यालयों की यह जिम्मेदारी है कि वह अपने संस्थान में बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी नियमों और नीतियों को लागू करें वही अभिभावकों तथा पेरेंट्स टीचर एसोसिएशन का यह कार्य करने का दायित्व है कि वह समय-समय पर स्कूलों का सेफ्टी ऑडिट करें। यह थर्ड पार्टी सेफ्टी ऑडिट की तरह कार्य करता है। उदाहरण के तौर पर अभिभावकों

"बच्चों का विकास एक प्रक्रिया है जिसके एक भाग में बच्चे विद्यालय में ज्ञानार्जन के लिए जाते हैं। बच्चों के विकास में माता-पिता और विद्यालय दोनों बराबर के हिस्सेदार हैं और उन्हें अपनी जिम्मेदारी को भली भांति निभाना चाहिए। एक ओर जहाँ विद्यालयों की यह जिम्मेदारी है कि वह अपने संस्थान में बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी नियमों और नीतियों को लागू करें वही अभिभावकों तथा पेरेंटस टीचर एसोसिएशन का यह कार्य करने का दायित्व है कि वह समय-समय पर स्कूलों का सेफ्टी ऑडिट करें।"

"उल्लेखनीय है कि विषय की गम्भीरता को देखते हुए पिछले कुछ समय से केन्द्र सरकार के द्वारा स्कूली बच्चों के सर्वांगीण विकास और सुरक्षा के लिए समय-समय पर अभूतपूर्व प्रयास किए जाते रहे हैं। इस दिशा में नई संभावनाओं का भी सृजन किया जा रहा है। जिससे बच्चों की सुरक्षा सिर्फ विद्यालयों तक ही सीमित न रहे बल्कि ऐसा सामाजिक वातावरण तैयार किया जाए जहाँ बच्चे अपनी बुद्धि और क्षमता के आधार पर अपना विकास कर सकें और नए भारत के निर्माण में अपना योगदान दे सकें।"

द्वारा विद्यालय या उसके आसपास किसी नाली या मेनहोल का खुला होने तथा अन्य समस्याओं को नजरअंदाज किया जाना बच्चों की सुरक्षा के लिहाज से खतरनाक साबित हो सकता है। अतः अभिभावकों को बच्चों की सुरक्षा से जोड़ा जा सकता है। वही उन्हें उनके दायित्वों के प्रति जागरूक भी किया जा सकता है। साथ ही इससे सूक्ष्म किन्तु बच्चों की सुरक्षा के लिहाज से खतरनाक स्थितियों पर निगरानी रखी जा सकेगी, जो कि आज के समय में बेहद जरूरी है।

विद्यालयों में सुरक्षा एवं बचाव के इसी परिपेक्ष्य के द्वारा एक सर्वेक्षण के आधार पर राष्ट्रीय प्रतिवेदन में सुरक्षित और संरक्षित स्कूली वातारण के बारे में रिपोर्ट जारी की गई। यह रिपोर्ट 12 राज्यों में 2 लाख से अधिक बच्चों और हजारों प्रशिक्षु शिक्षकों तथा अभिभावकों को साथ में लेकर बनाई गई है। यह पूर्णतः एक नवीन प्रयोग है जहाँ स्कूली बच्चों के द्वारा अपने विद्यालयों का सेफ्टी ऑडिट किया गया है। इस तरह के अन्य नवाचारों को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। छात्रों व स्कूल मैनेजमेंट कमिटी और पैरेंट्स टीचर एसोसिएशन के माध्यम से बच्चों की सुरक्षा की दृष्टि से स्कूलों का सेफ्टी ऑडिट होना चाहिए। जिसमें तथ्यों के आधार पर बच्चों की सुरक्षा एवं बचाव के मुद्दे को पुख्ता किया जा सके। सर्वेक्षण में सरकारी और निजी स्कूलों में सुरक्षा उपायों की उपलब्धता की तस्वीर प्रस्तुत की गई है। जिसमें भारत के स्कूलों में सुरक्षित स्कूल पर्यावरण की स्थिति का आकलन करने के लिए कई संकेतकों को शामिल किया गया है । इसके लिए विभिन्न विभागों/संस्थानों द्वारा सुरक्षा और बचाव पर आरटीई के अधिनियम 2009 दिशानिर्देशों एवं प्रावधानों के आधार पर प्रमुख संकेतकों पर डेटा एकत्र किया गया था। इसमें आधारभूत संरचना, मनो-सामाजिक सुरक्षा स्वास्थ्य और स्वच्छता सम्मिलित है। इस रिपोर्ट में विद्यालयों में बच्चे की साइबर सेफ्टी पर विशेष बल दिया गया है। जिससे कि बच्चों को इसके खतरों से बचाया जा सके।

विद्यालयों के अतिरिक्त बच्चों की सुरक्षा के नजरिए से शैक्षणिक संस्थाओं में हॉस्टल भी एक ऐसी जगह है जहाँ बड़ी संख्या में बच्चे रहते हैं। हॉस्टल में बच्चों की सुरक्षा और बचाव के लिए अलग तरह की समस्याएँ होती और वहाँ बच्चे अपने अभिभावकों से दूर रहते हैं। ऐसे में उनके सामने अन्य समस्याओं के साथ-साथ भावनात्मक असुरक्षा की भावना भी रहती है। इस दृष्टि से आयोग के द्वारा 'रेगुलेटरी गाइडलाइन्स फॉर हास्टल्स ऑफ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूशन्स' तैयार कर सरकार को सौंपी गई है। जिसमें हॉस्टल में रहने वाले बच्चों को केन्द्र में उन्हें रखकर सभी तरह की सुरक्षा प्रदान का प्रयास किया गया है। इसी क्रम में आयोग ने प्राइवेट प्ले स्कूलों के लिए भी एक गाइडलाईन्स बनाई है जिसका कई राज्य अनुसरण कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि विषय की गम्भीरता को देखते हुए पिछले कुछ समय से केन्द्र सरकार के द्वारा स्कूली बच्चों के सर्वांगीण विकास और सुरक्षा के लिए समय-समय पर अभूतपूर्व प्रयास किए जाते रहे हैं। इस दिशा में नई संभावनाओं का भी सृजन किया जा रहा है। जिससे बच्चों की सुरक्षा सिर्फ विद्यालयों तक ही सीमित न रहे बल्कि ऐसा सामाजिक वातावरण तैयार किया जाए जहाँ बच्चे अपनी बुद्धि और क्षमता के आधार पर अपना विकास कर सकें और नए भारत के निर्माण में अपना योगदान दे सकें।

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एन.सी.पी.सी.आर.) की स्थापना संसद के एक अधिनियम के द्वारा दिसम्बर 2005 में बाल अधिकार संरक्षण आयोग अधिनियम 2005 के अन्तर्गत मार्च 2007 में की गई है। आयोग का अधिदेश यह सुनिश्चित करना है कि समस्त विधियाँ, नीतियाँ, कार्यक्रम तथा प्रशासनिक तंत्र बाल अधिकारों के संदर्भ के अनुरुप हों। जैसा कि भारत के संविधान तथा साथ ही संयुक्त राष्ट्र के बाल अधिकार के सम्मेलन में प्रतिपादित किया गया है। बालक को 0—18 वर्ष के आयु वर्ग में शामिल व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है।

प्रत्येक बाल तक पहुँच बनाने के उद्देश्य से इसमें समुदायों तथा कुटुम्बों तक गहरी पैठ बनाने का आशय रखा गया है तथा अपेक्षा की गई है कि क्षेत्र में हासिल किए गए अनुभव पर उच्चतर स्तर पर सभी प्राधिकारियों द्वारा विचार किया जाएगा। इस प्रकार आयोग बालकों तथा उनकी कुशलता को सुनिश्चित करने के लिए, राज्य के लिए एक अपरिहार्य भूमिकाएँ, सुदृढ़ संस्था निर्माण प्रक्रियाएँ और स्थानीय निकायों और समुदाय स्तर पर विकेन्द्रिकरण के लिए सम्मान तथा इस दिशा में वृहद् सामाजिक चिंता की परिकल्पना करता है।

कहना क्यों नहीं मानते आज के बच्चे ?

बचपन

सुश्री सुषमा यदुवंशी
शिशु शिक्षा विशेषज्ञ,
चिंतक, लेखिका,
शिशु वाटिका प्रमुख, विदर्भ प्रांत

संपर्क
मो. 9xxxxxxxx

आज के दौर में यह शिकायत आम माता-पिता की है कि हमारे बच्चे कहना नहीं मानते। कभी-कभी उन्हें शिकायत के चलते बहुत चिढ़ होने लगती है, वह दुखी परेशान होते हैं। इसी वजह से कभी-कभी उनको हताशा घेर लेती है। समझ में नहीं आता है, क्या करें? कैसे उन्हें समझाएँ? बच्चों को जब देखो शैतानी, उठापटक, तोड़फोड़, थोड़ी देर भी वे एक जगह पर चुपचाप नहीं बैठ सकते, उन्हें कुछ याद करने को कहो, पाठ तैयार करने के लिए कहो तो नहीं कर पाते हैं। जो हालत घर में है वही स्कूल में भी है।

अभी कोविड 19 आया तो सभी माता-पिता को समझ आ गया है कि एक शिक्षक कैसे कक्षा कक्ष में 20 से 25 बच्चों को एक साथ पढ़ाते होंगे। वही दूसरी ओर टीचर भी परेशान रहते हैं, घर शिकायत भेजते हैं कि आपका बच्चा पढ़ते समय एकाग्रता से नहीं सुनता, उल्टे दूसरे बच्चों की तन्मयता को तोड़ता है। कक्षा में साथी बच्चों से खूब लड़ाई करता है। रोज-रोज शिकायतों से माता-पिता की परेशानियाँ चौगुनी हो जाती हैं। कभी-कभी शैतानी इतनी बढ़ जाती है कि बीमारी का रूप ले लेती है। जिसे विशेषज्ञों ने अटेंशन डिफिसिट डिसऑर्डर इसे हिन्दी अनुवाद में 'उपेक्षा-असंतुलन' का नाम दिया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि पहले यह बीमारी केवल विदेशों के बच्चों में पाई जाती थी किंतु भारत में इसका प्रतिशत बिलकुल भी नहीं था। परन्तु अब भारत में भी यह समस्या गंभीर रूप धारण कर चुकी है। हमारे भारत में इसका कारण सिर्फ यही है कि संयुक्त परिवार अब नहीं रहे। बच्चे ही नहीं माता-पिता दोनों अपने-अपने कार्यों में सवेरे से ही लग जाते हैं। जो नौकरी पेशा दम्पति हैं, उन्हें और भी फुर्सत नहीं है। वह दूसरों के भरोसे अपने बच्चों को छोड़कर अपने कार्यस्थल पर चले जाते हैं जिसके कारण बच्चे को भरपूर स्नेह नहीं मिल पाता है, वह अपने आप को अकेला महसूस करता है। जब वह सवेरे जागता है तब माता पिता काम पर निकल जाते हैं और रात को जब लौटते हैं तब उसके सोने का समय हो जाता है। इससे बच्चे को अपने माता-पिता का भरपूर सान्निध्य नहीं मिल पाता। वहीं धनाढ्य वर्गों में माँ-पिता जी को व्यवसाय, पार्टी से समय नहीं बचता कि वह समय दे सकें। वर्तमान में तो मध्यम वर्ग में भी यह बीमारी घर कर चुकी है। किटी पार्टी, मोबाइल और टेलिवीजन ने बच्चों का बचपना छीन लिया है। उन्हें कार्टून देखना अच्छा लगता है, न कि खेलना-कूदना। उनका अपने माता-पिता से, अपने परिजनों से संवाद नगण्य है। सर्वेक्षण के अनुसार करोड़ों बच्चे इस बीमारी की विकृति से ग्रस्त हो चुके हैं, क्योंकि कुछ दम्पति अपने अज्ञान और कुछ अपनी व्यस्तता के कारण ध्यान नहीं दे पाते हैं। इसलिए लाखों बच्चे बड़े होकर असामाजिक हो जाते हैं। जब माता-पिता समाधान की खोज में इधर-उधर भटकते हैं व उचित ढंग से समाधान न मिलने पर आपस में ही लड़ने-झगड़ने लगते हैं, तब लड़ाई से भी बच्चों की गतिविधियों में अनुचित गति आ जाती है। माता-पिता की यह असमर्थता उन्हें पहले से और अधिक शैतानी करने को उत्सुक करती है। यह कोई काल्पनिक कथन नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक तथ्य है। विश्व के बाल मनोवैज्ञानिकों ने अपने अनेक प्रयोगों से इसे प्रमाणित किया है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि आज की भागती दौड़ती हमारी सामाजिक दिनचर्या ने बच्चों को हमसे दूर कर दिया है। भावनात्मक पोषण, सही देखरेख, सकारात्मक संवाद के अभाव में बच्चे कुछ ज्यादा ही सुनी-अनसुनी करने लगे हैं। उनकी गतिविधियाँ कुछ ज्यादा ही शैतानियों से भरी हुई होती हैं। मनोचिकित्सकों का प्राथमिक तौर पर मानना है कि इसके अनेक लक्षण हैं पहला एकाग्रहीनता दूसरा अति सक्रियता एवं तीसरा कभी भी काम करने के लिए मजबूर हो जाना। इन तीन

"मुझे तो यही लगता है कि जब बच्चा अपने माँ के गर्भ में पलता है तो आसपास के वातावरण से वह प्रभाव ग्रहण करता है। हमने अभिमन्यु के चक्रव्यूह की कहानी तो सुनी ही है और विज्ञान ने भी इसे साबित कर ही दिया है। आज पुंसवन संस्कार एवं गर्भ संस्कार भी आधुनिक माताओं को सिखाए जा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर जब बच्चों को अनदेखी करने की प्रवृत्ति हो जाती है तब यह अटेंशन डिफिसिट डिसऑर्डर (जिसका शाब्दिक अर्थ है देखरेख की कमी) से होने वाली व्याधि, विकराल होने लगती है।"

मुख्य लक्षणों के अलावा उपेक्षा से उनका मन असंतुलन की बीमारी से ग्रसित हो जाता है। बच्चों में चित्त का भटकाव, मन का अस्थिर हो जाना जिसके कारण कभी-कभी वे गम्भीर अपराध भी कर बैठते हैं। जैसा कि हम अनेक बार देख चुके हैं कि बच्चों ने गोलियाँ चला दीं, किसी को चाकू मार दिया, साथ ही अपने को हीन समझ लेना आदि। लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने वाला कार्य करना, ख्याली पुलाव बनाना, मिलजुल कर न रहना, अति कमजोर याददाश्त, धैर्य की कमी, दूसरों को परेशान करने वाला व्यवहार, कभी-कभी चोरी करने की प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है। जब परिवार, समाज ऐसे बच्चों को सम्भाल नहीं पाता है और इन्हें छोड़ देता है तो ऐसे बच्चे अक्सर पढ़ाई करना छोड़ देते हैं। कभी-कभी अवसाद से गम्भीर रूप से ग्रसित होकर बीमार पड़ जाते हैं। उस दशा में उन्हें नियंत्रित करना मुश्किल हो जाता है।

हाल ही में शोध व अनुसंधान से पता चला है कि यह शुरुआती कारणों में भ्रूण-अवस्था या बचपन में संक्रमण से दिमाग को होने वाले मामूली नुकसान से ऐसा होता है। मैं स्वयं इस बात को स्वीकार करती हूँ। करीब 22 वर्षों से मैं शिक्षण के क्षेत्र में कार्य कर रही हूँ और करीब 15 वर्ष पूर्व जब मैंने शिशु वाटिका से, जिसे अंग्रेजी में किंडर गार्डन कहा जाता है, शुरुआत की तब के बच्चे और आज के बच्चों में बहुत परिवर्तन आया है। पहले जब प्लेग्रुप, नर्सरी के बच्चे आते थे तो वे खिलौने को अपने सीने से लगाकर बहुत ही प्रेम से रखते और कहीं टूट न जाए इसका ध्यान रखते थे। परन्तु आज के बच्चों को जब मैं देखती हूँ तो बहुत पीड़ा होती है। इन नन्हें मुन्ने बच्चे के कोमल मन पर न जाने किस प्रकार का प्रभाव पड़ा है कि वे अपने खिलौने को इस प्रकार से तोड़ते मरोड़ते हैं कि एकाध दिन में ही सारे खिलौनों में से किसी का हाथ टूटा है तो किसी का पहिया। किसी की नाक टूटी है तो किसी का मूँह टूटा है। इसका अन्दाजा लगा पाना कठिन है कि वे ऐसा क्यों करते हैं। साफ्ट ट्वायज की दुर्गति तो आप सोच भी नहीं सकते, किस वीभत्स तरीके से उसकी दुर्गति करते हैं। इस अवस्था को देखकर मुझे तो यही लगता है कि जब बच्चा अपने माँ के गर्भ में पलता है तो आसपास के वातावरण से वह प्रभाव ग्रहण करता है। हमने अभिमन्यु के चक्रव्यूह की कहानी तो सुनी ही है और विज्ञान ने भी इसे साबित कर ही दिया है। आज पुंसवन संस्कार एवं गर्भ संस्कार भी आधुनिक माताओं को सिखाए जा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर जब बच्चों को अनदेखी करने की प्रवृत्ति हो जाती है तब यह अटेंशन डिफिसिट डिसऑर्डर (जिसका शाब्दिक अर्थ है देखरेख की कमी) से होने वाली व्याधि, विकराल होने लगती है।

माता-पिता या अभिभावक आजकल बच्चों पर जरूरत से ज्यादा डॉक्टर, इंजीनियर या टॉपर बनाने के चक्कर में उनका बचपन ही छीन रहे हैं। आश्चर्य तब होता है जब वे डेढ़ साल के बच्चे को लेकर आते हैं और कहते हैं कि इसका 'एडमिशन' यानि नामांकन करवाना है। मुझे मन ही मन बहुत क्षोभ होता है। फिर अभिभावकों को समझाकर यह कहना पड़ता है कि थोड़ा और बड़ा हो जाने दीजिए। इसको अभी घर का वातावरण दीजिए और इसे अपने स्नेह व स्पर्श से दुलार दीजिए। अभी इसे आपके परिवार की आवश्यकता है। वह पूरा कार्य अभी घर में ही सीख जाएगा उसे बताने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जैसा कि हम जानते हैं कि बच्चा स्वभाव से ऐसा कोमल होता है कि उसे हम जिस कार्य को मना करेंगे वह वही करना चाहेगा व वही करता भी है। वह हमारी छोटी-छोटी व्यवहारगत चीजों से सीखता है। उदाहरणस्वरूप घर के मंदिर में दिया जल रहा है तो हमें यह तो पता है कि वह जाएगा उसे छुएगा तो उसकी अंगुली जल जाएगी पर हम उसे कितना भी मना करेंगे तो वह वहाँ जरूर जाएगा और उसे छुएगा तो उसे छूने दीजिए। थोड़ा सा झटका लगेगा तो अपने आप ही दुबारा उसके पास नहीं

"वही दूसरी ओर माता-पिता बच्चों पर कुछ ज्यादा ही ध्यान देने लगते हैं और उनकी हर नाजायज मांगों की पूर्ति करने लगते हैं या उनको इतना ज्यादा अपनी निगरानी में रखने लगते हैं कि बच्चों की स्वतंत्रता बाधित होने लगती है। प्रसिद्ध बाल मनोवैज्ञानिक प्रोफेसर हॉस्टन कहना है कि "बच्चों का पालन पोषण एक माली के समान कुशलता से करनी चाहिए। उन्हें इतना न अनदेखा करें कि आवश्यक खाद-पानी भी न मिल सके और ज्यादा अतिरेकी देखभाल भी न करें कि उन्हें स्वाभाविक रूप से मिलने वाली हवा और प्रकाश भी अवरुद्ध हो जाए।"

जाएगा अर्थात् उसको सही और गलत की पहचान अपने कार्य से ही हो जाएगा। लेकिन उसे अपने सामने ही रखना होगा उसकी अवस्था इस लायक नहीं है कि उसे अकेले रखा जाए। वर्तमान की दूसरी अन्य समस्या टी.वी. और मोबाइल है, माता-पिता को लगता है कि मेरी एक ही संतान या दो संतान हैं, इन्हें थोड़ा भी चोट नहीं लगनी चाहिए। बाहर नहीं खेलने जाने देते हैं जिसके कारण उसका मानसिक विकास तो होता है पर शारीरिक विकास रुक जाता है। घंटों हाथों में रिमोट लेकर या वीडियो गेम खेलता बच्चा मानसिक रूप से तो बलवान हो जाता है परन्तु शारीरिक रूप से कमजोर हो जाता है। कई बार तो ज्यादा टी.वी.या मोबाइल पर गेम या वीडियो देखने से भी वह कई बीमारियों से ग्रसित हो सकता है। यह भी हमें ही सोचना चाहिए।

वही दूसरी ओर माता-पिता बच्चों पर कुछ ज्यादा ही ध्यान देने लगते हैं और उनकी हर नाजायज मांगों की पूर्ति करने लगते हैं या उनको इतना ज्यादा अपनी निगरानी में रखने लगते हैं कि बच्चों की स्वतंत्रता बाधित होने लगती है। प्रसिद्ध बाल मनोवैज्ञानिक प्रोफेसर हॉस्टन कहना है कि ''बच्चों का पालन पोषण एक माली के समान कुशलता से करनी चाहिए। उन्हें इतना न अनदेखा करें कि आवश्यक खाद-पानी भी न मिल सके और ज्यादा अतिरेकी देखभाल भी न करें कि उन्हें स्वाभाविक रूप से मिलने वाली हवा और प्रकाश भी अवरुद्ध हो जाए। बच्चे आपकी हर बात को ध्यान से सुने और उसका पालन करें एवं शरारत व शैतानी कम करें।'' इसके लिए माता-पिता को कुछ आवश्यक बिन्दुओं को जरूर अपनाना चाहिए -

(1) आप बच्चों के स्वयं रोलमॉडल बने, स्वयं ऐसे कार्य न करें जिनके लिए आप उन्हें रोकते हैं।

(2) बच्चों की हर जायज व नाजायज माँग पूरी करने के बजाए धीरे-धीरे उन्हें सही गलत का बोध कराएँ।

(3) जीवन के सभी व्यावहारिक ज्ञान व जैसे दूसरे बच्चों से कैसे व्यवहार करे, उसको उठने बैठने का तरीका, चलने-दौड़ने का तरीका, शिष्टाचार के सामान्य ज्ञान के बारे में उन्हें धीरे-धीरे पर थोड़ा-थोड़ा रोज बताएँ।

(4) छोटी-छोटी बातों पर झड़प नहीं बल्कि प्यार से समझाएँ व अनजान लोगों के सामने कदापि भी अपमानित नहीं करें।

(5) अच्छी बात, अच्छे काम करने पर सराहना करें, प्रोत्साहित करें, प्रशंसा करें। उनकी कलात्मक व रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने का अवसर दें। उन्हें केवल किताबी कीड़ा बनने से रोकें। यदि वे अपनी मातृभाषा हिन्दी समझते हैं तो उन पर अंग्रेजी का बोझ न डालें। वह पढ़ने में थोड़ा सा कमजोर भी है तो पढ़ाई उतना ही करवाए जितना वह उन्हें ग्रहण कर सके।

(6) उसकी रुचि का अवलोकन करें व उसकी पसंद के कोर्स जितना वह सीख सके सीखने का अवसर दें इससे उसका मन लगेगा और उसमें उसका लाभ होगा।

(7) कक्षा में कुछ समझ नहीं आएगा तो वह कुंठित होगा और धीरे-धीरे वह पीछे होता चला जाएगा। इसलिए उसकी मानसिक ग्राह्यता के हिसाब से ही उसे किस माध्यम में पढ़ना है वह भी सोंचे।

चंडीगढ़ के एक मनोचिकित्सा विशेषज्ञ का कहना है कि बच्चे आपकी बात मानें इसके लिए यह जरूरी है कि आप अपने प्रति बच्चों में विश्वास उत्पन्न करें। अपने प्रेम से उन्हें आश्वस्त करें।

अनुभवी चिकित्सकों का कहना है कि शैतानी और शरारत की अति को गंभीर रोग मानकर घबरा जाना तो ठीक है पर इसके प्रति अधिक लापरवाही करना उचित नहीं है। बच्चों की शैतानी व शरारत में उपयोग होने वाली ऊर्जा को यदि रचनात्मक गतिविधियों में बदला जा सके तो उनकी प्रतिभा में आश्चर्यजनक बढ़ोत्तरी हो सकती है। बस इसके लिए इतना भर जरूरी है कि बच्चों की सही देखरेख के प्रति हमेशा से जागरूक रहें और उनकी जीवनी शक्ति को रचनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित करें। लगातार धैर्य पूर्वक प्यार व सद्भाव से ऐसा करने पर बच्चे शरारत छोड़कर हमारी हर शिकायत को दूर कर सृजन, प्रयोजन में लग जाएँगे। उन्हें यह भी समझ आएगा कि हम सही कर रहे हैं या गलत। निर्णय लेने की क्षमता के विकास में उन्हें बहुत मदद मिलेगी। उन्हें आपसे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए वे आपका थोड़ा सा स्नेह, आपका थोड़ा सा समय चाहते है और उन्हें आपका आत्मिक सान्निध्य, और अपने दादा-दादी या नाना-नानी का सान्निध्य चाहिए जिनसे वे किस्से व कहानियाँ सुनकर, आत्मसात कर वे समाज, परिवार, राष्ट्र के एक जिम्मेदार नागरिक बन सकें ।

किसी भी परिस्थिति में बालक को पाँच वर्ष की आयु तक माता पिता से दूर नहीं करना चाहिए। पाँच वर्ष की आयु तक बालक का पालन लाड़–प्यार से करना चाहिए। किसी भी प्रकार से उसे अनुशासन में बाँधना चाहिए।

बाल केन्द्रित क्रिया आधारित शिक्षण

क्रिया आधारित शिक्षण

श्री रवि कुमार
संगठन मंत्री,
विद्या भारती, हरियाणा
सामाजिक, शैक्षिक विषयों
के गहन अध्येता व चिंतक

संपर्क
मो. 9896982487

सामान्यतः कला विषय के प्रति उदासीनता रहती है। छोटी कक्षाओं में कला विषय का कार्य कराया जाता है तो विद्यार्थियों को आनंद आता है। जैसे-जैसे कक्षा बढ़ती है वैसे-वैसे ये आनंद कम होता जाता है और धीरे-धीरे प्रायः समाप्त हो जाता है। जबसे अंक केन्द्रित शिक्षा का रुझान बढ़ा है और सभी डॉक्टर-इंजीनियर बनना चाहते हैं तो उनका मुख्य विषय पर ही फोकस रहता है, शेष विषय गौण होते जाते हैं।

कला जीवन में आनंद लाती है। किसी उत्सव या शुभ कार्य के समय घर में साज-सज्जा होती है तब करने वाला व देखने वाला आनंदित हो जाता है। साज-सज्जा की विभिन्न परम्पराएँ अपनी संस्कृति को सजोने का कार्य कर रही हैं। ऐसे में कला से विमुख होना भविष्य के लिए खतरे की घंटी नहीं है क्या?, विद्यार्थी का संस्कृति से दूर होना क्या ठीक है? इस पर शिक्षा जगत में गहन चिंतन की आवश्यकता है। विद्यार्थियों में कला विषय की रुचि बनी रहे एवं छात्र बड़ी कक्षाओं में भी कला विषय पढ़े इस पर विशेष कार्य करने की आवश्यकता है।

विषय नहीं गतिविधि के रूप में पढाएं: कला को जब विषय के रूप में पढ़ाते है तो गृहकार्य, टेस्ट-परीक्षा आदि जुड़ जाते है। जैसे-जैसे कक्षा बढ़ती है तो मुख्य विषयों का दवाब विद्यार्थी पर बढ़ता है। कला विषय का भी ऐसा ही होगा तो रुचि कम होना स्वाभाविक है। कला को विषय की बजाय गतिविधि के रूप में पढाएं अर्थात् कोई गृहकार्य नहीं, कोई टेस्ट-परीक्षा नहीं। जो भी कार्य होगा कालांश के दौरान ही होगा। ऐसे में पुस्तक की भी आवश्यकता नहीं होगी। ऐसा होने से आनंद बढ़ने के साथ रुचि भी बनी रहेगी।

मूल अवधारणा स्पष्ट हो: मूल अवधारणा Basic concept की बात तो विज्ञान व गणित में आती है, फिर कला विषय में ऐसा क्यों? ऐसा इसीलिए कि सामान्यतः आचार्य जब भी कला विषय पढ़ाता है तो सब बातें विद्यार्थी पर छोड़ देता है। वो सोचता है कि ये हुनर तो भगवान से उसे भेंट स्वरुप मिलता है। इसीलिए मूल अवधारणा व तकनीकी बातों को स्पष्ट करने पर ध्यान नहीं देता। इसीलिए भी रुचि नहीं बढ़ती। बिना स्केल के सीधी रेखा कैसे बनती है, फ्री हैण्ड स्केच कैसे बनता है, शेडिंग कैसे होती है, रंगों की पहचान, रंग समायोजन, दो अथवा तीन रंगों को मिलाकर नया रंग कैसे बनता है, चेहरा कैसे बनेगा, रंगों की सामग्री के प्रकार, ब्रश के प्रकार आदि ऐसी अनेक बाते हैं जिनके विषय में स्पष्टता होनी आवश्यक होती है।

घर की दैनंदिन सज्जा के साथ जोड़ें: घर में विभिन्न अवसरों पर क्या सज्जा की जा सकती है?, घर के मुख्य द्वार पर बंदनवार किस-किस प्रकार की बनाई जा सकती है?, मुख्य द्वार पर रंगोली बनाई जा सकती है, प्रवेश द्वार को कैसे सजाया जा सकता है, कक्ष की सज्जा, सजावट की सामग्री आदि के विषय में छात्रों को सिखाएँगे तो रुचि स्वतः बढ़ेगी। विद्यार्थी को विद्यालय परिसर की सज्जा में सहभागी बनाकर अच्छा सिखाया जा सकता है।

जीवन मूल्य भी सिखाएं: नई पीढ़ी के लिए आवश्यक है कि उन्हें कला के साथ जीवन मूल्य भी सिखाएं जाएँ। उदाहरण स्वरुप कोई पेटिंग दृश्य बनाना सिखाना हो तो उस पर चर्चा करते हुए पेटिंग संरक्षण की बात सिखा सकते है। दीपावली के आसपास राम का चित्र बनाना सिखाया तो राम के चरित्र की चर्चा सिखाने से पूर्व कर सकते है।

विवेकानंद शिला स्मारक कन्याकुमारी में जिस शिल्पकार को स्वामी विवाकानंद की विशाल मूर्ति बनाने के लिए निश्चित किया गया, उसने कहा कि मुझे स्वामी विवेकान्द की जीवनी लाकर दीजिए। पहले मैं उनके जीवन को पढूंगा, उनके चरित्र को समझूंगा तभी मूर्ति बनाऊंगा। यदि उनके चरित्र को बिना समझे मूर्ति बनाऊंगा तो

वो कैसी बनेगी यह कह नहीं सकता। जीवनी पढ़कर, चरित्र समझकर बनाऊंगा तो वैसे भाव मूर्ति में डाल सकूँगा।

लोक परम्परा की आवश्यकताः आज लोक परम्पराएँ विलुप्त होती जा रही है। लोक परम्पराओं के साथ हमारा इतिहास जुड़ा हुआ है। उसमें जीवन की कोई न कोई सीख होती है। इन लोक परम्पराओं से नई पीढ़ी को जोड़ना आवश्यक है। अहोई अष्टमी, गोवर्धन पूजन, सांझी, थापा आदि हरियाणा की लोक परम्परा से जुड़े हैं। इसी प्रकार भारत के हर प्रान्त में लोक परम्परा से जुड़ा हुआ कोई न कोई उत्सव अवश्य होता है। इन उत्सवों पर पारंपरिक सज्जा विद्यार्थियों को सीखाकर लोक परम्परा से जोड़ा जा सकता है।

साहित्य व पुस्तकालय

साहित्य का शिक्षा से क्या सम्बन्ध है, विशेषकर विद्यालयीन शिक्षा में? यहाँ साहित्य अर्थात् Text Books नहीं, अन्य पुस्तकों से है, जो पुस्तकालय में रखी जाती हैं। प्रत्येक विद्यालय में छोटा-बड़ा पुस्तकालय होता ही है। शिक्षा विभाग की नियमावली में है कि प्रत्येक विद्यालय में पुस्तकालय हो और वहाँ छात्रों के अनुपात में पुस्तकें हों। पुस्तकालय सभी विद्यालयों में होता है परन्तु क्रियाशील पुस्तकालय कुछ ही विद्यालयों में दिखता है। अधिकांश स्थानों पर पुस्तकालय की संकल्पना शिक्षा विभाग के नियम पूर्ण करने मात्र से है। साहित्य की विद्यार्थियों के लिए क्या उपयोगिता है, इसकी जानकारी सामान्यतः नहीं होती।

क्या है उपयोगिताः पुस्तकालय का साहित्य विद्यार्थियों के भाषा विकास में सहायता करता है। विद्यार्थी नए-नए शब्द व वाक्य सीखते है। शब्द संचय बढ़ता है। जो विद्यार्थी की अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाता है। पुस्तकालय में साहित्य अध्ययन से विद्यार्थी की जानकारी व ज्ञान का स्तर भी बढ़ता है। इससे वह केवल पुस्तकीय ज्ञान (Text book knowledge) तक ही सीमित नहीं रहता।

विद्यालयीन शिक्षा में पुस्तकालय में साहित्य, पढ़ने की आदत डालने के लिए भी है। छोटी आयु में आदत बनती है तो बड़ी कक्षाओं एवं उच्च शिक्षा में भी सहायक होती है। जीवन में भी इस आदत का विशेष प्रभाव रहता है। बहुत सारे ऐसे उदाहरण मिल जाएँगे कि जिनके जीवन में विद्यालय के पुस्तकालय के कारण अध्ययन की बनी आदत का प्रभाव रहा और साहित्य का अध्ययन उनकी एक शक्ति बन सका।

दीपावली के आस-पास एक विद्यालय में प्रवास पर वंदना सभा में रहना हुआ। कक्षा 6 से 8 की वंदना सभा में बातचीत के दौरान पूछा कि रामायण किस-किस ने पढ़ी है? बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने हाथ खड़े किए। यह देखकर मैं हैरान था! वर्तमान परिदृश्य में विद्यार्थियों ने रामायण पढ़ी है इस पर विश्वास करना कठिन प्रतीत होता है। जिज्ञासा हुई कि कहाँ पढ़ी होगी? पूछने पर विद्यार्थियों ने बताया कि पुस्तकालय में पढ़ी है। पुस्तकालय प्रमुख से पूछने पर पता चला कि वहां रामायण आधारित कहानियों की चित्रमय पुस्तकें है जिसे विद्यार्थी नियमित पढ़ते है।

साहित्य में क्या-क्या होः प्रायः पुस्तकालयों में साहित्य तो रहता है परन्तु विद्यार्थियों के उपयोग का रहता है या नहीं, यह कहना कठिन है। विशेषकर प्राथमिक कक्षाओं के लिए तो बिल्कुल नहीं होता। कक्षा 1-2, 3-5 व 6-8 तीनों समूहों के लिए अलग-अलग साहित्य की आवश्यकता होती है। कक्षा 1-2 के लिए चित्रमय, मोटाफॉन्ट साइज, कहानियाँ, कविताओं आदि की पुस्तकें ठीक रहती हैं। कक्षा 3-5 के लिए पंचतंत्र (जंगल) की कहानियाँ, महापुरुषों के जीवन चरित्र आदि हो सकते हैं। कक्षा 6-8 के लिए महापुरुषों के जीवन चरित्र, रामायण-महाभारत आधारित कहानियाँ, यात्रा वृतांत आदि पुस्तकें हो सकती हैं। इस समूह के लिए अमर चित्रकथा (महापुरुषों के जीवन चरित्र-कॉमिक्स) उपयुक्त रहती है। इंदौर से प्रकाशित 'देवपुत्र' पत्रिका भी बाल मन को आकर्षित करती है।

कक्षा 9-12 के लिए अलग प्रकार से सोचने की आवश्यकता रहती है। इस अवस्था में बालक के अन्तःकरण में मन की बजाय बुद्धि की प्रधानता होती है। इन कक्षाओं में पाठ्यक्रम भी अधिक रहता है, इस कारण पाठ्यक्रम पर ही ध्यान अधिक होता है। कक्षा 9-12 के लिए दो प्रकार से विचार किया जाना चाहिए। एक, तथ्यपरक कहानियाँ, ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन, यात्रा वृतांत, महापुरुषों की जीवनियाँ, उपन्यास, स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनियाँ, स्वतंत्रता संग्राम आधारित कहानियाँ, सफल जीवन चरित्र आदि पुस्तकें तथा दो, पाठ्यक्रम सम्बन्धी संदर्भ पुस्तकें, विभिन्न विषय (विज्ञान, गणित, कंप्यूटर) सम्बन्धी पत्रिकाएँ आदि के बारे में विचार हो।

आचार्य के लिए भी पुस्तकालय में साहित्य होना आवश्यक है। कक्षाशिक्षण, शिक्षण सूत्र-युक्तियाँ, शिक्षण तकनीक, भाषा विज्ञान, बाल मनोविज्ञान, क्रियाशोध, शिक्षा यात्रा का इतिहास, शिक्षा दर्शन, विभिन्न शिक्षाविदों के शिक्षा पर विचार आधारित पुस्तकें, विभिन्न पत्रिकाएँ आदि साहित्य पुस्तकालय में उपलब्ध हो। आचार्यों के लिए बैठने की भी व्यवस्था हो।

पुस्तकालय की सक्रियताः साहित्य होना एक विषय है तथा साहित्य का उपयोग होना दूसरा एवं साहित्य का प्रभाव पड़ रहा है यह तीसरा विषय है। दूसरे व तीसरे विषय के लिए पुस्तकालय की क्रियाशीलता आवश्यक है। समय-सारिणी में कक्षा 1 से 12 तक की कक्षा का साप्ताहिक एक कालांश पुस्तकालय का हो, दो कालांश दे सकते है तो और अच्छा रहेगा। किसी भी स्थिति में इस व्यवस्था को बदला न जाए। बहुत से विद्यालयों में परीक्षा निकट आने पर इस कालांश को बदल कर कक्षा शिक्षण विषयों में लगा दिया जाता है। पुस्कालय में बैठकर कक्षा स्तर अनुसार पुस्तक-पत्रिका का अध्ययन हो। पंजीकरण करवाकर घर ले जाकर पढ़ने की व्यवस्था भी हो।

पुस्तकालय आचार्य कभी-कभी अपने कालांश में कक्षा में भी जाएँ। कक्षा में गत दिनों में जो पुस्तकें पढ़ी गई उस सम्बन्धी चर्चा-प्रश्नोत्तरी हो, कोई कहानी-प्रसंग सुनकर नई पुस्तकों का परिचय दिया जाएँ। यदि पुस्तकालय में बैठने की व्यवस्था नहीं है तो पुस्तकें एक थैले में डालकर कालांश के दौरान कक्षा में जाएँ। कक्षा-कक्ष में पुस्तकालय कार्नर की व्यवस्था भी बनाई जा सकती है।

एक विद्यालय के पुस्तकालय में चालीस पुस्तकों का एक संच बना है। सभी पुस्तकों पर 1 से 40 तक क्रमांक लिखे गए है। विद्यालय कक्षा स्तर 6 से 12 का है। सत्र आरम्भ में जब कक्षा छह पुस्तकालय कालांश में आती है तो उसे कक्षा क्रमांक के अनुसार एक-एक पुस्तक दी जाती है। दो कालांशों के पश्चात् एक वाली दो के पास व दो वाली तीन के पास जाती है। इस प्रकार एक सत्र में सभी विद्यार्थी वे चालीस पुस्तकें पढ़ लेते हैं। पुस्तकों का चयन विशेष प्रकार से किया जाता है ताकि जिन विद्यार्थियों का साहित्य अध्ययन का अभ्यास नहीं है वे भी आसानी से पढ़ सके व पुस्तक अध्ययन में उनकी रुचि का निर्माण हो सके।

दीवार पत्रिका (Wall magzine): पुस्तकालय का आकर्षण बढ़ाने की दृष्टि से दीवार पत्रिका अच्छा प्रयोग है। पत्रिका साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक हो सकती है। नई खोज, अविष्कार, महत्वपूर्ण घटना, विमोचित नई पुस्तक, महत्वपूर्ण दिवस, विशेष व्यक्तित्व दीवार पत्रिका के विषय हो सकते हैं।

गोलोकवासी श्री तेजपाल सेठी

सुन्दर एवं सुगठित शरीर के आकर्षक व्यक्तित्व वाले श्री तेजपाल सेठी गत 1 फरवरी 2021 को गोलोकवासी हो गए। श्री सेठी जी का जन्म 20 मई 1940 को पंजाब के नवांशहर में हुआ था। उन्हें 81 वर्ष की आयु प्राप्त हुई। उन्होंने आरम्भिक शिक्षा नवांशहर, माध्यमिक शिक्षा शाहजहाँपुर तथा उच्च शिक्षा बरेली में प्राप्त की। 16 वर्ष की उम्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए तथा जीवन काल में जिला कार्यवाह सहित अनेक दायित्वों का निर्वाह किया। विद्या भारती योजना में सर्वप्रथम वह रामपुर जिला केन्द्र स्थित शिशु मंदिर में आचार्य बने। बाद में अल्मोड़ा, बरेली, शाहजहाँपुर, मुजफ्फरनगर आदि जिला केन्द्रों पर प्रधानाचार्य का दायित्व निर्वहन किया। 1972 में उन्होंने गाजियाबाद में नेहरु नगर के प्रधानाचार्य का दायित्व सम्भाला व इसी केन्द्र पर रहकर अपनी नियमित सेवाएँ प्रदान करते रहे। 1982 में शिशु शिक्षा प्रबंध समिति उ.प्र. के सहमंत्री बने। उन वर्षों में विद्या भारती की दृष्टि से उत्तराखंड, मेरठ, ब्रज सहित सम्पूर्ण पश्चिमी उत्तर प्रदेश एक प्रांत होता था जिसका कार्य कुशलतापूर्वक सम्भालते रहे। वे 1975 में आपात्काल में 5 मास कारागार में निरुद्ध रहे।

अविभाजित उ.प्र. के शिशु मंदिरों की परीक्षा एवं मूल्यांकन संयोजक का दायित्व उन्होंने बखूबी निभाया। शारीरिक एवं घोष के कार्यक्रमों में उनकी पूर्ण दक्षता थी । वर्ष 1978 में अखिल भारतीय स्तर पर दिल्ली के सम्पन्न अविस्मरणीय विशाल शिशु संगम में आए बच्चों के शारीरिक व घोष के कार्यक्रमों का संचालन कुशलता से पूर्ण किया। वह विद्या भारती के शारीरिक विभाग के अखिल भारतीय प्रमुख व खेलकूद विभाग के सह संयोजक रहे। वर्ष 1999 में गाजियाबाद में आयोजित अखिल भारतीय खेलकूद समारोह का भव्य आयोजन उनके मागदर्शन में पूर्ण हुआ था। आयोजन के उद्घाटन समारोह में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी मुख्य आतिथि थे।

1999 में उ.प्र. के शिक्षा विभाग के प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों के निर्माण में सहभाग किया। बाद में शिशु शिक्षा समिति मेरठ प्रांत के सचिव रहते उन्होंने नियमित सेवाओं से अवकाश प्राप्त किया। अपने कार्यकाल में समिति से जुड़े विद्यालयों के भूमि व भवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में उनका बड़ा योगदान था। अनेक विद्यालयों की स्थापना में उनकी महती भूमिका थी।

नियमित सेवाओं से अवकाश प्राप्ति के बाद भी वह विद्या भारती पश्चिमी उ.प्र. क्षेत्र के सचिव के रुप में अपनी सेवाएँ देते रहे। उनकी कार्यकुशलता, प्रशासनिक क्षमता एवं संगठन कौशल अद्भुत थी। गत 2–3 वर्षों से उन्हें स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयाँ रहती थीं। कार्य के प्रति उनकी लगन व सोच कैसी थी, इसके उदाहरण में उनकी धर्मपत्नी व पुत्रों ने बताया था कि प्रायः वह रात्रि के तीसरे या चौथे प्रहर में नींद खुल जाने पर कार्यकर्ताओं तथा कार्यों के बारे में चर्चा करने लगते थे। दायित्वों के प्रति समर्पित रहकर राष्ट्र निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान करने वाले कुछ बिरले ही होते हैं, श्री सेठी जी उनमें से एक थे । उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

प्रस्तुति – श्री राजेन्द सिंह बघेल

जयंती

विवेकानंदः पत्रावली

अल्मोड़ा,
9 जुलाई 1897

अभिन्नहृदयेषु ,

हमारी सभा के उद्देश्य का पहला प्रूफ मैंने संशोधन करके आज वापस भेजा है। उसके नियम (जो हमारी सभासदों ने पढ़े थे) अशुद्धियों से भरे हैं। उसे सावधानी से ठीक करके छपवाना, नहीं तो लोग हँसेंगे।

बहरमपुर में जैसा काम हो रहा है वह बहुत ही अच्छा है। इस प्रकार के कामों की विजय होगी। क्या केवल मतवाद और सिद्धांत हृदय को स्पर्श कर सकते हैं? कर्म, कर्म-आदर्श जीवन यापन करो-मतामत का क्या मूल्य? दर्शन योग और तपस्या-पूजा गृह-आतप चावल या शाक का भोग यह सब व्यक्तिगत धर्म है, देशगत धर्म है। दूसरों की भलाई और सेवा करना ही एक महान सार्वलौकिक धर्म है। आबालवृद्ध, वनिता, चाण्डाल यहाँ तक कि पशु भी इस धर्म को समझ सकते हैं। क्या केवल एक निषेधात्मक धर्म कुछ काम आ सकता है? पत्थर कभी अनैतिक कर्म नहीं करता, गाय कभी झुठ नहीं बोलती, वृक्ष कभी चोरी या डकैती नहीं करते, परन्तु उससे क्या? माना कि तुम चोरी नहीं करते हो, न झूठ बोलते हो, न अनैतिक जीवन व्यतीत करते हो परन्तु चार घंटे प्रतिदिन ध्यान करते हो, और उतने ही घंटे के दुगने समय तक भक्तिपूर्वक घंटी बजाते हो, किन्तु अंत में इसका क्या उपयोग है? वह कार्य, यद्यपि थोड़ा ही है परन्तु सदा के लिए बहरमपुर को वह तुम्हारे चरणों पर ले आया है। अब जैसा तुम चाहते हो वैसा ही लोग करेंगे। अब तुम्हें लोगों से यह तर्क नहीं करना पड़ेगा कि श्रीरामकृष्ण भगवान् हैं। कार्य के बिना केवल व्याख्यान क्या कर सकता है? क्या मीठे शब्दों से रोटी चुपड़ी जा सकती है? यदि तुम दस जिलों में ऐसा कर सको तो वे सब दसों जिले अपने मुट्ठी में आ जायेंगे। इसलिए ऐसे बुद्धिमान लड़के होते हुए, इस समय अपने कर्म विभाग पर जोर दो, और उसकी उपयोगिता को बढ़ाने की प्राणपण से चेष्टा करो। कुछ लड़कों को द्वार-द्वार जाने के लिए संगठित करो, और अलखिया साधुओं के समान उन्हें जो भी मिले वह लाने दो। धन, पुराने वस्त्र या चावल या खाद्य पदार्थ या और कुछ। फिर उसे बाँट दो। यही कर्म है, निश्चय ही यह कर्म है। इसके बाद लोगों को श्रद्धा होगी, और फिर तुम जो कहोगे, वे करेंगे।

कलकत्ते की सभा के खर्च को पूरा करने के बाद जो बचे उसे दुर्भिक्ष-पीड़ितों की सहायता के लिए भेज दो या जो अगणित दरिद्र कलकत्ते की मैली-कुचैली गलियों में रहते हैं, उनकी सहायता में उसका व्यय करो। स्मारक भवन और इस प्रकार के कार्यों की कल्पना त्याग दो। प्रभु जो अच्छा समझेंगे वह करेंगे। इस समय मेरा स्वास्थ्य अति उत्तम है।

उपयोगी सामग्री तुम एकत्रित क्यों नहीं कर रहे? मैं स्वयं आकर पत्रिका आरम्भ करूँगा। प्रेम और दया से सारा संसार खरीदा जा सकता है; व्याख्यान, पुस्तकें और दर्शन ये सब निम्न श्रेणी में हैं। कृपया शशि को लिखो कि गरीबों की सेवा के लिए इसी प्रकार का एक कर्म विभाग वह भी खोले।

पूजा का खर्च घटाकर एक-दो रुपये महीने पर ले आओ। श्रीप्रभु की सन्तान भूख से मर रही हैं.... केवल जल और तुलसीपत्र से पूजा करो और उसके भोग के निमित्त धन को उस जीवित प्रभु पर जो दरिद्र में वास करता है, नैवेद्य चढ़ाने में खर्च करो। तब प्रभु की सभी पर कृपा होगी। योगेन यहाँ अस्वस्थ रहा, इसलिए आज वह कलकत्ते के लिए रवाना हो गया। मैं कल देउलाधार फिर जाऊँगा। तुम सभी को मेरा प्यार।

प्रेमपूर्वक तुम्हारा
विवेकानन्द

(स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्वामी ब्रह्मानन्द को लिखा गया पत्र)

पूज्य रज्जू भैया

पावन स्मृति

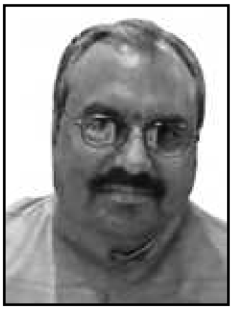

डॉ. शिवकुमार शर्मा
रसायन शास्त्र में पी.एच.डी.
भारतीय दर्शन, समाज, संस्कृति का गहन अध्ययन-चिंतन।
अनेक शोध लेख, विश्वविद्यालयों में सारगर्भित वक्तव्य
शिक्षा में भारतीयता पर पुस्तक शीघ्र प्रकाश्य
सम्प्रति : विद्या भारती अखिल भारतीय मंत्री

संपर्क
मो. 9415024034

मार्च 1999 की प्रतिनिधि सभा में मेरी घोषणा विद्या भारती के कार्य के लिए हुई और संघ के विदेश विभाग से मुक्त होकर अप्रैल 1999 में विद्या भारती के कार्य के लिए नेपाल (मेरा पूर्व केन्द्र) से विद्या भारती के दायित्व निर्वहन हेतु लखनऊ आ गया। तत्कालीन अ.भा.संगठन मंत्री माननीय लज्जाराम तोमर जी की सहमति और अनुमति से शैक्षिक गतिविधियों के केन्द्र प्रयाग को मैंने अपने कार्य का केन्द्र बनाया।

प्रयाग के सुप्रसिद्ध सिविल लाइंस में 'अनंदा' नामक भवन के एक भाग में संघ कार्यालय था। 'अनंदा' तत्कालीन प.पू.सरसंघचालक माननीय रज्जू भैया का पैतृक घर है। घर के शेष भाग में कुछ लोग सपरिवार रहा करते थे।

सन् 2001, माघ मेले का समय, विश्व हिन्दू परिषद् के पूर्णकालिकों के वर्ग में पूज्य रज्जू भैया का आगमन हुआ।

मिलते ही हँसते हुए बोले - 'सुना है पढ़े लिखों में आ गए हो।'

निश्चय ही उनके इस कथन की भूमिका में मेरा शारीरिक विभाग में दंडयुद्ध का शिक्षक होना था।

बात-बात में रज्जू भैया जी ने यह भी कहा कि यहाँ रहने वाले लोगों को पैसा भी दिया गया कि अपने-अपने लिए निवास बनवा सकें। निवास बनवाए भी, लेकिन 'अनंदा' छोड़कर वे लोग वहाँ गए नहीं।

मुझे लगा कि इस स्थल को खाली कराना चाहिए। संगठन की योजना से यह कार्य सम्पन्न हुआ।

प्रयाग आने पर पू.रज्जू भैया महावीर भवन में ठहरा करते थे। महावीर भवन मा. अशोक सिंहल जी का पैतृक निवास था। लेकिन 'अनंदा' से पू.रज्जू भैया का लगाव किसी से छिपा तो नहीं था। वे 'अनंदा' आए और पूरे परिसर में चक्कर लगाते हुए पुरानी स्मृतियों में खो गए।

वे धीरे-धीरे कहने लगे 'बंगले का आगे भाग निवास के लिए 'अलॉट' हुआ था।' (उनके पिता कुँवर बलवीर सिंह स्वतंत्र भारत के उत्तर प्रदेश के पहले 'चीफ इंजीनियर' थे। उन दिनों सभी विभागों को मिलाकर एक ही 'चीफ इंजीनियर' हुआ करते थे।) अंग्रेज अधिकारी के इंग्लैण्ड लौट जाने पर मेरी माता जी (माता जी का नाम श्रीमती ज्वाला देवी था) ने पिता जी पर उक्त भाग खरीद लेने का दबाव डाला।' पिता जी का अपना तर्क था - 'क्या करेंगे इतनी जगह का। रज्जू ने ब्याह तो किया नहीं और तीनों भाई अन्य स्थानों पर रहते हैं।'

लेकिन माता जी के दबाव के आगे झुकते हुए पीछे का हिस्सा पिता जी ने खरीद लिया था। यह सब कहते-कहते वे अत्यंत भावुक हो गए थे। एकाएक मेरे कंधे पर हाथ रखकर वे बोले -

'चलो, तुम्हारा कमरा देखते हैं।'

वहीं एक कमरा था, अत्यंत साधारण, जिसमें मैंने अपना झोला, सामान रखा था। साथ में एक कामचलाऊ रसोई और अत्यंत सामान्य सा बाथरूम। मेरी आवश्यकताएँ भी बहुत बड़ी थी नहीं। कमरे पर पहुँचकर चाय पीते-पीते माँ को याद कर फिर से वे भावुक होने लगे। बोले -

'शिवकुमार तुम कहो तो मैं यहीं रहना चाहता हूँ। माँ की याद आ रही है।'

मैं अवाक्। क्या कहूँ ? फिर भी कहा कि अभी तो शाम हो रही है, कल आपको यहाँ ले आऊँगा।

'ठीक है, कल मैं यहाँ आऊँगा और फिर और सात-आठ दिन यहीं रहूँगा।'

मैंने भी ठाना कि पूज्य रज्जू भैया को कल यहाँ ले आना है और उससे पूर्व इस कमरे को उनके रहने योग्य सुविधाजनक बनाना है।

विद्यालय के प्रबंधक जी को फोन किया 'भाई साहब एक 'ए.सी.' चाहिए। रात में ही लगना है।'

'तुम तो भाई, 'कूलर' के लिए भी तैयार नहीं थे, अब एकाएक 'ए.सी.' वह भी रात भर में । कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ।'

मैंने उन्हें सब बातें बताईं। वे तुरंत आए और बोले 'केवल 'ए.सी.' से काम नहीं होगा'। रात में उन्होंने किसी मिस्त्री को बुलाया, शौचालय में कमोड की व्यवस्था की गई। सहारे के लिए दोनों तरफ पाईप।' रज्जू भैया के लिए नीचे बैठना संभव नहीं था न !

एक और परेशानी ध्यान में आई। बिजली दिन भर में सात-आठ घंटे गायब रहती थी उन दिनों। एक जनरेटर का प्रबंध भी किया गया। कमरे में सफाई और पर्दे लग गए। अगले दिन दोपहर तक सारी व्यवस्था चाक-चौबंद।

सायंकाल मैं पू. रज्जू भैया के पास पहुँच गया, 'चलिए आपको लेने आया हूँ। सामान कहाँ है ?'

'बड़े जोश में लग रहे हो पहले चाय तो पियो।' रज्जू भैया ने कहा।

उनके सहायक ने पूछा - 'वहाँ की व्यवस्था ?'

'सामान लेकर चलेंगे, आपको व्यवस्था ठीक लगे तो उतारिएगा, नहीं तो लौटा लाएँगे।' मैंने कहा।

x x x x

'अरे ! यह कल वाला ही कमरा है क्या ?' विस्मय से पूछा पू. रज्जू भैया ने।

'इतना खर्च क्यों किया'। पू. रज्जू भैया तो एक-एक पैसा कैसे बचे इस प्रयास में रहते थे।

'आज नहीं तो कल तो यह सब होता ही' विनम्र भाव से मैंने कहा।

उनके सहायक ने मुआयना करने के बाद सम्मति दी।

'हाँ, यहाँ तो रह सकते हैं।'

सामान उतारा गया। चाय, भोजन की व्यवस्था। पू. रज्जू भैया वहीं रहे फिर।

प्रयाग के निवासी, वहीं विश्वविद्यालय में प्रोफेसर होने व संघ के कारण उनके सम्पर्क का दायरा विशाल था। सब प्रकार के लोग उनसे मिलने वहीं आया करते थे। समय मिलने पर विद्या भारती, कार्य, जमीन आदि के बारे चर्चा होती।

ऐसे ही एक दिन मैंने कहा 'यहाँ कक्षा 12 तक का एक विद्यालय प्रारम्भ करने योजना बना रहे हैं।'

'पैसा कहाँ से आएगा और देखो, अन्य विद्यालयों से पैसा मत लेना, आचार्यों के वेतन आदि देने में उन्हें कठिनाई होती है। मानोगे मेरी बात।'

'आपका कहा ब्रह्मवाक्य'।

'एक और अनुमति चाहिए आपसे। विद्यालय का नाम माता जी के नाम पर रखने के लिए'। उनसे कहा था मैंने।

उन्होंने कहा- 'अरे नहीं, नहीं !' मैंने कहा- 'यह जमीन उनके आग्रह पर ही तो खरीदी गई थी।' अनुमति देते हुए पूज्य रज्जू भैया ने कहा था 'मूल नाम को मत छोड़ना'।

एक बड़ा विद्यालय वहाँ बना, समाज के आर्थिक सहयोग से ही। न किसी विद्यालय से पैसा लिया, न किसी नेता से ही। इस प्रकार ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मंदिर बनकर खड़ा हुआ। 16-17 कमरे, एक बड़ा हॉल, 8 वीं तक का विद्यालय।

'ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मंदिर'।

माँ के नाम के विद्यालय से अत्यंत संतुष्ट थे। स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से 'पूणे' उनका केन्द्र था लेकिन अप्रैल-मई में आठ-दस दिन के लिए प्रयाग अवश्य आते। प्रयाग में यहीं ठहरते, उसी कमरे में ।

सन् 2004 में महाप्रयाण से पूर्व तीन बार वे आए यहाँ। वंदना के समय भैया, बहिनों के साथ बैठते थे। छठी, सातवीं, आठवीं, कक्षा के भैया, बहिनों के साथ। खूब चर्चा, गपशप।

मुझे अच्छी तरह याद है, एक दिन वे 'माँ का मन कैसा होता है' विषय पर बोले। उनकी भावमयता से लग रहा था कि उस समय वे अपनी माता जी के साथ की अनुभूति से भरे हुए थे । बस यही उनका अंतिम प्रवास था प्रयाग का।

x x x x

अब यह विद्यालय 12 वीं कक्षा तक का हुआ है। पूरी कमिश्नरी में यहीं का विद्यार्थी अब तक प्रथम आता है। इसके अतिरिक्त 12 वीं कक्षा तक के दो विद्यालय इसी नाम से और बन गए हैं - 'ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मंदिर' । सन् 2010 में वाराणसी में दस एकड़ भूमि आवासीय विद्यालय के लिए क्रय की गई है। परंपरा चल रही है।

2011 में अखिल भारतीय मंत्री का दायित्व लेकर दिल्ली आ गया हूँ। उक्त सब बातों को बीते एक लम्बा अंतराल हो गया। जब भी अकेला भावक्षणों में होता हूँ तो मेरे कंधे पर हाथ रखे बतियाते हुए पूज्य रज्जू भैया जी मेरी आँखों के सामने दिखाई देते हैं और मैं देखता रहता हूँ, देखता रहता हूँ, बस देखता रहता हूँ।

(29 जनवरी पूज्य रज्जू भैया के जन्मदिन पर)

आकाश तत्त्व

प्रकृति

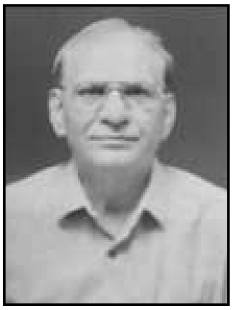

डॉ. उमेश चन्द वर्मा
पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर
दिल्ली विश्वविद्यालय
शिक्षाविद्, विचारक
शैक्षिक, सांस्कृतिक विषयों पर लेखन,
सामाजिक कार्यकर्ता

संपर्क
मो. 9013319761

शास्त्रों के अनुसार मानव शरीर की रचना पाँच तत्वों से हुई है। आत्मन् आकाशः संभूतः। आकाशाद्वायुः। वायोर्ग्निः। अग्नेरापः। अद्भयः पृथिवी। तेषां मनुष्यादिनां पंचभूत समवायः शरीरम्। यहाँ आकाश से अन्य तत्त्वों की उत्पत्ति बताते हुए मनुष्य आदि प्राणी इन्हीं तत्वों के समन्वय है, ऐसा कहा गया है। इनमें आकाश प्रथम है। (शेष चार हैं पृथ्वी, वायु, जल एवं अग्नि।)

ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि रचना से पहले की स्थिति का वर्णन है। ''हिरण्यगर्भ समवर्तताग्रे, भूतस्य जातः पतिरेकासीत। सदाधार पृथ्वी, ध्यामुतेतमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।''

(सूर्य, पृथ्वी का आधार परमात्मा रूपी तत्त्व जगत की उत्पत्ति से पूर्व विद्यमान था जिसने पृथ्वी और सूर्य-तारों का सृजन किया।) उस समय न सत् था न असत्, शून्य आकाश भी नहीं था। केवल अंधकार ही अंधकार था। यहाँ अंधकार (शून्य) आकाश की प्रथम अवस्था हो सकती है। जगत् की उत्पत्ति के प्रकरण में छांदोग्य उपनिषद् में आकाश को विभू (व्यापक) माना गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि आकाश नित्य है और यह उत्पन्न नहीं होता। इसी आधार पर आकाश को ब्रह्म स्वरूप माना गया है।

तैतिरीयोपनिषद् के अनुसार ''ब्रह्म सत्य, ज्ञान स्वरूप और अनन्त हैं।'' इस प्रकार ब्रह्म के लक्षण बताकर उसी ब्रह्म से आकाश की उत्पत्ति बताई गई है। अतः कारण (ब्रह्म) के समान ही कार्य (आकाश) भी अनन्त है। स्वामी दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में इस मंत्र की व्याख्या करते हुए कहा है कि कारण रूप द्रव्य सब और फैल रहा था, उसके संग्रहण करने में कुछ स्थान खाली हुआ, उसे आकाश कहते हैं। यह उत्पन्न नहीं हुआ व्यावहारिक रूप से बना। जैसे रेलगाड़ी में किसी अतिरिक्त व्यक्ति के बैठने के लिए स्थान उत्पन्न नहीं होता वह होता ही है।

सांख्य दर्शन के अनुसार प्रत्येक तत्त्व के दो रूप होते हैं एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म। सूक्ष्म ही विकसित होकर स्थूल बनता है। शास्त्रों में आकाश की उत्पत्ति साक्षात् ब्रह्म से बताई गई है। ब्रह्म सूक्ष्म है उसका शरीर आकाश है। आकाशः शरीरं ब्रह्मः। ब्रह्म का शरीर आकाश है। जैसे ब्रह्म से समस्त सृष्टि निर्मित हुई है उसी प्रकार आकाश से अन्य तत्त्वों का निर्माण हुआ है।

''आकाशोऽर्थान्तर्त्वादिव्य पदेशात्''अर्थात आकाश शब्द परब्रह्म का ही वाचक है। यह परमात्मा ही यहाँ आकाश शब्द से कहा गया है।

छांदोग्य उपनिषद् में कहा गया है ''ब्रह्म के नगर रूप इस मनुष्य शरीर में कमल के आकार वाला एक घर (हृदय) है उनमें सूक्ष्म आकाश है, उसके भीतर जो वस्तु है उसे जानने की इच्छा करनी चाहिए। यदि तुलना की जाए तो भारतीय धर्म दर्शन में वर्णित आकाश की अवधारणा वर्तमान वैज्ञानिक ज्ञान और शब्दावली के 'स्थान' यानि स्पेस के निकट प्रतीत होती है। इसका एक उदाहरण गीता में निम्न श्लोक है - एकं सवर्गतंव्योम बर्हिन्तर्यथाघटे। नित्यं निरंतरंब्रह्मसर्वभूतगणेतथा।।

जिस प्रकार एक ही सर्वव्यापक आकाश घड़े के अन्दर व बाहर है उसी प्रकार सदा स्थिर विद्यमान व सदा गतिमान (सदा रहने वाला) ब्रह्म सभी भूतों में है।

आकाश प्राचीन काल से ही सबकी जिज्ञासा का विषय रहा है। वृहदारण्यक उपनिषद् में भी आकाश को ब्रह्म माना गया है। यहाँ आकाश ब्रह्म की उपासना का प्राकृतिक मंत्र है। ''ओऽमृखं ब्रह्म।'' इस मंत्र में आकाश को सनातन बताया गया है। ''खं पुराणं वायुरं खमिति।'' इसमें वायु रहती है। ''खं'' (आकाश) ब्रह्म का शब्द वाच्य ओऽम् है। ओऽम् का उच्चारण और 'खं' आकाश का ध्यान ही श्रेष्ठ आलम्बन है।

शंकराचार्य ने बृहदारण्यक के भाष्य में सावधान किया है कि 'खं' को भौतिक आकाश न समझा जाए क्योंकि उपनिषद् का कहना है कि 'खं पुराणं' अर्थात् आकाश सनातन है। वैदिक साहित्य और पाणिनी के परवर्ती साहित्य में भी 'खं' का अर्थ आकाश है। आकाश सबको आवृत करता है। सबके भीतर और बाहर है 'खं' सुन्दर हो तो सु-ख यानि सुख और 'ख' कष्टदायी हो तो दु-ख यानि दुख। ऐसा सनातन आकाश खं ब्रह्म प्रणाम योग्य है। आकाश शून्य है पर फैला नहीं। भारतीय तत्त्व दर्शन वैदिक काल से ही मानता और जानता रहा कि आकाश एक महत्त्वपूर्ण शक्तिशाली तत्त्व है। शेष चार तत्त्व वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी क्रमशः आकाश के ही स्थूल रूप हैं। आकाश तत्त्व ईश्वर की आत्मा के निकटता की दृष्टि से सर्वप्रथम है इसलिए उसकी शक्ति, ध्यान, फल भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। आकाश तत्त्व की व्याख्या करते हुए महर्षि वशिष्ठ लिखते हैं कि :-

चित्ताकाशं चिदाकाशं माकाशंचतृतीयकम्।
दाभ्याँ शून्यतरंविद्धिचिदाकाशं वारनने।।
देशदेशान्तरप्राप्तौसविदेमध्येमवयत् ।
निमेषेण चिदाकाशंत्द्वदिधिवस्वर्णिनि ।
तस्मिन्निरसितनिः शेषसंकल्पस्थितिमेषिचेत् ।
सर्वात्मकं पदं तत्वंतदाप्नाषयसशयम्।
चित्तकाशचिदाकाशाकाश च तृतीयकम्।
विद्ययेतत्येमकं त्वमविनाभावनावशात्।।

अर्थात् आकाश नाम का व्यापक तत्त्व आकाश, चित्ताकाश और चिदाकाश तीन रूपों में सर्वत्र व्याप्त है। चिदाकाश जो ज्ञान का आश्रय है सबसे सूक्ष्म है। एक विषय से दूसरे विषय की प्राप्ति के मध्य के क्षणभर का जो अवकाश अनुभव में आता है वह चिदाकाश ही है। केवल वहीं संकल्प रहित है उसमें स्थिर हो जाने से आत्मापरम तत्व या परमपद की प्राप्ति होती है। यह तीनों आकाश एक ही तत्त्व के त्रिगुणात्मक रूप हैं।

आकाश तत्त्व के उपरोक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि ईश्वरीय सत्ता के सबसे समीप तत्त्व आकाश ही है उसमें विराट् जगत् की सर्वव्यापकता समाहित है।

आकाश तत्त्व का अर्थ शून्य अथवा खाली स्थान है इसे अवकाश भी कहते हैं। जिस रिक्त स्थान में प्राणी गति करते हैं। ठोस में गति करने का अवकाश नहीं रहता है। जिस प्रकार पानी में मछली रहती है, उसी प्रकार जीव आकाश में अपना जीवनयापन करते हैं।

हम चारों ओर आकाश तत्त्व से घिरे हुए हैं। हमारे शरीर के भीतर और बाहर आकाश ही है। हमारे शरीर में रक्त संरचरण करता है, असंख्य कोशिकाएँ कार्य करती हैं, वायु गति करता है, इन सबको अपना कार्य सम्पन्न करने एवं अपने अस्तित्व के लिए आकाश तत्त्व की आवश्यकता होती है। इसके आभाव में इनके कार्य एवं स्थिति सम्भव नहीं होती।

महात्मा गांधी ने आकाश तत्त्व को 'आरोग्य सम्राट' की संज्ञा दी है और बताया कि ईश्वर का भेद जानने के लिए आकाश के भेद को जानना आवश्यक है। ऐसे महान तत्त्व का जितना भी अभ्यास और उपयोग किया जाएगा उतना ही अधिक अरोग्य प्राप्त होगा। गांधी जी के अनुसार बिना घर-बार वस्त्रों के इस अनन्त के साथ सम्बन्ध जुड़ जाए तो हमारा शरीर बुद्धि और आत्मा पूर्ण रूप से आरोग्य होंगे। वे कहते थे कि घर-बार साज-सामान और वस्त्र आदि के उपयोग में प्राप्त अवकाश (आकाश) रखना चाहिए। जो आकाश के साथ सम्बन्ध जोड़ता है उसके पास कुछ नहीं होता पर सब कुछ होता है। सम्भवतः इसी कारण से वे अत्यल्प वस्त्र धारण करते थे। भारत में सन्यासी प्रायः नग्न रहते हैं अथवा अत्यल्प वस्त्र धारण करते हैं, उसका उद्देश्य भी आकाश तत्त्व से सम्बन्ध रखना ही है।

यजुर्वेद में आकाश का विनाश एवं प्रदूषित करने का घोर विरोध किया गया है। ''द्यां मांलेखीर्न्तरिक्षं मा हिंसीः।'' निश्चय ही यह विनाश वायु और ध्वनि प्रदूषण से सम्बन्धित है। भारतीय तत्त्वदर्शन की मान्यता है कि शरीर के पोले भाग में यह आकाश तत्त्व ही भरा हुआ है। उसकी शुद्धि से विचार और भावनाएँ उर्ध्वगामी होती हैं। यह पाँच कोश है, पाँच महातत्व है इनसे ही शरीर का निर्माण हुआ है। बाहर जो कुछ दिखाई देता है उस संसार का विस्तार भी इनसे ही हुआ है। इन पाँच आवरणों के बीच में ब्रह्म छुपा बैठा है। अतः उसके पवित्रता की रक्षा करनी चाहिए।

आकाश को शास्त्रों में पिता माना गया है। द्योर्मे पिताजनिता नाभिरत्रर्बन्धुर्मे माता पृथ्वीमहीयम् । अर्थात द्याव (आकाश) मेरे पिता हैं, बन्धु वातावरण मेरी नाभी है और यह महान पृथ्वी हमारी माता है। पितामाताचभुवनानिरक्षतः। भाव विभोर ऋषि आकाश को पिता कहते हैं और पृथ्वी को माता। ऋषि कहते हैं पहले दोनों मिले हुए थे। तब उनका नाम रोदसी था। एक मंत्र के अनुसार धरती से आकाश को अलग करने का काम मरुतों ने किया।

आकाश हमारा पालन करता है। हमारी रक्षा करता है। वास्तु शास्त्र में आकाश को ब्रह्म तत्त्व (मध्यस्थान) कहा जाता है। उस तत्त्व की पूर्ति करने के लिए पुराने मकानों के मध्य खुला आंगन रखा जाता था ताकि अन्य सभी दिशाओं में इस तत्व की प्राप्ति हो सके। आकाश तत्त्व से अभिप्राय यह है कि गृह निर्माण में खुलापन होना चाहिए। मकान के कमरों की ऊचाई और आंगन के आधार पर छत का निर्माण होना चाहिए। अधिक और कम ऊँचाई के कारण आकाश तत्त्व प्रभावित होता है। कई मकानों में दूषित वायु का प्रवेश अथवा आवेश देखा गया है। इसका मूल कारण वायु तत्त्व और आकाश तत्त्व का सही समन्वय न होना है। मानसिक रोगों का पनपना भी आकाश तत्त्व के

दोष का ही परिणाम है। मनुष्य के सोने का स्थान आकाश के नीचे ही होना चाहिए। ओस, सर्दी, बरसात आदि की स्थिति में कुछ ओढ़ने के अतिरिक्त हर सयम अगणित तारों से भरा आकाश हमारे चारो ओर हमारी आवश्यकता होनी चाहिए ।

आकाश हमारे भीतर-बाहर ऊपर नीचे चारो ओर है। त्वचा में जहाँ-जहाँ छिद्र हैं वहाँ भी आकाश है। इस आकाश की जगह को हमें भरने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। यदि प्रतिदिन बिना ठूसे भोजन करें तो पेट में रिक्त स्थान बचा रहेगा जो कि आकाश तत्त्व ही है। साथ ही यह हमारे अच्छे स्वास्थ्य के लिए भी उत्तम रहता है। उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति और रोग की निवृति के लिए आकाश तत्त्व एक साधन के रूप में प्रयुक्त होता है।

सूर्योदय के बाद सूर्य के तीस डिग्री का कोण बनाने पर अथवा दिन में कभी भी एक बार आकाश को देखें और आकाश के सामने नतमस्तक हो जाएँ। इसी प्रकार सूर्य के अस्त होने के बाद एक बार फिर ऊपर देख कर शीश झुकाएँ। वहाँ बैठे किसी देवता के लिए नहीं बस आकाश के लिए जिसने आपको आज थामे रखा। सिर्फ इतना करें और देखें कि आपके जीवन में कैसे नाटकीय ढंग से बदलाव आता है। परम सत्ता का एक नाम 'ऊपर वाला' भी है। लोग अक्सर कहते हैं की ऊपर वाले की कृपा से यह कार्य हो रहा है। दुख आने पर ऊपर वाले की मर्जी मानकर स्वीकार किया जाता है। यह ऊपर वाला मूलतः आकाश तत्त्व ही मूल तत्त्व है।

कोई व्यक्ति जब सफलता प्राप्त करता है तो कामयाबी के उन पलों में वह ऊपर की और देखता है क्योंकि अनजाने में ही उसे बोध होता है कि उसके ऊपर कोई श्रेष्ठ शक्ति विद्यमान है। सचिन तेन्दुलकर आदि अनेक खिलाड़ियों ने जब भी अपने खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन किये, सबने आकाश की ओर देखे, मानो वे किसी अदृश्य शक्ति को धन्यवाद दे रहे हैं। क्या आपने कभी ध्यान दिया है जब आपको कोई गहरा अनुभव होता है तो अनजाने में आपका शरीर कृतज्ञता के भाव से ऊपर की ओर देखता है। भारतीय दर्शन के अनुसार प्रत्येक तत्त्व का अपना गुण है। आकाश के गुण विषयक निम्न उक्ति द्रष्टव्य है। 'शब्दगुणमाकाशम् तच्चैकविभुनित्यं च।' अर्थात आकाश का गुण शब्द है तथा यह आकाश नित्य अर्थात् सार्वकालिक तथा विभु अर्थात् सार्वदेशिक, सर्वव्यापी है।

शब्द गुण युक्त आकाश का विकास वायु है। वायु में आकाश का गुण शब्द है तथा अपना गुण स्पर्श है इस प्रकार वायु के दो गुण है। वायु का विकास अग्नि में तीन गुण है। अग्नि का विकास जल है। जल के उपर्युक्त तीनों गुण शब्द, स्पर्श रूप तो है ही उसका अपना गुण रस है। कुल मिलाकर जल में चार गुण है। सबसे बाद में विकसित पृथ्वी में पाँच गुण हैं। पृथ्वी के पहले चार गुण शब्द, स्पर्श, रूप व रस के साथ ही अपना गुण गंध भी है।

आकाश - एक गुण - शब्द
वायु - दो गुण - शब्द, स्पर्श
अग्नि -तीन गुण- शब्द, स्पर्श, रूप
जल -चार गुण - शब्द, स्पर्श, रूप, रस
पृथ्वी - पाँच गुण - शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध

आकाश का गुण शब्द है इसका स्थान मनुष्य शरीर में कंठ में है। हमारे शरीर में शब्द की उत्पत्ति इस आकाश तत्त्व से ही होती है। हम जो भी बोलते हैं वह शब्द ध्वनि तत्त्व या वाणी तत्त्व की देन है। शब्द गुण के कारण ही आकाश कभी -कभी भविष्य की जानकारी प्रदान करता है, जिसे भविष्य वाणी कहते हैं। जितने भी शब्द होते हैं वे आकाश तत्त्व के ही कारण होते हैं। यदि आकाश तत्त्व न हो तो शंख, घण्टा, घड़ियाल, तोप, बन्दूक मोटर किसी की आवाज न सुनाई पड़े। यहाँ तक कि हम बातचीत भी नहीं कर सकते। किसी के मुंह से एक शब्द भी न निकले।

आकाश के अनेक नाम, अनेक रंग, अनेक रूप हैं। इसे नभ, आसमान, अम्बर, व्योम, नीलाम्बर, गगन, शून्य, अंतरिक्ष, अभ्र आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। तारों और नक्षत्रों से भरे हुए आकाश को देखकर हमें आकाश की शून्यता पर विश्वास नहीं होता। किन्तु पूरे आकाश के पद्य भाग में केवल एक भाग को तारों ने ले रखा है। इसलिए आकाश को नभ (शून्य) भी कहा गया है। शेष स्थान में नक्षत्र धूलि और कण विद्यमान हैं। परन्तु ये भी बहुत बिखरी हुई अवस्था में है।

आकाश दिन में (बादल आदि होने पर भी) देखने में नीला ही दिखाई देता है और ऐसा लगता है कि यह नीलापन अथाह है जैसे स्वयं इसकी गहराई घनीभूत हो गई। आकाश की नीलिमा प्रकाश की रश्मियों के प्रकीर्णन बिखेरने द्वारा उत्पन्न होती है। रात्रि में प्रकाश नहीं रहता तो वही गगन मंडल काला अर्थात् प्रकाश रहित हो जाता है। प्रातः और सायंकाल जब सूर्य की किरणें धरातल के लगभग समानान्तर आती हैं, उन्हें वायुमंडल के भीतर तिरछी दिशा में अधिक चलना पड़ता है। आँख पर बड़े तरंगधैर्य की लाल रश्मियाँ सीधी पड़ती है। सूरज जितना ही क्षितिज के पास नीचे रहता है, लालिमा उतनी ही अधिक देखी जाती है।

वैदिक भौतिकी के अनुसार महाभूत आकाश यह पदार्थ है यह सब पदार्थों का आधार है। यह ब्राह्मी शब्द रश्मि प्रणव नाद से बनता है, अतः इसका गुण शब्द है। आकाश तत्त्व अनंत है। इसका गुण, तत्त्व, नाम, रूप, उपाधि (चिदाकाश, मठाकाश, घटाकाश आदि) के कारण अनंत विस्तार है। यह साक्षी है। अंत में यही कहा जा सकता है कि आकाश ''विभुंव्यापकं ब्रह्मवेदं स्वरूपम्'' है।

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर : राष्ट्रवादी चिंतक

चिंतन

डॉ. राजकुमार फलवारिया
राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय चिंतक, लेखक व सामाजिक कार्यकर्ता

बाबा साहेब का नाम जेहन में आते ही सामान्य जन मानस में तीन छवि उभकर आती हैं, प्रथम वह दलितों के नेता थे, दूसरे वह संविधान के निर्माता थे, तीसरे वे आरक्षण के पक्षकार थे। निःसन्देह बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के संदर्भ में यह तीनों दृष्टियाँ ठीक है किन्तु ये उनके विराट् व विशाल व्यक्तित्व को बौना बनाती हैं, उनको केवल दलित नेता, संविधान निर्माता व आरक्षण के पैरोकार तक सीमित करना बाबा साहेब के साथ अन्याय व उनके व्यक्तित्व का अपूर्ण विश्लेषण होगा।

बाबा साहेब का जीवन व चिंतन केवल दलित उत्थान, संविधान निर्माण व आरक्षण तक ही सीमित नहीं था, अपितु उनका दर्शन, चिंतन व संघर्ष सम्पूर्ण समाज व राष्ट्र को समर्पित रहा। आज हम बाबा साहेब के राष्ट्रवादी चिंतन पर चर्चा करने से पूर्व उनके विराट् व्यक्तित्व को समझने का प्रयास करें। बाबा साहेब अपने समय के सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों में रहे। उन्होंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय अमेरिका से एम.ए.और पी.एच.डी. को मात्र दो वर्षों 1913 से 1915 में पूर्ण किया। 1916 से लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स से डी.एस.सी.और एम.एस.सी. तथा इसी काल खण्ड में ही ग्रेज इन लॉ कॉलेज में लॉ में प्रवेश लिया, वे मूलतः अर्थशास्त्री थे। उनके सभी शोध पत्र अर्थशास्त्र व भारतीय अर्थव्यवस्था पर आधारित थे। उनका आर्थिक चिंतन आज भी प्रासंगिक है। वह पत्रकार व सम्पादक थे। मूकनायक, बहिकृत भारत, जनता और प्रबुद्ध भारत जैसे पत्र, पत्रिकाओं का 1920 से 1956 तक लेखन व संचालन किया। वह जीवन के अंतिम क्षण तक अपनी लेखनी से सामाजिक व राष्ट्रीय विषय पर लिखते रहे। मजूदरों के नेता थे। वह वामपंथी मजदूर संगठनों को देशहित और मजदूर के हित में नहीं मानते थे। 1936 में मजदूरों को वामपंथ की ओर जाने से रोकने के लिए ''स्वतंत्र मजदूर दल'' का गठन किया। 1938 मे सभी गैर वामपंथी मजदूर संगठनों को एकत्रित कर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ राष्ट्र व्यापी आन्दोलन किया। वह 'प्राध्यापक' थे। 1917-1920 तक वह मुम्बई के कॉलेज में अध्यापन का कार्य भी किया। उन्होंने ब्रिटिश वाईसराय के केबिनेट में 1942 से 1946 तक सदस्य श्रम रहते हुए मजदूरों के हित में कार्य कर ऐतिहासिक निर्णय लिए। बाबा साहेब महिला के अधिकारों के प्रखर वक्ता व मुखर पक्षधर थे। विधि मंत्री रहते हुए महिलाओं के लिए ऐतिहासिक निर्णय लिये। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए ही प्रथम कैबिनेट से हिन्दू कोड बिल के कारण इस्तीफा दिए। वह लेखक के नाते समकालीन राष्ट्रीय व सामाजिक विषयों पर कई पुस्तकों का लेखन किया। जीवन भर सामाजिक उत्पीड़न, उपेक्षा व तिरस्कार को सहन किया। किन्तु संविधान के निर्माण के समय सम्पूर्ण राष्ट्र व समाज का चिंतन कर सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी संविधान 26 नवम्बर 1949 राष्ट्र को समर्पित किया।

वे विद्यार्थी, अर्थशास्त्री, मजदूर नेता, प्राध्यापक, बैरिस्टर, लेखक, पत्रकार, सम्पादक, सामाजिक आन्दोलनकर्ता, श्रम मंत्री आदि थे उनके जीवन के अनेक अनछुए अध्याय को देखने पर पता चलता है कि उनका व्यक्तित्व वास्तव में विराट् व विशाल था किन्तु 50 वर्षों में देश के राजनीतिक दलों, मीडिया, विश्वविद्यालयों और तथाकथित दलित चिन्तकों ने उनके विराट् व्यक्तित्व को केवल एक वर्ग का नेता बताने व दिखाने का प्रयास किया।

हम बाबा साहेब के विराट् चिन्तन में से आज केवल राष्ट्रवादी चिंतन पर प्रकाश डालने का लघु प्रयास करेंगे। उनका राष्ट्रवादी चिंतन आजादी से पूर्व, आजादी के पश्चात् सदैव राष्ट्रीय नेतृत्व करने का प्रयास किया। 1947 में भारत विभाजन को वे अनैतिक व अतार्किक मानते थे। उन्होंने पाकिस्तान निर्माण का आरम्भ से ही विरोध किया। किन्तु जब पाकिस्तान का निर्माण निश्चित हो गया तब उन्होंने माँग की

संपर्क
मो. 9212289965

"भारत के विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण के पश्चात् जम्मू-कश्मीर पर प्रधानमंत्री नेहरू की नीति का बाबा साहेब ने विरोध किया। उनका मानना था कि जम्मू-कश्मीर के तीन भाग हैं -कश्मीर घाटी, जम्मू और लद्दाख। किन्तु जम्मू-कश्मीर का निर्णय केवल घाटी को देखकर करना जम्मू और लद्दाख की जनता का घोर तिरस्कार है। केवल घाटी के आधार पर निर्णय, जम्मू-कश्मीर के हिन्दुओं और जम्मू-कश्मीर के लिए घातक होगा।"

और कांग्रेस व नेहरू सरकार से कहा कि यदि भारत का विभाजन धर्म के आधार पर हो रहा है तो धर्म के आधार पर जनसंख्या का शतप्रतिशत स्थानान्तरण होना चाहिए चाहे जितना भी समय लगे, किन्तु कांग्रेस और तत्कालीन राष्ट्रीय नेतृत्व ने छद्म धर्मनिरपेक्षता के नाम पर देश को विद्वेष की आग में झोंक दिया। वे भारतीय सेना में बढ़ती मुस्लिम संख्या को लेकर चिंतित थे। "थाट्स ऑन पाकिस्तान" किताब में लिखते हैं कि "यदि भारत पर विदेशी हमला हो तो सेना मे शामिल मुसलमान क्या भारत की रक्षा के लिए लड़ेगे?, इसके जबाब में वे कहते हैं कि यदि सेना के मुसलमान पाकिस्तान की संकल्पना से सम्मोहित होंगे तो देश की सुरक्षा और स्वतंत्रता खतरे में डालेंगे। इस का जिक्र उन्होंने 1929 में बहिष्कृत भारत के सम्पादकीय में किया कि यदि स्वतंत्र हिन्दुस्तान पर तुर्की, पर्शिया या अफगानिस्तान इन तीनों मुस्लिम राष्ट्रों मे से कोई हिन्दुस्तान पर हमला करता है, भारत के मुसलमान तब एकजुट होकर मुकाबला करेंगे इसकी क्या गारन्टी कोई दे सकता है? हम तो नहीं दे सकते। हिन्दुस्तान के मुसलमानों का स्वाभाविक आकर्षण मुस्लिम राष्ट्रों की ओर स्वाभाविक है, इन विचारों से प्रभावित मुसलमानों का झुकाव अफगानिस्तान व तुर्कीस्तान की ओर होगा, ऐसी स्थिति में विदेशी मुस्लिम हमले से हिन्दुस्तान को सुरक्षित मानकर चलना खतरनाक होगा। ऐसा हमें लगता है। (सन्दर्भ बहिष्कृत भारत पृष्ठ 177।)

भारत के विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण के पश्चात् जम्मू-कश्मीर पर प्रधानमंत्री नेहरू की नीति का बाबा साहेब ने विरोध किया। उनका मानना था कि जम्मू-कश्मीर के तीन भाग हैं -कश्मीर घाटी, जम्मू और लद्दाख। किन्तु जम्मू कश्मीर का निर्णय केवल घाटी को देखकर करना जम्मू और लद्दाख की जनता का घोर तिरस्कार है। केवल घाटी के आधार पर निर्णय, जम्मू-कश्मीर के हिन्दुओं और जम्मू-कश्मीर के लिए घातक होगा। जम्मू-कश्मीर विलय के लिए मुस्लिम नेता शेख अब्दूला का जम्मू-कश्मीर के लिए विशेष दर्जे का प्रारूप जब डॉ. अम्बेदकर को दिखाया गया तब डॉ. अम्बेडकर जी ने विशेष दर्जे के प्रारूप को राष्ट्रविरोधी बताया और कहा कि यह देश के पीठ में छूरा घोपने के समान होगा। उन्होंने इस प्रारूप को सिरे से खारिज कर दिया। किन्तु नेहरू के व्यक्तिगत प्रयास व नीतिगत्तस्वार्थ के कारण इस प्रारूप को समिति के अन्य सदस्यों के माध्यम से इसे संविधान सभा में धारा 370 के रूप में पारित करवाया। डा. अम्बेदकर ने प्रारूप समिति के अध्यक्ष के नाते इसका विरोध किया।

बाबा साहेब का मानना था कि देश की सुरक्षा के बारे में चार बिन्दु महत्त्वपूर्ण हैं (1) विदेश नीति (2) आन्तरिक अर्थव्यवस्था (3) सामाजिक एकता (4) सेना। डाक्टर अम्बेडकर के अनुसार विदेश नीति की बुनियाद देश और व्यवहारिकता होती है। विदेश नीति में आदर्शवाद का कोई मूल्य नहीं होता । बाबा साहेब का मानना था कि आदर्शवाद के पीछे नेहरू सरकार ने तीन बड़ी भूले कीं। तिब्बत, चीन को दान में देना, और चीन के साथ पंचशील समझौता तथा चीन को राष्ट्रसंघ में प्रवेश दिलाने का आग्रह व प्रयास करना। बाबा साहेब ने स्पष्ट कहा नेहरू की यह तीन भयंकर भूलें थी। तिब्बत, चीन और भारत के बीच एक बफर राज्य था लेकिन तिब्बत पर चीन के कब्जे के साथ ड्रैगन भारत की सीमा पर पहुँच गया, पंचशील समझौता एक छलावा है और हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा दिखावा। बाबा साहेब की भविष्यवाणी सही साबित हुई और 1962 में चीन ने भारत पर हमला कर सैकड़ों मील जमीन हड़प ली। पंचशील का समझौता कर भारत ने अमरीका सहित पश्चिमी यूरोप के सभी देशों को अपना दुश्मन बना लिया। चीन को तुरन्त राष्ट्र का दर्जा देना, संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बनाना और सुरक्षा परिषद् का सदस्य बनाने का नेहरू सरकार का आग्रह विदेश नीति का दिवालियापन था। बाबा साहेब के सभी कथन भविष्य में सही साबित हुए।

बाबा साहेब ने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए आंतरिक अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ होना अनिवार्य बताया है। अपने संविधान सभा में दिए अंतिम भाषण 25 नवम्बर 1949 को उनका कहना था। आज से राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना हो जाएगी किन्तु आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना होना अभी शेष है। कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था में इतने बड़े देश का भार कृषि पर टिका है। अतः कृषि के भार को कम करने के लिए

"आज से राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना हो जाएगी किन्तु आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना होना अभी शेष है। कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था में इतने बड़े देश का भार कृषि पर टिका है। अतः कृषि के भार को कम करने के लिए औद्योगिकरण करना होगा और नए रोजगार के अवसर तलाशना होगा। उनके ये कथन आज भी प्रासंगिक है।"

औद्योगिकरण करना होगा और नए रोजगार के अवसर तलाशना होगा। उनके ये कथन आज भी प्रासंगिक है।

सामाजिक एकता राजनीतिक लोकतंत्र की सुरक्षा की गारन्टी है। बाबा साहेब का कहना था सामाजिक एकता, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के इन तीन मूल्यों पर आधारित होगी। स्वतंत्रता व समानता संविधान से मिलेगी किन्तु बन्धुत्व का भाव हम सब एक हैं, यह भातृ भाव उत्पन्न करेगा। अपने अंतिम सार्वजनिक भाषण 15 नवम्बर 1956 में उन्होंने काठमांडू के विश्व बौद्ध संघ के कार्यक्रम में ''सर्वजन हिताय, बहुजन हिताय'' का आहवान किया।

भाषा के आधार पर राज्य निर्माण, समाज और राष्ट्र के लिए घातक होगा। स्वयं मराठी भाषी होने के बावजूद हिन्दी भाषा को केन्द्रीय राजभाषा बनाने हेतु आग्रह किया। नदियों को जोड़कर बाढ़ व सूखा समाप्ति की बात 1920 से अपने लेखों के माध्यम से करते रहे। बाबा साहेब ने नेहरू सरकार द्वारा भाषा के आधार पर राज्यों का निर्माण का विरोध भी किया। भाषा के आधार पर राज्य संघर्ष को जन्म देंगे। देश की एकता और अखंडता के लिए चुनौती बनेंगे ''एक राज्य एक भाषा'' का सिद्धांत हो सकता है लेकिन यह भाषाई विविधता के नाम पर राज्यों का निर्माण घातक होगा।

वे देश में जल संकट, बाढ़, सूखा की समस्याओं के लिए नदियों को जोड़ने का आग्रह लगातार करते रहें। नदियों को राष्ट्रीय सम्पत्ति मानते थे। जल मार्ग को सबसे सस्ता यातायात मानते हुए उसकी वकालत की। बड़ी नदियों पर बड़ें बाँध बनाकर सिंचाई, बिजली और औद्योगिकरण की बात हमेशा कहते व उसके लिए लिखते रहे। 1948 में दामोदर वैली विधेयक बाबा साहब की योजना थी।

बाबा साहेब ने 1956 में बौद्ध मत को स्वीकार कर भारतीय संस्कृति में अपनी आस्था और विश्वास को बनाए रखा। उनका मानना था कि स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का संदेश फ्रांस की क्रान्ति से न होकर बुद्ध का संदेश है, जो सम्पूर्ण मानवता को संदेश है। जिस वामपंथी विचार ने धर्म को अफीम बताया वही बाबा साहब ने बुद्धम् शरणम् गच्छामि, धम्म शरणम् गच्छामि को स्वीकार किया।

''बाबा साहेब के जीवन काल में कई अन्तरराष्ट्रीय घटनायें घटी जिसका सम्बन्ध भारत के हितों से साथ था। ''स्वेज नहर संघर्ष'' में मिस्र के राष्ट्रपति नासिर ने स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया, जिसका अमेरिका सहित सभी यूरोपीय देशों ने विरोध किया। किन्तु नेहरू ने नासिर की मित्रता के चलते ही स्वेज नहर के राष्ट्रीय करण का समर्थन किया। उस समय बाबा साहेब ने नेहरू की इस नीति का विरोध किया''

बाबा साहेब के जीवन काल में कई अन्तरराष्ट्रीय घटनायें घटी जिसका सम्बन्ध भारत के हितों से साथ था। ''स्वेज नहर संघर्ष'' में मिस्र के राष्ट्रपति नासिर ने स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया, जिसका अमेरिका सहित सभी यूरोपीय देशों ने विरोध किया। किन्तु नेहरू ने नासिर की मित्रता के चलते ही स्वेज नहर के राष्ट्रीय करण का समर्थन किया। उस समय बाबा साहेब ने नेहरू की इस नीति का विरोध किया और कहा कि आज भारत के मिस्र के साथ अच्छे सम्बंध हैं किन्तु मिस्र एक इस्लामिक देश है जो पाकिस्तान और अन्य मुस्लिम देशों के दबाब में आकर भविष्य में भारत के लिए स्वेज नहर का मार्ग बन्द कर सकता है। बाबा साहब का मानना था कि मिस्र का यह कृत्य अन्तरराष्ट्रीय कानून व संधि के भी विरूद्ध है।

कोरिया और वियतनाम में कम्युनिस्टों के आक्रमणों का वह लगातार विरोध करते रहे। कम्युनिस्टों के आक्रमण करने के विरोध के पीछे उनका तर्क था कम्युनिस्टों का आर्थिक तत्व ज्ञान, कम्युनिस्ट, अर्थव्यस्था, तानाशाही और कम्युनिष्ट हिंसक प्रवृत्ति। कम्युनिस्टों को बढ़ना समाज में वर्ग संघर्ष और हिंसा को जन्म देना।

अतः बाबा साहेब का सम्पूर्ण जीवन दर्शन, लेखन, कार्य, आन्दोलन सर्वसमाज और सम्पूर्ण राष्ट्र को समर्पित रहा। राष्ट्र के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा के आलोक में उनकी जीवन दृष्टि को समझना अपेक्षित है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर साहब ने कहा है कि स्वतंत्र, समता और बंधुता के आदर्श मैंने फ्रांस की राज्य क्रान्ति से नहीं लिए। इसी मिट्टी में उपजे तथागत बुद्ध के विचार से लिए हैं क्योंकि जब स्वतंत्रता आई तो समता का लोप होता और स्वतंत्रता पाने के लिए समता को संकुचित करना पड़ता है। अतः समता और स्वतंत्रता एक साथ लाना है तो बंधुभाव की आवश्यकता होती है और बंधुभाव ही धर्म है। बंधुभाव का आधार क्या है? वो यह है कि हमारे पूर्वज समान हैं। हमारी सबकी सांस्कृतिक विरासत सांझी है और हमारी मातृभूमि एक है।

– 'भविष्य का भारत'

विद्या भारती ई–पाठशाला : एक प्रभावी शिक्षण माध्यम

नवाचार

श्री राकेश शर्मा
निदेशक
विद्या भारती ई-पाठशाला

'ई-पाठशाला' सुनते ही दिमाग में हलचल पैदा होती है क्योंकि इसमें डिजिटल व पारम्परिक दो शब्दों का मेल है।

यह अवधारणा चार वर्ष पूर्व मेरे मस्तिष्क में इस विचार से आया कि आधुनिक युग में अध्ययन कार्य डिजिटल होना ही चाहिए । इसके लिए योजना बनी। डिजिटल प्लेटफार्म के विषय में प्राथमिक जानकारी के अभाव में आचार्य-बंधु बहिनों के लिए ई-पाठशाला एक कठिन कार्य लग रहा था परन्तु नवाचारी प्रयोगात्मक कार्य व प्रशिक्षण से तथा आचार्य बंधु-बहिनों के निरंतर कठोर परिश्रम से इसे सहज बनाया गया। यह भी ध्यान देने योग्य है कि यह कोविड काल की देन नहीं है, बल्कि आज के इस कठिन समय में यह अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है। चार वर्षो से कठिन परिश्रम से उत्तरोतर सफलता के शिखर पर पहुँचा है। अब तो समय की आवश्यकतानुसार सभी ने इसका अवलंबन लेकर शिक्षण कार्य को सरल बनाया है। विद्या भारती ने काल की गति को पूर्व में ही पहचान कर इसे पर्याप्त समय पूर्व सहज ढंग से प्रारम्भ कर दिया था। निश्चित ही आज यह शिक्षण क्षेत्र के लिए वरदान सिद्ध हुआ है।

आने वाला समय तकनीकी शिक्षा का है। इस विचार को ध्यान में रखकर मध्यभारत क्षेत्र के मध्यभारत प्रांत ने आचार्यों का 10 दिवसीय कम्प्यूटर शिक्षा का प्रशिक्षण देने का विचार प्रांतीय टोली ने किया और केवल तीन दिन के कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यशाला करने की अनुमति दी। तीन दिनों में इस कार्य में केवल प्रारम्भिक शिक्षण ही हो पाया परन्तु आगे भी और अधिक जानकारी आचार्यों को मिले इस हेतु वर्चुअल माध्यम से ऑनलाईन कक्षाओं के माध्यम से प्रशिक्षण का क्रम सहज ही चलता रहा। पहले से ही कम्प्यूटर की बारीकियाँ व समझ रखने वाले ऐसे केवल 30 कम्प्यूटर आचार्यों का 25 दिवसीय वर्चुअल प्रशिक्षण हेतु चयन किया गया व विद्या भारती ई-पाठशाला के माध्यम से इन्हें प्रशिक्षित किया गया। ये सभी आचार्य अपने-अपने विद्यालयों में जाकर अपने अन्य आचार्यो को ऑनलाईन वर्चुअल कक्षा लेने में सहायक प्रशिक्षक बने। यही से उपर्युक्त पाठशाला की नींव पड़ी।

इस कार्यशाला के पश्चात् पूरे प्रांत से इस प्रकार के प्रशिक्षण की माँग आने लगी साथ ही वर्चुअल इंग्लिश स्पोकेन कक्षा हेतु प्रयास करने की माँग बढ़ी। इस बात को ध्यान में रखकर 25 दिवसीय इंग्लिश स्पोकेन कक्षाएँ चलाने का विचार किया गया जिसमें इंग्लिश आचार्यों का सहयोग प्राप्त हुआ। निरंतर कार्य आगे बढ़ता रहा और आचार्यों की संख्या 250 के आसपास पहुँच गई। लगातार कम्प्यूटर कक्षाओं के आयोजन से विद्या भारती ई-पाठशाला अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ने लगा। इसमें विज्ञान, गणित, शिक्षण कौशल, हिन्दी आदि अन्य विषयों को भी जोड़ा गया और इनके लिए भी वर्चुअल ऑनलाईन कक्षाओं का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। वर्तमान में विद्या भारती ई-पाठशाला कई प्लेटफार्मों पर उपलब्ध है जिससे हजारों शिक्षक-शिक्षिकाएँ अपने पाठ्य शिक्षण कौशल को बढ़ा रहे हैं।

विद्या भारती ई-पाठशाला हेतु प्रारम्भ में 34 सक्रिय आचार्यों की टोली बनी। बाद में जैसे-जैसे आवश्यकता हुई धीरे-धीरे अन्य कार्यकर्ताओं को भी प्रशिक्षित किया गया। देशभर में विद्या भारती के इस कार्य में सहयोगी आचार्यों की संख्या जुड़ने लगी। किसी ने सामग्री बनाने का कार्य तो किसी ने सोशल मीडिया के किसी एक प्लेटफार्म पर सामग्री को पहुँचाने का कार्य अपने हाथ में लिया, किसी ने वीडियो बनाने का कार्य किया। इस प्रकार छोटे-छोटे पर महत्त्वपूर्ण योगदान देकर इस कार्य को गति व विस्तार में देने का कार्य किया। वर्तमान में 75 से भी अधिक सक्रिय आचार्यों की टोली विद्या भारती ई-पाठशाला के कार्य को आगे बढ़ा रही है जिनके माध्यम से सघन प्रशिक्षण का कार्य

संपर्क
मो. 9424426409

''तकनीक से न केवल पढ़ने का स्वरूप बदला है बल्कि शिक्षण संस्थाओं के कार्य करने का ढंग भी बदल गया है। विद्या भारती की पाठशाला अर्थात् आचार्यों हेतु वर्चुअल कक्षा। वर्चुअल क्लासरूम का अर्थ आभासी कक्षा। जहाँ परम्परागत कक्षा में छात्र और शिक्षक एक ही कक्ष में आमने-सामने रहकर एक दूसरे से संवाद करते हैं। शिक्षक व छात्र आपस में प्रश्नोत्तर करते हैं, विषय की अवधारणा को स्पष्ट करते हैं, किसी भी प्रकार की जिज्ञासा का समाधान होता है।''

प्रगति पर है। तकनीकी शिक्षा समय की माँग है व विद्या भारती के लिए यह नितांत आवश्यक है क्योंकि आत्मनिर्भर भारत बनाने हेतु स्वरोजगार परक तकनीकी शिक्षण देकर ही विद्यार्थियों को निपुण बनाया जा सकता है। इस समय इस माध्यम से 8000 से भी अधिक आचार्यों का कम्प्यूटर दक्षता हेतु प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ है।

तकनीक से न केवल पढ़ने का स्वरूप बदला है बल्कि शिक्षण संस्थाओं के कार्य करने का ढंग भी बदल गया है। विद्या भारती की पाठशाला अर्थात् आचार्यों हेतु वर्चुअल कक्षा। वर्चुअल क्लासरूम का अर्थ आभासी कक्षा। जहाँ परम्परागत कक्षा में छात्र और शिक्षक एक ही कक्ष में आमने-सामने रहकर एक दूसरे से संवाद करते हैं। शिक्षक व छात्र आपस में प्रश्नोत्तर करते हैं, विषय की अवधारणा को स्पष्ट करते हैं, किसी भी प्रकार की जिज्ञासा का समाधान होता है। वहीं आभासी कक्षा में सारे कार्य वर्चुअल ऑनलाइन होता है। इसमें गुणवत्ता को पावर-प्वाईंट के माध्यम समझाया जाता है। ई लर्निंग से हर प्रकार के प्रश्नो के उत्तर अब घर बैठे मिल जाते हैं। इससे कोरोना काल में अध्यापन में सुविधा जनक सहजता आ गई है।

विद्या भारती के आचार्यों को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने हेतु कोविड 19 के दौरान कन्टेंट प्रशिक्षण संबंधी 25 दिवसीय पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की ई-पाठशाला के द्वारा दिया गया।

यह कार्य निरंतर चार वर्षों से चल रहा है। विद्या भारती के अपने योग्य आचार्यों व विषय विशेषज्ञ शिक्षाविदों के सहयोग से उत्तम शिक्षण सामग्री का संचयन व प्रकाशन समस्त आचार्यों व विद्यार्थियों हेतु किया जाता है।

विद्या भारती की अखिल भारतीय साधारण सभा बैठक में आईसीटी शिक्षा की वेबसाइट ''विद्या भारती ई-पाठशाला'' का लोकार्पण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मान्यवर श्री सुरेश सोनी की उपस्थिति में विद्या भारती के तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री डी. रामकृष्ण द्वारा सम्पन्न हुआ। ई-पाठशाला के संयोजक श्री राकेश शर्मा ने इस कार्य से संबंधित विषय को सभा के सामने रखा व इस कार्य से आचार्यों के शिक्षण तकनीकी में आए बदलावों का परिणाम भी प्रस्तुत किया। माननीय श्री सुरेश सोनी जी ने विद्या भारती की ई-पाठशाला की प्रशंसा करते हुए समस्त प्रतिनिधियों के सामने इस प्रकार के नवाचारों को बढ़ावा देने का आग्रह किया तथा तकनीक के माध्यम से शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु किए गए प्रयास को सभी विद्यालयों तक पहुँचाने का निर्देश भी दिया।

विद्या भारती ई पाठशाला का प्रयास है कि शिक्षकों एवं विद्यार्थियों तक वर्चुअल क्लास के माध्यम से शैक्षिक सामग्री का सम्प्रेषण करके अधिगम के वातावरण को विस्तृत फलक प्रदान करना है।

विद्या भारती ई-पाठशाला का संचालन सोशल मीडिया के विविध प्लेटफार्म पर किया जाता है। Google Class Room, Facebook Page, Telegram, Whatsapp, Website आदि इन माध्यमों से विद्या भारती ई-पाठशाला के द्वारा सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। जिसमें शैक्षिक सामग्री के रूप में PPT & PDF तथा वीडियो क्लीप होते हैं। इसके अतिरिक्त फेसबुक एवं टेलिग्राम ऐप पर भी सामग्री देखी जा सकती है। वाट्सअप्प ग्रुप में अधिकांश शिक्षक आपस में वार्तालाप कर लेते हैं। इससे प्रांतानुसार सामग्री का आपस में आदान प्रदान हो जाता है। इस प्रकार का कार्य प्रतिदिन होता है। विद्या भारती ई-पाठशाला में विद्यार्थियों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

पाठशाला के प्रभावी शिक्षण से विद्यालयों में सक्रियता से शैक्षिक गतिविधियों के संचालन में सहायता मिलती है। इससे शिक्षण कौशल, कौशल से युक्त शिक्षण का प्रयोग प्रचलन में है। आचार्य ई-पाठशाला से विषय को समझ कर विद्यालय में छात्रों को पढ़ा रहे हैं। इससे ई-पाठशाला से जुड़े शिक्षकों के लिए प्रतियोगिता होती है, भाग लेने वाले आचार्यों को सम्मान मिलता है। इससे आचार्य स्वाध्याय हेतु प्रोत्साहित हुए हैं। उनमें उत्तरोतर ज्ञान की वृद्धि हो रही है।

वर्तमान में ई-पाठशाला का विस्तार अलग-अलग रूप में प्रत्येक क्षेत्र में हो रहा है। जहाँ देश के अनेक प्रांतों में आचार्य विद्या भारती ई-पाठशाला से जुड़े हैं वही राजस्थान के जयपुर एवं जोधपुर प्रांत में

''वर्तमान में ई-पाठशाला का विस्तार अलग-अलग रूप में प्रत्येक क्षेत्र में हो रहा है। जहाँ देश के अनेक प्रांतों में आचार्य विद्या भारती ई-पाठशाला से जुड़े हैं वही राजस्थान के जयपुर एवं जोधपुर प्रांत में ई-पाठशाला के लिए तकनीकी से जुड़े लोगों का प्रशिक्षण हुआ है। महाराष्ट्र में विद्या भारती पाठशाला के माध्यम से यूट्यूब की सहायता से चैनल प्रारम्भ हुआ है।''

ई-पाठशाला के लिए तकनीकी से जुड़े लोगों का प्रशिक्षण हुआ है। महाराष्ट्र में विद्या भारती पाठशाला के माध्यम से यूट्यूब की सहायता से चैनल प्रारम्भ हुआ है। जिसमें 750 से अधिक मराठी भाषा में शैक्षिक सामग्री का वीडीयो अपलोड किया गया है। उड़ीसा में भी असंख्य वीडियो उड़िया भाषा में बनाकर अपलोड हुआ है। देश भर में 170 से अधिक चैनल यूट्यूब पर विद्या भारती ई-पाठशाला के कार्य विस्तार में सहायक बन रहे हैं।

विद्या भारती ई-पाठशाला के माध्यम से ऑनलाइन कक्षाएँ प्रारम्भ हुई हैं इनमें से ई-कन्टेंट द्वारा संचालित हुईं हैं। साथ ही इंग्लिश स्पोकेन कक्षा की ऑनलाइन व्यवस्था अपने उद्देश्य में सफल रही है। देशभर के आचार्यों को जो ऑनलाइन प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं उन्हें ई-प्रमाण पत्र वितरण का कार्य भी सम्पन्न हो रहा है। देश से जो अनुभव आधारित प्रेरक फीडबैक प्राप्त हो रहा है उससे दिनोंदिन ई-पाठशाला की सफलता सिद्ध हुई है और ख्याति में वृद्धि हुई है ।

अखिल भारतीय स्तर पर इस कार्य के लिए मार्गदर्शन हेतु टोली की रचना बनी है। इसमें अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री गोविन्दचन्द महंत जी व अखिल भारतीय महामंत्री श्री श्रीराम आरावकर तथा अखिल भारतीय मंत्री श्री अवनीश जी भटनागर का मार्गदर्शन व सहयोग मिल रहा है।

मध्य क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी इस कार्य का विस्तार हुआ है। राजस्थान में यह कार्य तेजी से चल रहा है। राजस्थान में ऑन लाइन शिक्षण का कार्य 16 जुलाई 2020 से गूगल क्लास रूम तथा गूगलमीट पर विधिवत् प्रारम्भ हुआ। इसके बाद जयपुर और जोधपुर प्रांत ने भी अपनी छोटी स्टूडियो को विकसित किया है। जयपुर प्रांत के मिनी स्टूडियो से ऑनलाइन प्रशिक्षण व शिक्षण के कार्य विद्या भारती के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री शिव प्रसाद जी तथा विद्या भारती के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री भरतराम कुम्हार तथा क्षेत्रीय मंत्री श्री सुरेश जी बाधवा, प्रांतीय निरीक्षक श्री राममनोहर शर्मा एवं उनके सहयोगी टोली के द्वारा 17 अगस्त 2020 को शुभारम्भ किया गया। तब से वर्तमान तक विद्या भारती जयपुर प्रांत व क्षेत्र की सभी बैठकें व कार्यशालाएँ ऑनलाईन हो रही हैं। जो एक नई तकनीकी क्रान्ति है।

महाराष्ट्र प्रांत में भी ई-पाठशाला हेतु स्टूडियो का निर्माण हुआ है। इस स्टूडियो के माध्यम से महाराष्ट्र शासकीय प्रांत के चारों सांगठनिक प्रांतों में शिक्षकों व छात्रों को ऑनलाईन शिक्षण दिया जा रहा है।

ई-पाठशाला पूर्व क्षेत्र जिसमें खासकर ओडीसा प्रांत ने भी अपना स्टूडियो विकसित किया है। इस स्टूडियो के माध्यम से ई-पाठशाला का संचालन कर शिक्षकों व छात्रों को ऑनलाइन क्लासेज द्वारा निरंतर शिक्षण सामग्री प्रदान की जा रही है व मार्गदर्शन कर समस्याओं का निराकरण किया जा रहा है।

विद्या भारती ई-पाठशाला सम्बंधित लिंक व प्लेटफार्म

http://www.epathshalavb.com

विद्याभारती E पाठशाला की वेबसाइट-छात्रों हेतु

http://www.epathshalavb.in

बाल संस्कार वेबसाइट

http://baalsanskar.co.in

whatapp विद्याभारती E पाठशाला 15 को join करने हेतु लिंक पर क्लिक कीजिए...

https://chat.whatsapp.com/FUyFon2yDCNDt7GU3f2F6B

इस whatsaap ग्रुप पर आपको E पाठशाला की सामग्री एवम सूचनाएं प्राप्त होती रहेंगी।

Telegram एप्प पर भी विद्याभारती E पाठशाला का ग्रुप है

https://t.me/vidhyabhartiepathsala

विद्याभारती E पाठशाला facebook page like तथा follow करे

https://www.facebook.com/epathshalavb/

विद्याभारती E पाठशाला के यूट्यूब पर चैनल

1. https://www.youtube.com/channel/UCd5vpPzbKz_8Mgt1dp7iiZg
2. https://www.youtube.com/channel/UCoÛZmP6aE_PShehdHl2FwDg
3. https://www.youtube.com/user/rakaind

आइए सहयोगी बने एवं सहभागी बनें । आप और हम मिलकर कठिन काल में शिक्षा सम्बंधी चुनौतियों का सामना अपने सुझावों व प्रेरणादायक शिक्षण सामग्री के वीडियो साझा कर तथा अपने अनमोल विचारों से अवगत कराकर इस कार्य में यशस्वी बने। कृपया प्राप्त सामग्री को विद्यालय के सभी अपने सहयोगी आचार्य बंधु-भगिनियों से अवश्य साझा करें।

विद्या प्रबोधन के माध्यम से पूर्व छात्रों द्वारा कक्षा 11 वीं, 12 वीं और 12 वीं पास विद्यार्थियों के लिए कुछ शुल्क लेकर 'जेईई' और 'नीट' की तैयारी के लिए प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कराई जाती है। साथ ही कक्षा 6 से 10 वीं तक के विद्यार्थियों के लिए प्री फाउण्डेशन कोर्स इसमें गणित, विज्ञान, इंग्लिश और मानसिक क्षमता जाँच हेतु तार्किक विधि से तैयारी कराई जाती है। कैरियर काउंस. लिंग के माध्यम से भविष्य की सम्भावनाओं के बारे में परामर्श दिया जाता है। इसके लिए सम्पर्क हेतु www. vidyaprabodhan.com

संत साहित्य में जीवन मूल्य

चिरंतन

डॉ. ऋतु
साहित्यकार व लेखक

संपर्क
मो. 7982126763

भक्ति साहित्य भारतीय जनमानस का कंठहार है। कोई भी साहित्य प्रसंगिक तभी होता है जब लोग निरंतर उसे अपने जीवनानुभवों से जुड़ा पायें, प्रेरणा प्राप्त करें और उद्धृत करते रहें।

वस्तुतः भक्ति आन्दोलन ने 'हिन्दू धर्म को तपाया, पिघलाया और हिमालय के हिमनद को उष्ण गंगा की धारा में परिवर्तित किया जिससे साधारण आदमी की पहुँच उस तक हो सके।' कई बार कर्मकांड और आडम्बर धर्म को जटिल बना देते हैं जिसके कारण साधारण मनुष्य उसके मूल तक पहुँच ही नहीं पाता है। बाह्याचर व कर्मकांड का विधान, देश और काल की राजनीतिक-सामाजिक एवं अन्य परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता है।

ऐसा माना जाता है कि इनमें से कुछ कवि सामाजिक श्रेणी के तथाकथित निचले पायदान से सम्बन्धित थे। उन्होंने समाज व्यवस्था में भेदभाव के दंश को भोगा था। उनका अनुभव अर्थात् आँखिन देखी पर बल अधिक है। कबीर प्रश्न करते हैं 'एक ज्योति सोई सब उपजै।'

संतों ने अपनी 'बानियों' से भक्ति का राजमार्ग सर्वजन सुलभ कराया, निश्छल हृदय के साथ प्रेम ही इस पथ का पाथेय था। इन्होंने जीवन को उसके बृहद् परिप्रेक्ष्य में देखा है। संत कवियों ने मनुष्य के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के परिष्कार पर सर्वाधिक बल दिया है। आचरण की शुद्धता पर यहाँ सर्वाधिक बल दिया गया है। धर्म को आडम्बर और बाहरी दिखावे की जगह उसका आंतरिक स्वरूप ही इन कवियों का अधिक काम्य है। प्रेम एवं समानता इस काव्य के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मूल्य हैं। यह काव्य जीवन के अनेक प्रश्नों के उत्तर सहज रूप से हमारे सम्मुख उपस्थित करता है।

प्रेम के लौकिक और पारलौकिक दोनों रूपों को यहाँ रूपायित किया गया है। मनुष्य और प्रकृति को छोड़कर ईश्वर प्राप्ति का मार्ग संभव नहीं है। यह प्रेम समूचे जीवन को परिवर्तित कर देता है। कबीर की एक साखी में इसे सुन्दर तरीके से समझाया गया है -

' प्यंजर प्रेम प्रकासिया अंतरि भया उजास।
मुख कसतूरी महमही वाणी फूटी वास ।। '

प्रेम का भाव कितना अद्‌भुत है कि उसके प्रभाव से हृदय तो निर्मल हुआ ही वाणी भी सुवासित हो उठी।

परहित अर्थात् उपकार मनुष्यता का विशिष्ट लक्षण है, यह सभी धर्मों का मूल रहा है। इसे धर्म का अनिवार्य तत्त्व भी स्वीकारा गया है। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में ''परहित सरिस धर्म नहीं भाई''। कबीर कहते हैं कलिकाल में कर्मफल भोगने के लिए जन्म-जन्मातर की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती, तत्काल फल मिल जाता है - 'कलिकाल फल तत्काल है, बुरा करौ जिन कोय।'

सारा बल यहाँ, 'बुरा करो जिन कोय पर है' बुरा करने का यहाँ निषेध है।

ईश्वर के प्रति विश्वास को अनेक संत कवियों ने विविध रूप में वर्णित किया है-'सब घट मेरा साईया,'

भक्त की एकनिष्ठता, लगन और साधना का बखान इस काव्य की एक महती विशेषता है। कबीर इसे एक रूपक के द्वारा और स्पष्ट करते हैं - 'हंसा पाये मानसरोवर।'

कबीर ने अहंकार को ईश्वरप्राप्ति में सबसे बड़ा व्यवधान माना है वे कहते हैं -'यह तो घर है प्रेम का,' जहाँ 'सीस उतारे भूई धरे' के बाद ही प्रवेश मिलता है।

समर्पण और अहं का विगलन ही तो प्रभु प्राप्ति के मार्ग की अनिवार्यता है-

'जब लगि नदीन समुद्र समाने, तब लगि बढ़े अहंकारा।'

हृदय की पवित्रता इस साधना की पहली सीढ़ी है। मन को सर्वाधिक चंचल माना गया है

यह मन ही विषय-वासनाओं का कारण है, अतः संत कवियों ने 'मन के मते चलने' का निषेध किया है। मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर है। दादू इसे समझाते हुए कहते हैं कि देह की चमक का कोई मूल्य नहीं, मूल्य आंतरिक पवित्रता का है।

'जो मन कोयला तौ तन कारा, कोटि करै नहिं जाई विकारा।'

निंदा रस मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। हम सभी को परनिंदा अत्यंत प्रियकर होती है। भक्त कवियों की दृष्टि में यह भी अत्यंत यह त्याज्य है, उन्होंने आत्मनिरीक्षण पर बल दिया है। कबीर इसे रेखांकित करते हैं - 'निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटि छवाय।'

दादू इस प्रसंग को नया आयाम देते हुए विस्तार देते हैं -

'नयन्दक दूरी ना कीजिए, दीजे आदर भाव।'

दरअसल अपने दोषों को जानने और उन्हें दूर करने में निंदक हमारे सहायक है अतः हमें उन्हें शत्रु नहीं अपितु मित्र मानें। संत कवियों की दृष्टि में संचय त्याज्य है क्योंकि यह लोभ की जड़ है। दान की महिमा से समूचा पौराणिक साहित्य अटा पड़ा है। दधीचि का अस्थिदान, कर्ण का कवच-कुंडल दान। संत दान को अत्यंत श्रेयस्कर बताते हैं।

गुरुनानक देव के शब्दों में -

'नानक मदरी बाहरे, राचहि दानिन नाई।'

मलूकदास इस को और विस्तार देते हैं -

'दादू सत गुरु सहज में किया बहुत उपकार,
निरधन धनवंत करि लीआ गुरु मिलिया दातार।'

सत्संगति को इन कवियों ने महत्त्वपूर्ण माना है। लोक प्रसिद्ध उक्ति है -

'संगत से गुण होत है, संगत से गुण जाए'

को याद कर करें। उनके अनुसार सत्संगति से दुर्गुणों को परिहार और सद्गुणों का विकास होता है।

कबीर के अनुसार संगत का मूल्य संकट के समय पता चलता है।

'संत ना छाड़ें संतई, जे कोटिक मिलें असंत।
चंदन भुवंग बेढ़िया, तऊ ना सीतलता तजंत ।।'

किन्तु सज्जनता का स्वभाव संत विषम परिस्थितियों में भी नहीं तजते, यही तो कसौटी है, उनका वैशिष्ट्य है। संत कबीर इसे चंदन और भुजंग के प्रतीक द्वारा और अधिक स्पष्ट करते है कि भुजंग के विष का प्रभाव चन्दन की शीतलता पर नहीं होता। रज्जब बताते हैं कि

'चिदानंद कि चितवन, चौरासी में नाहि।
जन रज्जब सो पाइए, साधु संगति माहि।।'

सभी जीवों में उसी ईश्वर के दर्शन करना और यह मानना कि 'खड्ग' में 'खंब' में वही शक्ति है। सभी कवि जीव मात्र के प्रति दया का भाव रखते हैं। संत अहिंसा के तीनों स्तरों मनसा, वाचा, कर्मणा को त्याज्य बताते हैं। वे जीवमात्र में एक ही आत्मा का वास स्वीकारते हैं और यही संत काव्य का मूल स्वर है।

केवल कविता करना इन कवियों का उद्देश्य नहीं था, सामाजिक परिष्कार भी उनका महती उद्देश्य था। दर्शन शास्त्र के गूढ़ रहस्यों को इन्होंने सरल शब्दों में जन सामान्य के सम्मुख प्रस्तुत किया। समय उनमें एक है। भक्ति की शब्दावली में वह 'काल' है जो मनुष्य को यह सीमित मात्रा में मिला है। अतः इसका सदुपयोग आवश्यक है।

संत साहित्य में जीवन–व्यवहार

संत तुकाराम ने गृहस्थ के लिए बताया कि ईमानदारी से धन कमाएँ, उदासीन वृत्ति से व्यय करें, परोपकार में रत रहिए। परनिंदा से विरत रहिए, परस्त्री को माता और बहन समझिए। सारे प्राणियों से सद्भाव रखिए, गो आदि का पालन कीजिए। प्यासों के लिए वन आदि में जल की व्यवस्था कीजिए, शांत भाव धारण करें। किसी के अहित की कामना न करें, बड़ों का मान–सम्मान करें यही गृहस्थ का कर्तव्य है।

संत तुकाराम के अनुसार सत्य का पालन करने वाला, प्राणी मात्र को ईश्वर का अंश मानकर उनपर अनुग्रह करने वाला तथा दूसरे के दुख को अपना दुख समझने वाला व्यक्ति संत है। ऐसे व्यक्तियों का हृदय अंदर और बाहर दोनों ओर से कोमल होता है। वह आगे बढ़कर निराश्रित को गले लगाता है और अपने सेवकों से पुत्रवत् व्यवहार करता है। ऐसा सज्जन पुरुष ईश्वर का मूर्तिमान् रूप होता है।

संत दादू दयाल के अनुसार जीवन की सफलता क्या है ? हरि भजन और परोकार । वे कहते हैं कि मरण ऐसी जगह हो, जहाँ उनकी मृत देह को पशु–पक्षी खाकर अपनी भूख मिटा सकें वह व्यर्थ न चली जाए। मन से अहंकार को मिटा दो, हरि का भजन करो, शरीर और मन से सारे विषय विकारों को दूर करो। जितने भी जीव है सबकें प्रति निर्वैर हो, सबके प्रति मन में प्रेम और दया हो।

मलूकदास राम सुमिरन पर बल देते हैं। सारे भ्रमों से छुटकारा वहीं दिला सकता है। कर्मफल की आशा किए बिना कर्म करो। संतो की सेवा भी जरूरी है। जीवन अल्प अवधि का है, समय निकल गया तो पछताने के सिवा कुछ नहीं हाथ लगेगा। जो हृदय में दया और धर्म को रखे, अमृत वाणी बोले, जिसके नयन नीचे रहे अर्थात् जो विनीत हो, वही ऊँचा है।

पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी की स्थिति एवं संभावनाएँ

ईशान्य

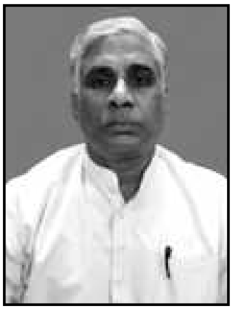

श्री ब्रह्माजी राव
अखिल भारती मंत्री,
व क्षेत्रीय संगठन, पूर्वोत्तर क्षेत्र
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

संपर्क
मो. 9435110943

संयुक्त राष्ट्रसंघ में कुल 252 देश हैं। इन देशों में प्रायः 700 करोड़ लोग रहते हैं। दुनिया में अत्यधिक संख्या में लोग मंडारिन (चीनी) भाषा में बात करते हैं। दूसरे स्थान पर अंग्रेजी, तीसरे स्थान पर स्पेनिश तथा चौथे स्थान पर हिन्दी है। वैसे अपने देश में 171 भाषा एवं 544 बोलियाँ हैं। इनमें सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। कई राज्यों की यह मातृभाषा भी है। देश की राजभाषा हिन्दी है और व्यावहारिक रूप से देश की राष्ट्रभाषा भी है। प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' विश्वभर में मनाया जाता है। अब हिन्दी ने भारतभूमि की सीमा से आगे विदेशों तक अपना विस्तार सफलतापूर्वक कर लिया है। अपनी ग्रहणशीलता गुण के कारण यह भाषा विदेशीभूमि में भी निरंतर विकसित हो रही है। किसी भी भाषा के दो रूप होते हैं - मौखिक और लिखित। दो प्रकार से भाषा का उपयोग किया जा सकता है 1. साहित्यिक भाषा और 2. राजकाज की भाषा। इस दृष्टि से हिन्दी व्यावहारिक और समृद्ध भाषा है।

पूर्वोत्तर भारत में कामकाज की भाषाः अंग्रेजों के शासनकाल में पूर्वोत्तर में मुख्यतः वर्तमान के असम को केन्द्र मानकर सरकारी काम राजधानी शिलांग से चलता था। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धार्मिक एवं राजनैतिक कारणों से छोटे-छोटे राज्य बने। पहले असम, अरुणाचल, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, नागालैण्ड, बाद में सिक्किम इससे जुड़ा है। इन्हें सात बहन और एक भाई ऐसा कहा जाता है। इन आठ राज्यों के विकास हेतु भारत सरकार ने वर्ष 1971 में पूर्वोत्तर परिषद् (नॉर्थ ईस्टर्न काउंसिल -NEC) बनाई। उत्तर पूर्वीय क्षेत्र विकास मंत्रालय (DONER) का वर्ष 2001 में गठन हुआ।

यह क्षेत्र प्राकृतिक वैविध्य की दृष्टि से एक विलक्षण क्षेत्र है। प्राकृतिक सुषमा, जैव विविधता, लोक-साहित्य एवं लोक-संस्कृति में अनुपमेय है। पहाड़ों, पर्वतों, नदियों, झरनों, वनों से व्याप्त यह एक रमणीय एवं दुर्गम क्षेत्र है। अपनी अनूठी संस्कृति, हस्तशिल्प और प्राकृतिक सुंदरता के लिये जाना जाता है। यहाँ के मूलनिवासी असमीया साथ ही विभिन्न जनजाति के लोग सहज-सरल स्वभाव के शांतिप्रिय एवं अतिथि परायण होते हैं।

पूर्वोत्तर एक अहिन्दी भाषी क्षेत्र है। यहाँ हजारों वर्षों से असमीया भाषा संपर्क भाषा रही है। यहाँ असमीया के साथ ही बंगला, नेपाली, मणिपुरी, अंग्रेजी, खासी, गारो, निशी, आदि, मोनपा, वांग्चु, नागामीज, मिजो, कॉकबराक, लेप्चा, भुटिया और अनेक अन्य। इन आठ राज्यों में प्रायः 200 विभिन्न भाषायें एवं बोलियाँ प्रचलित हैं। अधिकांश भाषा एवं बोलियाँ तिब्बत-बर्मी परिवार की होने के कारण अलग से पहचानी जाती हैं। विविधताओं के कारण इस अंचल को 'भाषाओं की प्रयोगशाला' कहा जाता है। यातायात के साधनों की कमी पूर्वोत्तर की एक बड़ी समस्या है। सड़क परिवहन ही यहाँ प्रधान है। अधिकांशतः कच्ची सड़कें (82,000 कि.मी. में से 56,000 कि.मी.) हैं। रेल यातायात बहुत कम है। प्राचीन काल से लोगों का दूर तक आना-जाना कम होने के कारण भी बड़ी संख्या में बोलियों का विकास हुआ। पूर्वोत्तर एक ऐसा क्षेत्र है जो कभी मुगलों का गुलाम न बना। औरंगजेब के समय 17 बार असम पर आक्रमण करने के बाद भी वे विजय प्राप्त न कर सके। लाचित बड़फुकन की वीरता के आगे मुगल सेना में 30,000 पैदल सैनिक, 15,000 तीरंदाज, 18,000 तुर्की घुड़सवार, 5,000 बंदूकची और 1,000 से अधिक तोपों के अलावा नौकाओं का विशाल बेड़ा होने के बाद भी विजय प्राप्त न कर सके। यह क्षेत्र भारत के अन्य प्रदेशों से अलग एवं प्राकृतिक बनावट के कारण सुदूर होना ही इसके हिन्दी भाषा के प्रभाव से दूर रहने का एक प्रमुख कारण है।

अतीत एवं वर्तमान : पूर्वोत्तर भारत में अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं। जिनकी

अपनी-अपनी भाषाएँ तथा बोलियाँ हैं। इनमें बोड़ो, कछारी, जयंतिया, कोच, त्रिपुरी, गारो, राभा, देउरी, दिमासा, रियांग, लालुंग, नागा, मिजो, त्रिपुरी, जामातिया, खासी, कार्बी, मिसिंग, निशी, आदी, आपातानी, इत्यादि प्रमुख हैं। पूर्वोत्तर की भाषाओं में से केवल असमिया, बोड़ो और मणिपुरी को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान मिला है। सभी राज्यों में हिन्दी भाषा का प्रयोग अधिकांश प्रवासी हिन्दी भाषियों द्वारा किया जाता है। व्यवसायिक कारोबारी, रिक्शा-चालक, नाई, कूलियों, रेलकर्मचारियों, मजदूरों तथा सेना के मध्य हिन्दी का काम चलाऊ प्रयोग होता है। असम, अरूणाचल, सिक्किम को छोड़कर अन्य राज्यों-नागालैंड, मिजोरम, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा में सरकारी कामकाज अंग्रेजी भाषा में होते हैं।

पूर्वोत्तर में हिन्दी का औपचारिक रूप से प्रवेश वर्ष 1934 में हुआ। जब महात्मा गांधी 'अखिल भारतीय हरिजन सभा' की स्थापना हेतु असम आये। उस समय गड़मूड़ (माजुली) के सत्राधिकार (वैष्णव धर्मगुरू) एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री श्री पीताम्बर देव गोस्वामी के आग्रह पर गाँधी जी ने 'बाबा राघव दास जी' को हिन्दी प्रचारक के रूप में असम भेजा।

वर्ष 1938 में 'असम हिन्दी प्रचार समिति' की स्थापना गुवाहाटी में हुई। यह समिति आगे चलकर 'असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' बनी। आम लोगों में हिन्दी भाषा तथा साहित्य के प्रचार-प्रसार करने हेतु- प्रबोध, विशारद, प्रवीण, आदि परीक्षाओं का आयोजन इस समिति के द्वारा होता आ रहा है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, गुवाहाटी के द्वारा हिन्दी शिक्षकों और हिन्दी प्रचारकों के लिये प्रशिक्षण दिया जाता है।

पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी प्रचार-प्रसार में लगी संस्थाएँ हैं -

- असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी
- केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, गुवाहाटी
- असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, जोरहाट
- राजकीय हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गुवाहाटी
- राजकीय हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, आइजोल, मिजोरम सरकार
- राजकीय हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, दीमापुर, नागालैंड सरकार
- राजकीय हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, उत्तर गुवाहाटी, असम सरकार
- राजकीय हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, इम्फाल महाविद्यालय, मणिपुर विश्वविद्यालय
- राज्य व केन्द्र सरकार के कार्यालय
- सिनेमा, मीडिया व विभिन्न टेलिविजन चैनल
- विद्या भारती के विद्यालय

''वर्ष 1938 में 'असम हिन्दी प्रचार समिति' की स्थापना गुवाहाटी में हुई। यह समिति आगे चलकर 'असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' बनी। आम लोगों में हिन्दी भाषा तथा साहित्य के प्रचार-प्रसार करने हेतु- प्रबोध, विशारद, प्रवीण, आदि परीक्षाओं का आयोजन इस समिति के द्वारा होता आ रहा है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, गुवाहाटी के द्वारा हिन्दी शिक्षकों और हिन्दी प्रचारकों के लिये प्रशिक्षण दिया जाता है।''

- हिन्दी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय
- हिन्दी विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय
- हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय
- हिन्दी विभाग, सिलचर विश्वविद्यालय
- हिन्दी विभाग, नॉर्थ ईस्ट हिल्स विश्वविद्यालय, शिलांग
- हिन्दी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरूणाचल प्रदेश
- हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
- हिन्दी विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय, आदि।

असम के गुवाहाटी से प्रकाशित समाचार पत्र दैनिक पूर्वोदय, पूर्वांचल प्रहरी, प्रातः खबर, सेंटिनल, सिचलर से प्रकाशित प्रेरणा भारती, अरुणाचल से प्रकाशित अरूणभूमि आदि की हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका है।

मणिपुर मे हिन्दी : वर्ष 1928 में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के द्वारा हिन्दी का प्रचार-प्रसार प्रारम्भ हुआ, वर्ष 1953- मणिपुर हिन्दी परिषद् की स्थापना हुई। मणिपुर में हिन्दी के प्रचारक के रूप में - 1. लाइयुम ललित माधव शर्मा 2. टी.वी. शास्त्री 3. फु. गोकुलानंद 4. एन. तोम्बीसिंह 5. हेमाम नीलमणि सिंह 6. अरिबम पंडित राधा मोहन शर्मा 7. क. हिमाचार्य शर्मा 8. एस. नीलवीर शर्मा शास्त्री 9. अरिबम घनश्याम शर्मा 10. राधागोविंद थोङाम 11. कालाचाँद शास्त्री 12. नन्दलाल शर्मा 13. नवीन चाँद 14. सिजगुरुमयुम 15. लाइमयुम नारायण शर्मा 16. फिराइलात्पम पंडित जगदीश शर्मा 17. द्विजमणि देव शर्मा ने अपनी सेवायें दी।

नागालैंड में हिन्दी : केन्द्रीय हिन्दी संथान, नागालैंड द्वारा वर्ष 1972 में शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। श्री पी.टी. जामीर दीमापुर के निवासी हैं। इन्होनें अपना सम्पूर्ण जीवन नागालैंड में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये समर्पित कर दिया वें हिन्दी के साधक एवं महात्मा गांधी के परम भक्त हैं। श्री पी.टी.जामीर आतंकवादियों के कोप भाजन होकर भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार का कार्य निष्ठापूर्वक करते रहे हैं। विद्या भारती नागालैंड के कुछ वर्ष अध्यक्ष भी रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर

''केन्द्रीय हिन्दी संथान, नागालैंड द्वारा वर्ष 1972 में शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। श्री पी.टी. जामीर दीमापुर के निवासी हैं। इन्होनें अपना सम्पूर्ण जीवन नागालेंड में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये समर्पित कर दिया वें हिन्दी के साधक एवं महात्मा गांधी के परम भक्त हैं। श्री पी.टी.जामीर आतंकवादियों के कोप भाजन होकर भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार का कार्य निष्ठापूर्वक करते रहे हैं। विद्या भारती नागालैंड के कुछ वर्ष अध्यक्ष भी रहे हैं।''

पर अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं, उन्हें राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मश्री' व 'भाऊराव देवरस राष्ट्रीय सम्मान' भी मिला है।

मिजोरम में हिन्दी : डॉ. इंजीनियरी जेनी हिन्दी के प्रोफेसर हैं तथा 'पूर्वांचलीय हिन्दी साहित्य' पर शोधकार्य किया है। इनका हिन्दी मिजो शब्दकोश प्रकाशित हो चुका है। आर.एल.थनमोया एवं ललथलमुआनो हिन्दी-मिजो परियोजना पर कार्य कर रहे हैं।

मेघालय में हिन्दी : यहाँ की दो प्रमुख भाषाओं - खासी तथा गारो का व्यतिरेकात्मक विश्लेषण का कार्य हो रहा है। वर्ष 1976 में हिन्दी संस्थान के शिलांग केन्द्र की स्थापना हुई।

त्रिपुरा में हिन्दी : त्रिपुरा विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग है। रामेन्द्र कुमार पाल ने हिन्दी प्रचारक के रूप में उल्लेखनीय कार्य किये हैं। डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा तथा खोमतिया देव वर्मा हिन्दी-कॉकबराक परियोजना पर कार्य कर रहे हैं। डॉ मिलन राणी जामातिया, त्रिपुरा विश्वविद्यालय भी विगत कुछ वर्षों से हिन्दी प्रचार-प्रसार का अच्छा काम कर रही हैं।

अरुणाचल प्रदेश में हिन्दी : अरुणाचल प्रदेश एक ऐसा राज्य है, जिसकी सीमाएँ तिब्बत, म्यानमार देशों के साथ प्रायः 1300 कि.मी. व्याप्त है। 30 से अधिक तक जनजातियों के लोग यहाँ वास करते हैं। एक उत्सुकता की बात यह है कि अरुणाचल प्रदेश में लोगों के बीच सम्पर्क भाषा हिन्दी है। यद्यपि सरकारी कामकाज अंग्रेजी में चलता है परंतु नई पीढ़ी के लोगों में हिन्दी ही ज्यादा प्रचलित है। उस समय के 'नेफा' में वर्ष 1956 में प्रशासनिक आदेश (केन्द्र सरकार) के द्वारा हिन्दी को विद्यालयों में पढ़ाना अनिवार्य कर दिया गया। डॉ. जोराम यालम नाबम द्वारा रचित कहानी संग्रह 'साक्षी है पीपल', किसी अरुणाचली साहित्यकार द्वारा हिन्दी में किया गया पहला सृजनात्मक प्रयास है। इस पुस्तक में समाज में व्याप्त अरुणाचली स्त्री के जीवन संघर्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यालम जी का संबंध अरुणाचल की प्रमुख जनजाति 'निशी' से है। ईटानगर के युवाकवि एवं अध्यापक श्री तारो सिंदिक व डॉ. (श्रीमती) जोराम आन्या भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

सिक्किम में हिन्दी : नेपाली भाषा सिक्किम राज्य की सम्पर्क भाषा है, जिसकी लिपी 'देवनागरी' है। इस राज्य में हिन्दी को लेकर किसी भी प्रकार की विरोध भावना नहीं है। 'सुवास दीपक' सिक्किम के बड़े हिन्दी साहित्यकार हैं। इन्होंने हिन्दी में मौलिक रचनाओं के साथ-साथ नेपाली-हिन्दी भाषाओं में अनुवाद कार्य भी किया है। 'बढ़ते बीस कदम' नाटक सिक्किम की प्रथम हिन्दी रचना है। 'खुला दरवाजा और पेड़' सुवास दीपक द्वारा विरचित एक मौलिक कविता संग्रह है। 'चक्रव्यूह तथा अन्य कहानियाँ' सिक्किम की हिन्दी भाषा का पहला मौलिक कहानी संग्रह है।

असम में हिन्दी : असम में बड़ी संख्या में राजस्थान, हरियाणा से आये हुए व्यापारी वर्ग, उत्तर प्रदेश, बिहार से आये हुए कुछ कर्मचारी एवं लाखों की संख्या में आये मजदूर वास करते हैं। इनमें से प्रायः सभी लोगों की हिन्दी मातृभाषा या रोजमर्रा जीवन में उपयोग करने वाली भाषा है। उन लोगों ने अपनी बुद्धि, मेहनत के बल पर असम के सामाजिक, आर्थिक क्षेत्रों में शक्तिशाली स्थान बनाया हुआ है। अपनी जीविका कमाने के साथ-साथ इन्होने हिन्दी एवं हिन्दुत्व का संरक्षण तथा संवर्धन में अत्यंत सराहनीय प्रयास किये है। इसीलिए अनेक बार राष्ट्र विरोधी आतंकवादियों ने इन हिन्दी भाषी लोगों पर आक्रमण किये, सैकड़ों लोगों को मौत के घाट उतारकर उन्हें यहाँ से पलायन करने के लिये मजबूर किया। इनके अलावा सैकड़ो चाय बगानों में कार्यरत लाखों संख्या में मजदूर हैं जो मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड से आये हैं। प्रायः सभी लोग अपनी-अपनी बोली के साथ-साथ हिन्दी का उपयोग करते हैं।

डॉ. देवेन्द्र चंद्र दास ('सुदामा' नाम से परिचित) असमीया समाज से हिन्दी भाषा के एक उच्चकोटि साहित्यकार हैं। इन्होनें हिन्दी में 50 से अधिक पुस्तक लिखीं हैं। अनेक सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं ने अनेक पुरस्कारों से दास जी को सम्मानित किया हैं। दास जी सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में लंबे समय शिक्षक रहने के कारण अभी भी पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों में शिक्षक प्रशिक्षण वर्गों में तथा

''नई पीढ़ी के लोगों में हिन्दी ही ज्यादा प्रचलित है। उस समय के 'नेफा' में वर्ष 1956 में प्रशासनिक आदेश (केन्द्र सरकार) के द्वारा हिन्दी को विद्यालयों में पढ़ाना अनिवार्य कर दिया गया। डॉ. जोराम यालम नाबम द्वारा रचित कहानी संग्रह 'साक्षी है पीपल', किसी अरूणाचली साहित्यकार द्वारा हिन्दी में किया गया पहला सृजनात्मक प्रयास है। इस पुस्तक में समाज में व्याप्त अरूणाचली स्त्री के जीवन संघर्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।''

कार्यशालाओं में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। वे जातीय साहित्य परिषद् के अखिल भारतीय संरक्षक हैं।

कुमार भास्कर वर्मन (सम्राट हर्षवर्धन के मित्र) 7वीं सदी में कामरूप राज्य के प्रभावशाली राजा थे। उनका जीवन 'राजर्षि' जैसा था। राज्य को विभिन्न क्षेत्रों में सबल बनाया। चीन यात्री ह्वेन्त्सांग ने उनके पास कुछ वर्ष व्यतीत किये। उनके शासनकाल में 'संस्कृत' राज भाषा थी। स्वयं विद्वान होने के कारण उन्होनें विद्वानों का प्रोत्साहन किया। गुवाहाटी के पास कुमार भास्कर वर्मन के नाम से कुछ वर्ष पूर्व असम सरकार का एक संस्कृत विश्वविद्यालय प्रारम्भ हुआ।

बोड़ो भाषा की लिपि निर्धारण के समय एक परीक्षा के जैसी घड़ी थी। बोड़ो इलाके में इसाई आतंकवादी संगठनों का बोलबाला था। सामानान्तर सरकार चलती थी। बोड़ो साहित्य सभा में बोड़ो भाषा की लिपि के मताधिकार के समय देवनागरी, असमीया लिपि चाहने वाले एक हो जाने से 'रोमन लिपि' चाहने वाले समूह की हार हो गयी। देवनागरी बोड़ो भाषा की लिपि बन गई। उस आक्रोश में संदिग्ध आतंकवादियों ने बोड़ो साहित्य सभा के अध्यक्ष बीनेश्वर ब्रह्म की 19 अगस्त 2000 को हत्या कर दी। बीनेश्वर ब्रह्म ने अपनी सेवा 1968 से देबरगाँव हाईस्कूल में हिन्दी शिक्षक के नाते शुरू की।

गुवाहाटी विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर 19-20 फरवरी 2020 में 'हिन्दी की स्थिति-चुनौतियाँ और संभावनाएँ' विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें विश्व के अनेक देशों से प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

चुनौतियाँ : पूर्णतः अहिन्दी भाषी क्षेत्र होने के कारण ग्रहण योग्यता को लेकर वहाँ समस्या आती है। शुद्ध हिन्दी बोलने के दबाव की वजह से गैर हिन्दी भाषी सार्वजनिक मंच पर हिन्दी बोलने से कतराते हैं। यहाँ जिन भाषा परिवारों (तिब्बत-बर्मी परिवार) की भाषाएँ प्रचलित हैं, उनका हिन्दी से दूर-दूर तक संबंध नहीं है। अवश्य ही असमीया भाषा इस संदर्भ में अपवाद है। असमीया भाषा में अत्यधिक शब्द संस्कृत के होने के कारण हिन्दी सीखने व समझने में कुछ सुविधा होती है। आधुनिक भारत के अनेक इतिहासकार गंगा के तट तक ही भारतवर्ष की सीमा मानते थे। भारत के इतिहास में मध्ययुग में असम का उल्लेख बहुत कम है। इसकी वजह से भावनात्मक रूप से असम और शेष भारत के बीच एकात्मता का भाव दुर्बल हुआ। यही कारण है, कि देश के अन्य प्रांतों में सामाजिक, आर्थिक, आदि अनेक क्षेत्रों में भिन्नता आती है। असम और शेष भारत से सम्पर्क कम होने के कारण हिन्दी और असम की दिशाएँ अलग हो गईं।

संभावनाएँ : हिन्दी राष्ट्रीय एकता की एक सशक्त कड़ी के रूप में विकसित हो रही है। सम्पर्क और परिपूरक भाषा के रूप में हिन्दी अपना स्थान बना रही है। पूर्वोत्तर की अनेक बोलियों (जनजातियों) में लिपि का अभाव है। रोमन लिपि, असमीया लिपि के अलावा देवनागरी लिपि एक सशक्त विकल्प बन सकती है। असमीया, बांग्ला, बिहारी भाषाओं में पर्याप्त संख्या में संस्कृत के शब्द होने के कारण सहजता से हिन्दी को लोग सीख सकते हैं।

"वर्तमान शिक्षित युवा वर्ग अपनी-अपनी जनजातियों के उत्तरण के लिए साहित्य निर्माण में लगा हुआ है। विविध साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं की स्थापना के माध्यम से वे अपनी जाति को आगे बढ़ाने हेतु प्रयत्नशील हैं।"

अविभाजित असम एक विशाल भूखण्ड होता था। 1947 के पश्चात् 1948 में अरुणाचल (नेफा), 1963 में नागालैंड, 1972 में मेघालय और 1987 में मिजोरम असम से पृथक होकर नये राज्य बने। राजनैतिक दृष्टि से अलग होने पर भी असम, अरुणाचल, मेघालय, नागालैंड, मिजोरम की पुरानी पीढ़ी के लोग असमीया को अच्छी तरह बोल और समझ पाते हैं। इसी समानता के कारण वे हिन्दी को आसानी से ग्रहण कर सकते हैं।

पर्यटन क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, मीडिया, यातायात सुविधा बढ़ने से नई पीढ़ी में दूर-दूर तक भ्रमण करने की मानसिकता भी भविष्य में हिन्दी का दैनंदिन जीवन में उपयोग बढ़ने की अपार संभावनायें हैं। विविध लिपि रहित भाषाओं में छिपे हुए मौखिक साहित्य, रीति-नीति, आचार-विचार आदि को इस क्षेत्र से राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने में हिन्दी एक सबल माध्यम बनेगी। हिन्दी का प्रचार-प्रसार तथा उसकी लोकप्रियता एवं व्यावहारिकता टी.वी. (धारावाहिक, विज्ञापन), सिनेमा, आकाशवाणी, पत्रकारिता, विद्यालय, महाविद्यालय तथा उच्च शिक्षा में हिन्दी भाषा के प्रयोग द्वारा बढ़ रही है।

जनजातियों में जातीय चेतना का उदय : पूर्वोत्तर भारत के लोग कुछ वर्ष पूर्व तक अशिक्षित और पिछड़े थे। इसका कारण भौगौलिक अवस्थिति, आतंकवाद, यातायात की कम सुविधा, अधिक वर्षा (मौसम), लोगों की जीवन शैली में संतुष्ट स्वभाव। वर्तमान शिक्षित युवा वर्ग अपनी-अपनी जनजातियों के उत्तरण के लिए साहित्य निर्माण में लगा हुआ है। विविध साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं की स्थापना के माध्यम से वे अपनी जाति को आगे बढ़ाने हेतु प्रयत्नशील हैं। इसी चेतना के चलते वे अपनी भाषा, साहित्य, के सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा लोगों को देश की मूलधारा से जोड़ने के लिए तत्पर हैं। उनके इस प्रयास में हिन्दी सहायक हो सकती है।

पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी की स्थिति दिनों-दिन सबल होती जा रही है और यह सही दिशा में आगे बढ़ रही है।

राष्ट्रीय चेतना व एकता के संवाहक गाड़िया लोहार

समरसता

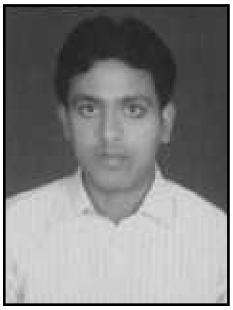

श्री शैलेन्द्र विक्रम
शोध अध्येता
समाजिक कार्यकर्ता
मंत्री, सेवा भारती दिल्ली

गाड़िया लोहार दो शब्दों के मेल से बना है ये दो शब्द हैं गाड़िया व लोहार। गाड़िया से तात्पर्य है गाड़ी पर चलने वाले और लोहार से तात्पर्य है लोहे का कार्य करने वाला । ये लोग एक गाड़ी पर अपने रोजमर्रा के काम आने वाले सामानों को लेकर सपरिवार साथ चलते हैं। जगह-जगह, गाँव-गाँव, शहर-शहर घूमते हैं तथा घरेलु और कृषि कार्य में आने वाले लोहे के सामानों को बिक्री करने के लिए अस्थायी तौर पर छोटे से तम्बू लगाकर वास करते हैं। इन्हें ही गाड़िया लोहार कहा जाता है।

कई दशकों पूर्व महाराणा प्रताप की सेना के लिए अस्त्र-शस्त्र का निर्माण करने हेतु आयुध विभाग में इस समाज का प्रत्यक्ष प्रभाव था। लौह के समान बनाने के कारण इन्हें लोहार समाज के नाम से जाना जाता था। महाराणा प्रताप के शासनकाल में यह समाज महाराणा के अत्यंत घनिष्ठ सहयोगी था। उनके लिए जीने-मरने व मारने का कार्य करने वाला समाज बन गया था। तत्कालीन भारत में परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बन गई थीं कि ज्यादतर सम्प्रभु लोग अपने छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए अपने आप को पतित बना लिए। राजस्थान में केवल महराणा प्रताप ऐसे शक्तिशाली शासक हुए जिन्होंने किसी भी परिस्थिति में राष्ट्रीय एकता के लिए अपने चरित्र को सबसे आगे और ऊँचा रखा।

महाराणा प्रताप का मुगल शासक अकबर से विश्व प्रसिद्ध हल्दीघाटी का युद्ध 18 जून 1576 को हुआ। इस युद्ध में राणा प्रताप की सेना मुगल सैन्य बल से बहुत ही कम थी फिर भी अपनी उत्कृष्ट युद्धनीति के कारण महाराणा प्रताप की सेना, नें मुगल सेना के हौसले को पस्त कर दिया था। इसी समय राजस्थान के अकबर के अन्य कृपापात्र मनसबदारों की सेना का पुनः जमावड़ा दिखाई दिया। राणाप्रताप इस समय अत्यधिक घायल होकर कष्ट में थे। राणा के विश्वास पात्र ने राणा को युद्ध क्षेत्र से निकल जाने का आग्रह किया क्योंकि ''राणा प्रताप रहेंगे तो संघर्ष निरंतर जीवंत रहेगा यानि राणा नहीं तो संघर्ष नहीं।'' इस प्रकार की बातें युद्ध क्षेत्र में राणा के खेमे में उठीं। राणा प्रताप का मुकुट झालामान सिंह ने अपने सिर पर रख कर युद्ध का नेतृत्व करने लगा। राणा प्रताप को एक नवीन युद्ध नीति बनाने का समय पर्याप्त मिल गया। राणा प्रताप के रण-बाँकुरे हर बार तीव्रतम गति से प्रहार करने लगे। शाम होने को आई, मुगल सेना को चकमा देकर राणा को रणभूमि से जाने की खबर मुगल सेना को पता लग गई। कुछ तथाकथित मुगल सेनानियों को राणा के यूँ चकमा देकर जाने में जीत दिखाई पड़ी। परन्तु अगले ही पल यह क्या? अरावली की घाटी में रात्रि के समय अचानक युद्ध का कोहराम मचने से मुगल सेना में भगदड़ मच गई। राणा के रण-बाँकुरों के द्वारा मुगल सेना के हौसले पस्त किए जा चुके थे। एक भयानक युद्ध अनिर्णायक अवस्था में था। न मुगल जीते न राणा प्रताप हारे। घायल महाराणा प्रताप के समक्ष हल्दीघाटी के युद्ध को निर्णायक बनाने के लिए उनके अत्यंत विश्वसनीय गाड़िया लोहार समाज ने राणा प्रताप के समक्ष 5 वचन लिए। जब तक हम चितौड़ को स्वतंत्र नहीं करा लेते तब तक -

1. चित्तौड़ दुर्ग पर पांव नहीं रखेंगे।
2. अपने लिए घर बनाकर नहीं रहेंगे।
3. खाट पर नहीं सोयेंगे।
4. दीपक नहीं जलायेंगे।
5. पीने के लिए पानी खीचनें का रस्सा नहीं रखेंगे।

महाराणा प्रताप का यह विश्वसनीय योद्धा वर्ग कुशल छापामार युद्ध कौशल का निपुण सैनिक था। संभवतः विश्व को छापामार पद्धति इसी युद्ध से मिली। महाराणा प्रताप के न रहने पर जब राणा अमर सिंह ने अपनी अस्मिता के विपरीत मुगल जहाँगीर की अधीनता

संपर्क
मो. 9717334419

स्वीकार की तब गाड़िया लोहार समाज के लोगों को अत्यधिक पीड़ा हुई। इस पीड़ा के दो कारण थे -

1. मुगल सेनापति मानसिंह जितनी कटुता राणा प्रताप के परिवार से रखता था उतनी ही कटुता इस लोहार समाज से रखता था।
2. लोहारों ने अपने गौरव की रक्षा के लिए कठोर व्रत का पालन किया। जिसे राणा अमर अब नीलाम कर चुके थे।

अतः उस समय लोहारों के पास केवल दो ही रास्ते बचे थे - 1. कठोर व्रत का त्याग कर मुगल की अधीनता स्वीकार कर लेना । 2. अपने को छुपाकर राणा प्रताप को दिए वचन पर अटल रहना। परन्तु गाड़िया लोहार के योद्धा समाज ने महाराणा प्रताप को दिए अपने वचन पर प्रतिबद्धता जताई। इस समाज ने स्वयं को बचाने के लिए अरावली में स्थित घुमन्तू बंजारा समाज से रोटी व बेटी का सम्बंध स्थापित कर लिया व बंजारों का जीवन तथा उनकी रोजगार प्रणाली को यानि घरेलू समान का निर्माण करने के कार्य को अपनाकर यह समाज उसी समाज में ढल गया। बहुत समय बीत जाने के बाद के बाद भी इस समाज को पहचाना नहीं जा सकता था। लोहार योद्धा वर्ग जहाँ भी मौका मिलता मुगल सैनिक को मौत की नींद सुला देता था। इस प्रकार विचरणशील समाज बनकर लोहार सैनिक समुदाय कालान्तर में पूरे अखंड भारत तथा यूरोप के यूक्रेन, लातविया, स्टोनिया आदि कई देशों में फैल गया। भारत व पाकिस्तान में इसे गाड़िया लोहार या गाड़ीवाला घुमन्तु समाज कहा जाने लगा। यूरोप में इन्हें जिप्सी जनजातीय वर्ग में रखा गया।

अपनी विशिष्ट जीवन शैली के कारण ही इनकी भारतीय समाज में अलग पहचान है। ये हैं इनकी विशेषताएँ -

रहन-सहन

वर्तमान में गाड़िया लोहार समाज खुले आसमान के नीचे तम्बू या पॉलीथीन से झुग्गियों का निर्माण कर रहते हैं। सम्पूर्ण भारत व अन्य देशों में भी रहन-सहन कमोवेश एक जैसा ही जीवन पद्धति है। इनकी बस्तियों में शौचालयों का सर्वथा अभाव होने के कारण ये या तो झाड़ी वाली जगहों पर रहते हैं या फिर शहरों में सार्वजनिक शौचालय वाले जगहों के साथ खुली जगह पर टेंट लगाकर रहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं तो मैदानों या झाड़ियों में ये नित्यकर्म हेतु जाते हैं। दिल्ली जैसे महानगरों में भी स्थितियाँ लगभग मैदानी इलाकों में वाली होने पर ही ये वही वास करते हैं। नानक प्याऊ गुरुद्वारे के समीप गाड़िया लोहार के बस्ती में आज भी शौचालय नहीं है परन्तु ये उसी के आस-पास झाड़ीनुमा जगहों का प्रयोग करते हैं।

खान-पान

प्रायः सभी लोग सर्वाहारी हैं। बहुत कम संख्या शाकाहारियों की है। ज्यादातर समय मिस्सी रोटी और चटनी खाते हैं। प्रायः दो तीन परिवार मिलकर एक ही चुल्हे पर अपनी रोटी बनाते हैं। सुबह पकाई रोटी शाम तक प्रयोग करते हैं। यहाँ कबीला जीवन पद्धति देखने को मिलता है।

स्नान

इस समाज के लोग देर रात में स्नान करने का आदि है। इसका प्रमुख कारण दिन में शुबह से लेकर सायं तक लोहे के घरेलु कार्य के उपकरण बनाने, कृषि व बागवानी कार्य के लिए लोहे के खुरपी, हसुआ, हथौड़ा, छेनी आदि बनाने का कार्य करते हैं। इसे अपना परम्परागत व्यवसाय मानते हैं।

पूर्व में राणा समाज के लिए अस्त्र-शस्त्र बनाने के कार्य करने के कारण देर रात्रि तक कार्य करना आज भी प्रचलन में है। घुमन्तू जीवन अपनाने पर जब इनकी गाड़ियां रात्रि में कहीं रूकती थीं तब ही ये पूरे परिवार सहित स्नान करते थे। वही आज भी विद्यमान है। वर्तमान में इनकी लोहे के औजार बनाने की भट्टी दिनभर चलती रहती है जिससे कुछ न कुछ बनता रहता है। देर रात्रि सोने से पहले स्नान करना इनकी दिनचर्या का हिस्सा बन गया है।

पहनावा

पहले पुरुष समाज मोटी एक लंगी धोती व कुर्ता या कमीज़ का प्रयोग करता था आज भी बुजुर्गों के द्वारा इस प्रकार के वस्त्र प्रयोग में हैं। युवा वर्ग आधुनिक पैंट व शर्ट पहनने लगा है। लगभग 90 प्रतिशत बुजुर्गों में दाढ़ी और मुछें रखने का प्रचलन है। इसका सीधा सा कारण लौह कर्म के लिए आग की भट्ठी के सामने घण्टों बैठ कर गर्मी में कार्य करना। भट्ठी से चिनगारियाँ निकलती रहती हैं जिससे चेहरे के चर्म को बचाने के लिए मुंछ व दाढ़ी रखनी पड़ती है। बुजुर्ग महिलाएँ प्रायः 'काँचुली' नामक कपड़ा पहनती हैं। यह पहनावा सैनिक समूहों में प्रायः पहना जाता था। यह कुछ-कुछ राजस्थान में प्रचलित घाघरा-चोली जैसा ही है। आभूषण इनकी विशेष पहचान है। आदिवासी अंचल में रहने वालों से सम्बन्ध होने के कारण महिलाएँ हाथी के दाँतो से बने गहने खूब प्रयोग करती हैं। वर्तमान में नई पीढ़ी के आभूषणों के अलावा अन्य कोई भी परम्परागत कपड़ा धारण नहीं करती हैं। विशेष रूप से पैरों में मोटे-मोटे गोड़हरा जैसे आभूषण का प्रयोग करती हैं जो खासकर चाँदी से बना होता है।

धार्मिकता

राजस्थान स्थित रामदेवरा नामक स्थान इनकी आस्था का बड़ा केन्द्र है। यहाँ पर स्थित बाबा रामदेव की मूर्ति में अगाध श्रद्धा होने के कारण यह समाज उन्हें भगवान विष्णु का अवतार मानता है। माता वैष्णव देवी में भी इनकी अपार श्रद्धा है। जादू, टोना-टोटका का प्रचलन भी इनके समाज में खूब है।

विवाह प्रथा

सामान्यतः लड़कियाँ ही वर का चुनाव करती हैं। माता-पिता

सम्बन्धित लड़के के घर जाकर विवाह की बात करते हैं। यह प्रथा लड़कों की तरफ से भी ठीक ऐसे ही की जाती है। अधिकांश लड़का-लड़की की पसंद पर माता-पिता द्वारा सहमति प्रदान की जाती है।

चूँकि यह समाज स्वयं को राजपूताना मानता है अतः एक गोत्र में विवाह नहीं करते हैं। विवाह का मुहूर्त, लेन-देन एवं अन्य गतिविधियाँ सम्पूर्ण समाज के सामने प्रधान की उपस्थिति में तय की जाती हैं।

बारात 3-4 बजे सायं को मंडप तक पहुँच जाती है पूरी रात सभी नृत्य आदि मनोरंजक गतिविधियों में व्यस्त रहते हैं।

शिक्षा

लगभग पूरा समाज अशिक्षित है। जहाँ-जहाँ 30-35 सालों में यह समाज स्थिर हो गया है वहाँ के कुछ बच्चे पढ़ने की ओर उन्मुख हुए हैं। दिल्ली आदि कुछ बड़े शहरों में यह समाज निश्चित ही कुछ ज्यादा पढ़ाई की ओर उन्मुख हुआ है। फिर भी आँकड़ा संतोषजनक नहीं कहा जा सकता है।

उन्नति का प्रयास

गाड़िया समाज के सर्वांगीण उन्नति के लिए पहले इस प्रकार का प्रयास राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा किया गया। संघ का मूल उद्देश्य समस्त भारत के समाज की उन्नति है। चाहे वह समाज झुग्गी-झोपड़ियों, गिरि, वनों, कन्दराओं आदि में ही क्यों न निवास करता है। आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने अनुषांगिक संगठनों के साथ इस हेतु प्रयासरत है। भारत सरकार भी आजादी के प्रथम दशक से ही सभी गाड़िया लोहारों का आवाहन किया था कि सभी गाड़िया लोहार समाज के लोग यदि चाहे तो चित्तौड़ में अपना घर बनाकर रह सकते हैं। इस आवाहन से चित्तौड़ के आस-पास बड़ी संख्या में गाड़िया लोहार समाज के लोगों ने अपने लिए घर बनाए। इस समाज के अनेक लोगों ने इस प्रकार की सुविधा से कोसों दूर होने के कारण व अशिक्षा के कारण वहाँ बसना पसंद नहीं किया। इस घोषणा का प्रभाव केवल चित्तौड़ के आस-पास के जिलों तक ही रहा । पूरे भारत में ईमानदारी से इस प्रयास को नहीं लागू किया गया।

दिल्ली एन.सी.आर. में प्रयास

दिल्ली, एन.सी.आर. में वर्षों पहले इस प्रकार का प्रयास दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मदन लाल खुराना व श्री साहिब सिंह वर्मा ने किया। उन्होंने दिल्ली के पप्पनकला, बुद्ध विहार एवं शिव विहार जैसे कुछ स्थानों पर इनके लिए कालोनियों की व्यवस्था की। सरकारी अड़चनों के कारण यह सुविधा हजारों की संख्या में होने के कारण मात्र कुछ लोगों को ही मिल पाईं।

वर्ष 2015 अगस्त माह तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल जी ने इस समाज के सर्वांगीण विकास के लिए दो प्रकल्पों के माध्यम से कार्य योजना को मूर्त स्वरूप प्रदान किया। पहला प्रकल्प महामना मालवीय शिक्षा व संस्कार केन्द्र के नाम से आज दिल्ली एन.सी. आर. में 30 इस प्रकार का केन्द्र चल रहा है। इसके संचालन का दायित्व मालवीय मिशन दिल्ली की इन्द्रप्रस्थ इकाई के जिम्मे है। इसे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र तथा मालवीय जी में आस्था रखने वाले लोग वित्तीय सहायता देकर चला रहे हैं। दूसरा प्रकल्प नेशनल मेडिको आर्गनाइजेशन में माध्यम से संचालित है। यह प्रकल्प गाड़िया लोहार समाज के स्वास्थ्य सम्बन्धी चिंता करता है। अभी तक इस प्रकल्प के माध्यम से दिल्ली के राजीव गाँधी कैंसर अस्पताल रोहिणी में रक्त कैंसर के विभागाध्यक्ष आदरणीय डॉ. दिनेश बुरानी जी ने 6 गाड़िया लोहारों के कैंसर का सफल इलाज किया है। इसके साथ ही गाड़िया लोहारों की एक बस्ती सरस्वती विहार के पास पीतमपुरा में नियमित स्वास्थ्य परीक्षण की सुविधा भी उलब्ध कराई है। व उनके सहयोग से गाड़िया लोहार के बच्चों के शिक्षा हेतु संसाधनों की भी व्यवस्था की है। इसी प्रकार एन.एम.ओ.के डॉ.सी.वी.त्रिपाठी जैसे लोगों ने शाहदरा बस्ती में इहबास शाहदरा के माध्यम से कई गाड़िया लोहार समाज के लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं। इसी प्रकार झण्डेवालान् स्थित केशवकुंज के डॉक्टर श्री सुरेन्द्र जी भी इस समाज की सेवा में लगे हैं।

विद्या भारती का प्रयास

अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री जे.एम.काशीपति जी ने मास फरवरी वर्ष 2017 में गाड़िया लोहारों की बस्ती मायापुरी में राजस्थान के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री शिवप्रसाद जी के साथ प्रवास कर उनकी समस्याओं का अवलोकन किया। तत्पश्चात् उत्तर क्षेत्र के तत्कालीन क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री हेमचन्द का भी प्रवास मोती नगर, ख्याला आदि बस्तियों में हुआ। इन प्रवासों के बाद ही मायापुरी और मोतीनगर में सरस्वती संस्कार केन्द्र के माध्यम से सेवा का कार्य प्रारम्भ हुआ। वीर हकीकत राय सरस्वती संस्कार केन्द्र माता लीलावन्ती सरस्वती बाल मंदिर व महाराणा प्रताप शिक्षा संस्कार केन्द्र का संचालन महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बाल मंदिर हरिनगर के माध्यम से हो रहा है। विद्या भारती के माध्यम से गाड़िया लोहार समाज के 5 बच्चों का नामांकन माता लीलावन्ती सरस्वती बाल मंदिर हरिनगर में हुआ है। इससे इन बच्चों के माध्यम से परिवार तक सम्पर्क बना है। इन पाँच बच्चों के शिक्षण शुल्क की व्यवस्था विद्या भारती के पूर्व छात्रों के सहयोग से हो रहा है।

इसके अतिरिक्त विद्या भारती ने अपने अनुषंगी संगठन समर्थ शिक्षा समिति द्वारा संचालित दक्ष भारती के माध्यम से गाड़िया लोहारों के चौदह बच्चों को कम्प्यूटर एवं सिलाई का भी प्रशिक्षण दिया गया है। दक्ष भारती में कम्प्यूटर ऑपरेटर की नौकरी एक गाड़िया लोहार समाज की बहन को दी गई है। विश्वास है कि इस क्षेत्र में क्रमशः कार्य करने से इस समाज से समरसता बढ़ेगी।

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण की स्थिति

पर्यावरण

श्री संजय स्वामी
प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान
राष्ट्रीय संयोजक-पर्यावरण शिक्षा,
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास।
पत्रिकाओं में शिक्षा, पर्यावरण एवं
सामाजिक विषयों पर नियमित लेखन
अनेक पुस्तकें प्रकाशित

संपर्क
मो. 9871082500

दिनोंदिन विकराल रूप धारण करते प्रदूषण ने पर्यावरण के लिए विश्वव्यापी संकट उत्पन्न कर दिया है। बढ़ती जनसंख्या, आधुनिक जीवन शैली, औद्योगीकरण, विकास के नाम पर प्रकृति से भयंकर छेड़छाड़, विकास दर को ऊँचा दिखाने के लिए पर्यावरण की उपेक्षा कर अंधाधुंध उत्पादन, प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकी अवदोहन आदि का परिणाम जलवायु परिवर्तन तथा प्राकृतिक आपदाओं के रूप में हमारे सामने है। सूचना तकनीकी क्रांति की इस सदी में बे-मौसम बारिस, चक्रवात, तूफान, तितली, टिड्डे, सुनामी, बाढ़, सूखा अतिवृष्टि-अनावृष्टि आदि समस्याएँ और तीव्रता से बढ़ीं हैं।

कुछ समय पूर्व तक प्रदूषण की समस्या शहरी क्षेत्रों में ही थी। बड़े-बड़े महानगर जैसे दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, ग्वालियर आदि इस समस्या से पीड़ित थे परन्तु अब मानवीय क्रियाकलापों से छोटे-छोटे गाँव-देहातों का परिवेश भी प्रभावित हुआ है। विकास के नाम सड़कों को हाइवे बनाया जा रहा है। सड़क चौड़ीकरण के नाम वृक्ष विकास की भेंट चढ़ रहे हैं, सड़क के किनारे के पेड़ व फलदार वृक्ष गायब हो रहे हैं। ग्रामीण अंचलों में बढ़ते वाहनों की संख्या, कृषि के कार्य में दिन-प्रतिदिन बढ़ते मशीनी यंत्रों के प्रयोग तथा घटते वन क्षेत्र से पर्यावरण असंतुलित हुआ है।

महानगरों में अति जनसंख्या वृद्धि से आवास व परिवहन की समस्या उत्पन्न हुई है। निर्माण कार्य हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में मिट्टी, रेत, बजरी, रोड़ी का अवैध खनन राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण के प्रतिबंध के बावजूद जारी है। गुड़गाँव, फरीदाबाद, अलवर, कटनी, पन्ना जैसे जिलों की सैकड़ों पहाड़ियाँ अवैध खनन के कारण गायब हो गईं।

शहरों में दिन-प्रतिदिन बढ़ती वाहनों की संख्या तथा उन पर से उत्सर्जित धुएँ के कारण वायु प्रदूषण बढ़ रहा है। आधुनिक तकनीकी का हाल यह है कि प्रदूषण की समस्या का स्थाई समाधान न खोज कर प्रति वर्ष नए-नए उत्पाद अर्थात् यूरो 1, 2, 4, 6, 8 आदि के नाम से नई तकनीकी का प्रचार कर वाहन निर्माता कम्पनियों द्वारा अपने नए उत्पादनों को बेचने का खेल ही दिखाई देता है। नए उत्पादों को ठिकाने लगाने के लिए तथा पुराने वाहनों द्वारा उत्सर्जित प्रदूषण को कम करने के हेतु डीजल-पेट्रोल से चलने वाले वाहनों की आयु सीमा निर्धारित कर दी। अर्थात् 10-15 साल पुराने वाहनों के परिचालन पर प्रतिबंध का कानून बना दिया गया है। भारत जैसे देश में जहाँ कपड़े छोटे हो जाएँ तो भाई-बहन पहनते हैं और छोटे होने पर थैले, झाड़न, छलने बनाए जाते हैं तथा और पुराने होने पर गुदड़ी बनाकर उसका उपयोग किया जाता है और अंत में घर में पोछा लगाने के काम में लाते हैं अर्थात् पूर्ण उपयोगिता के सिद्धांत का पालन जिस भारत देश के लोगों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, ऐसे देश में पुरानी गाड़ी भला कौन फेकने वाला है। जो वाहन शहरों में प्रदूषण मानकों के कारण प्रतिबंधित हो जाता है वह ग्रामीण क्षेत्रों में चला जाता है। सरकारी तंत्र की विडंबना देखिए जो वाहन 10-15 साल पुराना होकर शहर में तो प्रदूषण फैलाता है परन्तु गाँवों व कस्बों में नहीं। पुरानी खटारा बसें प्रदूषण के नियमों के तहत महानगरों से प्रतिबंधित होने के बाद कस्बों में धड़ल्ले से धुँए के बादल उड़ाती फर्राटे भर रही हैं। देशी इंजीनियरों ने पुराने स्कूटर, मोटरसाइकिल के जुगाड़ बना कर ग्रामीण क्षेत्रों हेतु टेम्पो बना दिए। बात यह समझ में नहीं आती कि जो प्रदूषण के मानक शहरों के लिए हैं वे गाँवों के लिए क्यों नहीं? क्या स्वच्छ हवा केवल शहरी लोगों के लिए ही हैं? माना कि गाँवों के आस-पास खुला नीला आसमान है जिस कारण दम नहीं घुटता परंतु दूषित धुँआ आखिर जाता तो आसमान में ही है। यदि इसी

"भारत जैसे कृषि प्रधान देश ने विकास का मॉडल यूरोप से अपनाया अर्थात् औद्योगीकरण को ही विकास का पैमाना माना। औद्योगीकरण का परिणाम है कि भारत के साथ-साथ पूरी दुनिया में ही वन भूमि कम हुई। भूमि कृषि भी दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है, भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो रही है। बढ़ती जनसंख्या के लिए समुचित अनाज के उत्पादन हेतु सरकारों ने आधुनिक रासायनिक खाद के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया।"

गति से वायु प्रदूषण बढ़ता रहा तो कुछ सालों में गाँव में भी नीला आसमान देखने को लोग तरस जाएँगे।

प्रदूषण फैलाने वाली फैक्ट्रियों को शहर से हटाकर ग्रामीण क्षेत्रों मे स्थानांतरित किया जा रहा है तो क्या उनके द्वारा उत्सर्जित धुआं, प्रदूषित पानी, हानिकारक रसायनिक अवशिष्ट गाँव की हवा, पानी, मिट्टी को प्रदूषित कर जहरीला नहीं कर रहे हैं? महानगरों में तो प्रदूषण मापक यंत्र लगे हैं। पर्यावरण की चिंता करने वाले पर्यावरणविद् चिंतित हैं। समाचार पत्र रूपी मीडिया भी है तथा जागरूक नागरिक भी इसके बावजूद गावों में बढ़ते विभिन्न प्रकार के प्रदूषण की चिंता किसे है?, ग्रामीणों के स्वास्थ्य की चिंता के साथ उनके खेतों, नदियों, नहरों, पोखर व तालाबों के जल की शुद्धि के स्तर को शायद ही कभी कोई वैज्ञानिक किसी यंत्र से मापते हैं? कहीं कुछ थोड़ा बहुत प्रयास दिखता भी है तो संभवतया वह भी शायद अपने कार्य शोध का प्रोजेक्ट के निमित्त ही। बढ़ते वायु प्रदूषण से श्वास के रोगियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। दुनिया में सर्वाधिक श्वास के रोगी भारत में हैं। श्वास संबंधी रोगों से सर्वाधिक मौतें भी भारत में ही होती हैं। एक अध्ययन के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष लगभग 15 लाख मौतें श्वास की बीमारी के कारण होती हैं।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश ने विकास का मॉडल यूरोप से अपनाया अर्थात् औद्योगीकरण को ही विकास का पैमाना माना। औद्योगीकरण का परिणाम है कि भारत के साथ-साथ पूरी दुनिया में ही वन भूमि कम हुई। कृषि भूमि भी दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है, भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो रही है। बढ़ती जनसंख्या के लिए समुचित अनाज के उत्पादन हेतु सरकारों ने आधुनिक रासायनिक खाद के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया। किसानों को उन्नत किस्म के बीज के साथ-साथ रासायनिक खाद के प्रयोग के लिए शिक्षित किया गया। परिणाम हमारे सामने है कि उत्पादन तो बहुत अधिक बढ़ गया परन्तु भूमि की उपजाऊ क्षमता कम होती जा रही है। उपजाऊ खेत ऊसर होते जा रहे हैं। जोत की भूमि घट रही है जबकि बंजर भूमि बढ़ रही है। महानगरों का तो हाल और बेहाल हुआ ही है परन्तु गाँव भी अब कचरे के ढेर से अटने लगे हैं। उद्योगपति, व्यापारियों में उत्पादन की ऐसी होड़ लगी है कि अधिकाधिक मुनाफा कमाने के लिए व व्यापार को बढ़ाने के लिए सभी कुछ शैम्पू, साबुन, मंजन, तेल, बीड़ी-सिगरेट, गुटखा, पान मसाला ही नहीं शराब भी प्लास्टिक की थैलियों में पैकिंग होकर बाजार में आ रही है। मात्र पचास पैसे, एक रुपये मूल्य की बिक्री की वस्तुएँ प्रतिदिन लाखों टन कचरा उत्पादित कर रही हैं। भारत में प्रतिदिन 790 करोड़ पालिथीन का प्रयोग हो रहा है।

गाँव, देहातों में आसानी से मिट्टी के कुल्हड़ व सकोरे उपलब्ध हो जाते हैं। पहले पत्ते से दोने व पत्तल बनाए जाते थे परन्तु अब प्लास्टिक के दोने, प्लास्टिक के चम्मच, थर्माकोल के गिलास आदि प्रयोग किए जा रहे हैं। परिणाम यह है कि गाँव के तालाब व पोखर भी कचरे से पटने लगे हैं। भारत के अधिसंख्य गाँवों में कचरे से निपटने के लिए कोई उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण सारा कचरे को सड़कों के किनारे अथवा गाँवों के नाले, नहर, जोहड़, तालाब या नदियों में डाला जाता है। जो वहाँ जल व मृदा दोनों को प्रदूषित करता है। भारत के अनेक राज्यों के सैकड़ों-हजारों गाँवों का भूमिगत जल खतरनाक स्तर तक प्रदूषित हो चुका है। ग्रामीण क्षेत्रों में त्वचा व पेट की बीमारियों के रोगियों की संख्या अप्रत्याशित रूप से दिन प्रतिदिन बढ़ रही है।

'नमामि गंगे' जैसे विराट सफाई योजना के बावजूद कानपुर शहर के चमड़ा रंगने वाली इकाईयों, टेनरियों व रसायन युक्त प्रदूषित गंदा पानी गंगा नदी की धारा में आज भी प्रवाहित हो रहा है। हजारों करोड़ रुपये खर्च होने के बावजूद आज तक उस प्रदूषित जल के शुद्धिकरण व पुनर्चक्रण की पूर्ण रूप से समुचित सुरक्षित व्यवस्था नहीं हो सकी है। अनेक छोटे-छोटे कस्बों में कपड़ा रँगने तथा केमिकल की फैक्ट्रियाँ हैं जिनके केमिकल युक्त पानी को बिना शोधन किए सीधे छोटी नाली-नालों द्वारा जमीन पर छोड़ दिया जाता है, जिससे भूमिगत जल भी विषाक्त हो रहा है। शहरों ने अपना विस्तार करते हुए आसपास के गावों को भी अपने में समाहित कर लिया है। अनियोजित विकास ने खेती की जमीन पर अनधिकृत कालोनियाँ उगा दी। अब उन क्षेत्रों में सिंचाई हेतु गुजरने वाली नहरें, नालों में रूपांतरित हो गई हैं। अनधिकृत कालोनियों का गंदा पानी, अवैध उद्योगों का अपशिष्ट आदि

" 'नमामि गंगे' जैसे विराट सफाई योजना के बावजूद कानपुर शहर के चमड़ा रँगने वाली इकाईयों टेनरियों व रसायन युक्त प्रदूषित गंदा पानी गंगा नदी की धारा में आज भी प्रवाहित हो रहा है। हजारों करोड़ रुपये खर्च होने के बावजूद आज तक उस प्रदूषित जल के शुद्धिकरण व पुनर्चक्रण की पूर्ण रूप से समुचित सुरक्षित व्यवस्था नहीं हो सकी है। "

सीधे इन नहरों में छोड़ा जा रहा है जो भौम जल को विषैला कर रहा है।

भारत के बारे में पूरी दुनिया में कहा जाता है कि भारत में दूध-घी की नदियाँ बहती थीं। भारतीय सर्वाधिक मिठाइयों के शौकीन हैं। मिठाई उत्पादन के लिए मुख्य रूप से दूध का प्रयोग होता है। जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ भारतीयों की क्रय शक्ति में वृद्धि हुई है। जिस कारण दूध की बहुत अधिक माँग है। अधिक दूध उत्पादन के लिए भारतीय नस्लों को छोड़कर अमेरिकन नस्ल की गायें अब गाँवों में पाली जा रही हैं। यंत्र आधारित खेती का चलन बढ़ने के कारण बैल का प्रयोग अब नहीं हो रहा है। वैसे भी अमेरिकन नस्ल का बछड़ा जोत आदि किसी काम का नहीं होता, उसे जंगलों में कुत्तों या अवैध शिकारियों के लिए छोड़ दिया जाता है। अनेक स्थानों पर तो हालात यह है कि गाँव से दूध शहर में आकर वापस थैलियों में गाँवों में जा रहा है। आवश्यकता भारतीय नस्ल की दुधारू गायों के पालन व संरक्षण की है।

पर्यावरण समस्या के सामाधान हेतु सुझाव -

आधुनिक तकनीकी तथा विज्ञान गाँव व खेत पहुँचे इसका प्रयास किया जाना चाहिए। ग्रामीण युवा शिक्षित होकर शहर में नौकरी की तलाश करता है फिर शहर में ही बस जाता है, उसका ज्ञान उसके गाँव व खेत खलिहान के क्या काम आया? अतः उसे कृषि, पशुपालन की शिक्षा, कृषि व पशु महाविद्यालय, ग्रामीण क्षेत्रों में खोले जाएँ।

ग्रामीण क्षेत्र में प्रत्येक विद्यालय में कृषि, बागवानी, सब्जी उत्पादन व पशु से सम्बन्धित जानकारी पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाए।

पाठ्यक्रम तैयार करते समय उस राज्य की मातृभाषा तथा स्थानीय लोकभाषा को सर्वप्रथम प्राथमिकता दी जानी चाहिए। स्थानीय शब्दों तथा आवश्यकताओं का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। अँग्रेजी के मोहपाश से बचना चाहिए।

कृषि वैज्ञानिकों के लिए वर्ष में छः मास ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करना उनकी सेवा शर्तों में जोड़ा जाना चाहिए।

उन्नत किस्म के बीज तैयार करते समय भारतीय परिवेश का ध्यान रखा जाना चाहिए।

कृषि में गुणवत्ता विकास की तकनीकी छोटे व मझोले किसानों को केन्द्रित करते हुए तैयार की जाए।

कृषि अवशिष्ट के शीघ्र निपटान की उचित व्यवस्था हेतु तकनीक विकसित की जाए, उदाहरण स्वरूप हरियाणा व पंजाब आदि के क्षेत्रों में धान की कटाई के बाद किसान को तुरंत गेहूँ की फसल हेतु खेत तैयार करना पड़ता है इस कारण वे धान का अवशिष्ट अर्थात् पराली को जलाते हैं फलस्वरूप पंजाब व हरियाणा के साथ ही राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का वायुमंडल प्रदूषित हो जाता है।

रासायनिक खाद पर अनुदान (सब्सिडी) देने वाली सरकार को जैविक तथा केचुए से बनी खाद के प्रोत्साहन हेतु अनुदान देने का विशेष व्यवस्था करना चाहिए।

गाँव के बेरोजगार युवाओं को जैविक तथा कृमि खाद बनाने का प्रशिक्षण देकर इस व्यवसाय हेतु आर्थिक सहायता व सहयोग सरल तरीके से उपलब्ध करवाना चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित व स्थानांतरित किए जा रहे उद्योगों हेतु प्रदूषण सम्बन्धी मानक व नियंत्रण हेतु मापदंड निर्धारित किया जाना चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्रों की मिट्‌टी तथा जल प्रदूषित होने से बचाने हेतु समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए तथा इस हेतु जनजागरण, लोकप्रशिक्षण, विद्यार्थियों व किसानों हेतु कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए।

ग्रामों में पर्यावरण संरक्षण आधारित रोजगार

ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अनेक अवसर पैदा करना होगा। ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित कर छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों द्वारा आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। गाँवों में बिना बिजली आदि की सुविधा के ग्रामीण संसाधनों के आधार पर अनेक प्रकल्प न्यूनतम निवेश से प्रारम्भ किए जा सकते हैं तथा अचार व मुरब्बा बनाना, च्यवनप्राश बनाना, पत्ते के दोने व पत्तल बनाना, कपड़े व जूट के थैले बनाना, कागज के लिफाफे बनाना, रद्‌दी कागज व मुल्तानी मिट्‌टी के लुगदी से टोकरी आदि बनाना, अनाज संग्रहण के पात्र बनाना, मिट्‌टी के बर्तन बनाना, दातुन व मंजन बनाना, मसाले व चूर्ण बनाना, पापड़ बनाना, फूलों की खेती करना, सब्जी की खेती करना, ग्रामीण कृषि यंत्रों के निर्माण हेतु छोटा व लघु उद्योग स्थापित करना, इत्र व शहद बनाना, चटाई व दरी की बुनाई, हस्तकरघा तथा दूध तथा दूध से तैयार किए जाने वाले उत्पाद तैयार करना। इनके लिए सामाजिक व शासकीय स्तर पर प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

ग्राम विकास की योजनाएँ व प्रकल्प ग्रामीण परिवेश में ही विकसित किए जाने चाहिए न कि महानगरीय विश्वविद्यालयों या उच्च तकनीकी संस्थानों में अन्यथा इन संस्थानों में प्रयोगशालाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किए जाएँ।

गाँव के विकास के लिए स्वेच्छा से सेवाभावी सरकारी कर्मचारियों तथा अधिकारियों की नियुक्ति की जानी चाहिए। ऐसे व्यक्ति जिनके गाँवों के प्रति आस्था है, श्रद्धा है, भोले-भाले ग्रामीणों के प्रति स्नेह है। उन्हीं ईमानदार, कर्मठ, सेवाभावी अधिकारियों व कर्मचारियों की नियुक्ति कुछ वर्ष ग्रामीण क्षेत्र में की जानी चाहिए।

मंत्र

धरोहर

श्री प्रेमचन्द

संध्या का समय था । डाक्टर चड्डा गोल्फ खेलने के लिए तैयार हो रहे थे। मोटर द्वार के सामने खड़ी थी कि दो कहार एक डोली लिए आते दिखाई दिए। डोली के पीछे एक बूढ़ा लाटी टेकता चला आ रहा था। डोली औषधालय के सामने आकर रूकी। बूढ़े ने धीरे-धीरे आकर द्वार पर पड़ी चिक से झाँका। ऐसी साफ-सुथरी जमीन पर पैर रखते हुए भी भय हो रहा था कि कोई घुड़क न बैठे। डाक्टर साहब को खड़े देखकर उसे भी कुछ कहने का साहस न हुआ। डाक्टर साहब ने चिक के अंदर से गरज कर कहा- कौन है? क्या चाहता है?

बूढ़ा डॉक्टर साहब से हाथ जोड़कर कहा- हुजूर बड़ा गरीब आदमी हूँ। मेरा लड़का कई दिन से... ।

डाक्टर साहब ने सिगार जलाकर कहा- कल सवेरे आओ, कल सवेरे, हम इस वक्त मरीज को नहीं देखते।

बूढ़ा ने घुटने टेक कर सिर को जमीन पर रख दिया और बोला-दुहाई है सरकार की, लड़का मर जाएगा। हुजूर चार दिन से आँखें नहीं खोली....। डाक्टर चड्ढा ने कलाई पर नजर डाली। केवल दस मिनट और समय बाकी था। गोल्फ स्टीक खुंटी से उतारते हुए बोला-कल सवेरे आ जाओ, कल सवेरे; यह हमारे खेलने का समय है।

बूढ़ा ने पगड़ी उतारकर चौखट पर रख दी और रोकर बोला- हुजूर, एक निगाह से देख लें। बस एक निगाह से, नहीं तो लड़का हाथ से चला जाएगा । हुजूर, सात लड़कों में केवल यही एक बच रहा है, हुजूर हम दोनों आदमी रो-रो कर मर जायेंगे, सरकार, आपकी बढ़ती होए दीनबंधु!, ऐसे उज्जड देहाती यहाँ रोज आया करते थे। डाक्टर साहब उनके स्वभाव से खुब परिचित थे। कोई कितना ही कुछ क्यों न कहे पर वे अपनी ही रट लगाते जाएँगे किसी की सुनेंगे नहीं। पर डाक्टर साहब टस से मस नहीं हुए। धीरे से चिक उठाई और बाहर निकल कर मोटर की तरफ बढ़ चले। बूढ़ा यह कहता हुआ उनके पीछे दौड़ा सरकार बड़ा धरम होगा। हुजूर दया कीजिए, हुजूर, बड़ा दीन-दुखी हूँ। संसार मे कोई और नहीं है बाबू जी इसके सिवा!

मगर डाक्टर साहब ने उसकी ओर मुँह फेर कर देखा तक नहीं। मोटर पर बैठ कर बोले कल सवेरे आना। मोटर चली गई। बूढ़ा कई मिनट तक मूर्ति की भाँति निश्छल खड़ा रहा। संसार में ऐसे मनुष्य भी होते हैं जो अपने आमोद-प्रमोद के आगे किसी की जान की परवाह भी नहीं करते, शायद इसका उसे अब भी विश्वास न आता था। सभ्य संसार इतना निर्मम कठोर है, इसका ऐसा मर्म भेदी अनुभव उसे अबतक न हुआ था। वह उन पुराने जमाने के जीवों में था जो लगी हुई आग को बुझाने, मुर्दे को कंधा देने, किसी के छप्पर को उठाने और किसी के कलह को शांत करने के लिए सदैव तत्पर व तैयार रहते थे। जब तक बूढ़े को मोटर दिखाई दी, तब तक वह टकटकी लगाए उस ओर ताकता रहा। शायद उसे अब भी डाक्टर साहब के लौट आने की आशा थी। फिर उसने कहारों से डोली उठाने को कहा। डोली जिधर से आई थी, उधर चली गई। चारों ओर से निराश होकर वह डाक्टर चड्ढ़ा के पास आया था। इनकी बड़ी तारीफ सुनी थी। यहाँ से भी निराश होकर फिर वह किसी दूसरे डाक्टर के पास नहीं गया। किस्मत ठोक ली!

उसी रात उसका हँसता-खेलता सात साल का बालक अपनी बाल-लीला समाप्त कर इस संसार से सिधार गया। बूढ़े माँ-बाप के जीवन का यही एक आधार था। इसी का मुँह देखकर जीते थे। इस दीपक के बुझते ही अंधेरी रात भाँय-भाँय करने लगी। बुढापे की विशाल ममता टूटे हुए हृदय से निकलकर अंधकार के गर्त में आर्त्त-स्वर में रोने लगी।

कई साल गुजर गए। डाक्टर चड्ढा ने

खूब यश और धन कमाया; लेकिन इसके साथ ही अपने स्वास्थ्य की रक्षा भी की, जो एक साधारण बात थी। यह उनके नियमित जीवन का आशीर्वाद था कि पचास वर्ष की अवस्था में उनकी चुस्ती और फुर्ती युवकों को भी लज्जित करती थी। उनके हर एक काम का समय नियत था, इस नियम से वह जौ भर भी नहीं टलते थे। बहुधा लोग स्वास्थ्य के नियमों का पालन उस समय करते थे जब लोग रोगी हो जाते थे पर डाक्टर चड्ढा संयम और उपचार का रहस्य खूब समझते थे। उनकी संतान संध्या भी इसी नियम के अधीन थी। उनके केवल दो ही बच्चे थे एक लड़का और एक लड़की। तीसरी संतान न हुई इसलिए श्रीमती चड्ढा भी अभी जवान मालूम होती थी। लड़की का विवाह हो चुका था। लड़का अभी कॉलेज में पढ़ता था। वही माता पिता के जीवन का आधार था। शील व विनय का पुतला, बड़ा ही रसिक, बड़ा ही उदार, विद्यालय का गौरव, युवक समाज का शोभा। मुखमंडल से तेज छटा निकलती थी। आज उसकी बींसवीं सालगिरह थी। संध्या का समय था। हरी-हरी घास पर कुर्सियाँ बिछी थीं। शहर के कई रईस और हुक्काम एक तरफ, कॉलेज के छात्र दूसरी तरफ बैठे भोजन कर रहे थे। बिजली के प्रकाश में सारा मैदान जगमगा रहा था। आमोद-प्रमोद का समान भी जमा था। छोटा सा प्रहसन खेलने की तैयारी थी। प्रहसन स्वयं कैलाश नाथ ने लिखा था। वही मुख्य एक्टर भी था। इस समय वह एक रेशमी कमीज पहने नंगे पाँव इधर से उधर मित्रों की आवभगत करने में लगा हुआ था। कोई पुकारता कैलाश जरा इधर आना, कोई उधर से बुलाता कैलाश क्या उधर ही रहोगे क्या? सभी उसे छेड़ते, चुहलें करते बेचारे को जरा दम मारने का अवकाश भी नहीं मिलता था। सहसा एक रमणी ने उसके पास आकर पूछा क्यों कैलाश तुम्हारे साँप कहाँ हैं? जरा मुझे भी तो दिखा दो। कैलाश ने उससे हाथ मिलाकर कहा -मृणालिनी इस वक्त क्षमा करो, कल दिखा दूँगा।

मृणालिनी ने आग्रह किया- जी, नहीं तुम्हे दिखाना ही पड़ेगा। मै आज नहीं मानने वाली। तुम रोज कल, कल के लिए कहते हो। मृणालिनी और कैलाश दोनो ही सहपाठी थे। एक दूसरे के प्रेम में पगे हुए। कैलाश को सांपों के पालने, खेलने और नचाने का शौक था। तरह-तरह के सांप पाल रखे थे। उनके स्वभाव और चरित्र की परीक्षा करता रहता था। थोड़े दिन हुए, उसने सांपों पर एक मार्के का व्याख्यान उसने कॉलेज में दिया था। सांपों को नचा कर दिखाया भी था। प्राणिशास्त्र के बड़े से बड़े पंडित उस व्याख्यान को सुनकर दंग रह गए थे।

यह विद्या उसने एक बड़े सपेरे से सिखी थी। साँपों की जड़ीबूटियाँ जमा करने का उसे गरज था। इतना पता चल जाए कि किस व्यक्ति के पास कितनी अच्छी जड़ी है, फिर उसे चैन नहीं आता था। उसे अपने पास लाकर ही चैन की सांस लेता था। यही उसका मुख्य व्यसन था। इस पर वह हजारों रुपये खर्च कर चुका था। मृगालिनी कई बार आ चुकी थी, पर उसे कभी भी सांपों को देखने की इतनी उत्सुकता नहीं हुई थी। कह नहीं सकते आज उसकी उत्सुकता सचमुच जग गई थी या तो वह कैलाश पर अपने अधिकार का प्रदर्शन करना चाहती थी, या उसका आग्रह बेमेल था। उस कोठरी में कितनी भीड़ लग जाएगी और उस भीड़ को देखकर सांप कितने चौकन्ने हो जाएंगे और रात के समय उन्हें छेड़ा जाना कितना बुरा लगेगा, इन बातों को उसे तनिक भी भान नहीं था। कैलाश ने उससे कहा कल जरूर मैं दिखा दूँगा। इस वक्त अच्छी तरह से उन्हें न तो दिखा सकूँगा और न ही कमरे में तिल भर भी जगह बच पायेगी।

एक महाशय ने छेड़ते हुए कहा - दिखा क्यों नहीं देते, जरा सी बात के लिए इतना टाल-मटोल कर रहे हो? मिस गोविन्द हर्गिज न मानना। देखें कैसे नहीं दिखाते हैं? , दूसरे महाशय ने और रट्टा चढ़ाया-मिस गोविन्द इतनी सीधी और भोली हैं तभी तो इतना मजाक करते हैं, दूसरे सुन्दरी होती तो इस बात पर बिगड़ कर खड़ी होती।

तीसरे साहब ने मजाक बनाया- अजी बोलना छोड़ देती। भला कोई बात है, इस पर भी आपका दावा कि मृणालिनी के लिए जान हाजिर है।

मृणालिनी ने देखा कि ये शोहदे उसपर रंग चढ़ा रहे हैं तो बोली- आप लोग मेरी वकालत न करें, मैं खूद अपनी वकालत कर लूँगी। मैं इस वक्त सांपों का तमाशा नहीं देखना चाहती, चलो छूट्टी हुई, इस पर मित्रों ने ठट्ठा लगाया। एक साहब बोले- देखना तो आप सब कुछ चाहें पर वो दिखाए भी तो। कैलाश को मृणालिनी की झेपी हुई सूरत देखकर मालूम हुआ कि इस वक्त इनकार वास्तव में उसे बुरा लगा है। ज्यों ही प्रीतिभोज समाप्त हुआ और गाना बजाना शुरू हुआ। उसने मृणालिनी और अन्य मित्रों को सांपों के दरबे में ले जाकर महुअर बजाना शुरु किया। फिर एक-एक खाना खोलकर एक-एक सांप निकालने लगा। वाह क्या कमाल था। ऐसा जान पड़ता था कि वे कीड़े उसकी एक बात और एक भाव समझते थे। किसी को हाथ में उठा लिया किसी को गरदन में डाल लिया। किसी हाथ में लपेट लिया। मृणालिनी बार-बार आग्रह करती इन्हें गरदन में मत डालो दूर से ही दिखा दो। बस जरा नचा दो। कैलाश के गरदन में सांपों का लिपटते देख उसकी जान निकल रही थी। अब पछता रही थी कि मैंने व्यर्थ में ही इन्हें सांपों को दिखाने को कहा। मगर अब कैलाश एक न सुनता। प्रेमिका के सम्मुख अपने सर्प कला का प्रदर्शन का ऐसा अवसर पाकर वह, कब चुकता। एक मित्र की टिका-टिप्पणी दांत तोड़ डाले होंगे।

कैलाश हँसकर बोला-दाँत तोड़ डालना मदारियों का काम है। किसी के दाँत नहीं तोड़े गए। कहिए तो दिखा दूँ? कह कर उसने एक काले सांप को पकड़ लिया और बोला-मेरे पास इससे बड़ा कोई और जहरीला सांप दूसरा नहीं है, अगर किसी को काट ले तो आदमी आनन-फानन में मर जाए। लहर भी न आये। इसके काटे पर कोई मंत्र

भी नहीं। इसके दाँत दिखा दूँ? मृणालिनी ने उसका हाथ पकड़कर कहा- नहीं, नहीं कैलाश ईश्वर के लिए इसे छोड़े दो। तुम्हारे पैरों में पड़ती हूँ। इसपर एक दूसरे मित्र बोले मुझे तो विश्वास नहीं आता, लेकिन तुम कहते हो, तो मान लूँगा। कैलाश ने सांप की गरदन पकड़कर कहा -नहीं साहब आप आंखों से देखकर मानिए। दाँत तोड़कर वश में किया तो क्या किया। सांप बड़ा समझदार होता है। अगर उसे विश्वास हो जाए कि इस आदमी से मुझे कोई हानि न पहुँचेगी, तो वह हर्गिज न काटेगा।

मृणालिनी ने जब देखा कि कैलाश पर इस वक्त भूत सवार है तो उसने यह तमाशा न करने के विचार से कहा अच्छा भाई, अब यहाँ से चलो। देखा, गाना शुरु हो गया है। आज मैं भी कोई नई चीज सुनाऊँगी। यह कहते हुए उसने कैलाश का कंधा पकड़कर चलने का इशारा किया और कमरे से निकल गई। मगर कैलाश विरोधियों का शंका समाधान करके ही दम लेना चाहता था। उसने सांप की गर्दन पकड़ कर जोर से दबाई। इतनी जोर से दबाई की उसका मुँह लाल हो गया, देह की सारी नसें तन गयी। सांप ने अब तक उसके हाथों से ऐसा व्यवहार न देखा था। उसकी समझ में नहीं आया कि मुझसे वह क्या चाहते हैं। उसे शायद भ्रम हो गया कि मुझे मार डालना चाहते हैं। अतएव वह आत्मरक्षार्थ तैयार हो गया। कैलाश ने उसकी गर्दन खूद दबा कर उसके मुँह को खोल दिया और उसके जहरीले दांत दिखाते हुए बोला जिन सज्जनों को शक हो आकर देख लें। आया विश्वास या अब भी कुछ शक है? मित्रों उसके दांत देखकर आश्चर्य चकित रह गए। प्रत्यक्ष के सामने संदेह को कहाँ स्थान? मित्रों की शंका का निवारण करके कैलाश ने सांप की गरदन ढीली कर दी और उसे जमीन पर रखना चाहा, वह काला गेहूअन क्रोध से पागल हो रहा था। गर्दन नर्म पड़ते ही उसने सिर उठा कर कैलाश की ऊँगली में जोर से काटा और वहाँ से भाग गया। कैलाश की ऊँगली से टप-टप खून टपकने लगा। उसने जोर से ऊँगली दबा ली और कमरे की ओर दौड़ा। वहाँ मेज की दराज में एक जड़ी रखी हुई थी जिसे पीस कर लगा देने से घातक विष भी रफ्फू चक्कर हो जाता था। मित्रों में हलचल पड़ गई। बाहर महफिल में भी खबर हुई। डाक्टर साहब घबराकर दौड़े। फौरन उँगली की जड़ कस कर बाँधी गई और जड़ी पीसने के लिए दी गई। डाक्टर साहब जड़ी के कायल न थे। वह उँगली का डसा भाग नश्तर से काट देना चाहते थे। मगर कैलाश को जड़ी पर पूर्ण विश्वास था। मृणालिनी प्यानो पर बैठी हुई थी। यह खबर सुनते ही वह दौड़ी और कैलाश की उँगली से टपकते हुए खून को रूमाल से पोछने लगी। जड़ी पीसी जाने लगी पर उसी एक मिनट में कैलाश की आँखें झपकने लगीं, ओठ पर पीलापन दौड़ने लगा। यहाँ तक की वह अब खड़ा न रह सका। फर्श पर बैठ गया। सारे मेहमान कमरे में जमा हो गये, कोई कुछ कहता, तो कोई कुछ। इतने में जड़ी पीस कर आ गई। मृणालिनी ने उँगली पर लेप किया। एक मिनट और बीता। कैलाश की आँखें बंद हो गईं।वह लेट गया और हाथ से पंखा झलने का इशारा किया। माँ ने दौड़कर उसका सिर अपने गोद में ले लिया और बिजली का टेबुलफैन लगा दिया।

डाक्टर साहब ने झुक कर पूछा कैलाश कैसी तबियत है? कैलाश ने धीरे से हाथ उठा लिया पर कुछ न बोल सका। मृणालिनी ने करुण स्वर में कहा क्या जड़ी कुछ असर न करेगी? डाक्टर साहब ने सिर पकड़ कर कहा-क्या बताऊँ, मैं इसकी बातों में आ गया। अब तो नश्तर से भी फायदा कुछ न होगा।

आधा घंटा तक यहीं हाल रहा। कैलाश की दशा प्रति क्षण बिगड़ती जा रही थी। यहाँ तक की उसकी आंखे भी पथरा गईं। हाथ-पांव ठंढे पड़ गए। मुख की कांति मलीन हो गई। नाड़ी का कहीं आता पता नहीं। मौत के सारे लक्षण दिखायी देने लगे। घर में कुहराम मच गया। मृणालिनी एक ओर सिर पिटने लगी, माँ अलग पछाड़ खाने लगी। डाक्टर चड्ढा को मित्रों ने पकड़ लिया, नहीं तो वो नश्तर अपनी गरदन में मार लेते।

एक महाशय बोले कोई मंत्र झाड़ने वाला मिले तो सम्भव है जान बच जाए।

एक मुसलमान सज्जन इसका समर्थन किया - अरे साहब कब्र में पड़ी लाशें जिंदा हो गईं हैं। ऐसे-ऐसे बाकमाज पड़े हुए हैं ।

डाक्टर चड्ढा बोले मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गया था कि इसकी बातों में आ गया। नश्तर लगा देता तो यह नौबत ही नहीं आती। बार-बार समझाता बेटा सांप न पालो, मगर सुनता कौन था? बुलाइये अब किसी झाड़फूंक करने वाले को बुलाइये। मेरा सब कुछ ले ले मैं अपनी सारी जायदाद उसके पैरों में रख दूँगा। लंगोटी बाँध कर घर से निकल जाऊँगा, मगर मेरा कैलाश, मेरा कैलाश उठ बैठे। ईश्वर के लिए किसी को बुलाइए।

एक महाशय का किसी झाड़ने वाले से परिचय था। वह दौड़ कर उसे बुला लाये, मगर कैलाश की सूरत देखकर उसे मंत्र चलाने की हिम्मत न पड़ी। बोला अब क्या हो सकता है, सरकार जो कुछ होना था वह हो चुका?

अरे मूर्ख यह क्यों नहीं कहता कि जो कुछ न होना था, वह कहाँ हुआ? माँ-बाप ने बेटे का सेहरा देखा कहाँ? मृणालिनी की कामना तरु क्या पल्लव और पुष्प से रंजित हो उठा? मन के वह स्वर्ण स्वप्न जिनसे जीवन आनंद का स्रोत बना हुआ था, क्या पूरे हो गए? जीवन के नृत्यमय तारिका मंडित सागर में आमोद की बहार लूटते हुए क्या उनकी नौका जलमग्न नहीं हो गई? जो न होना था वह हो गया। वही हरा भरा मैदान था, वही सुनहरी चाँदनी थी एक निःशब्द संगीत की भाँति प्रकृति पर छाई हुई थी, वही मित्र वही समाज था। वही मनोरंजन

के सामान थे। मगर जहाँ हास्य की ध्वनियाँ थी वहीं अब करुण क्रंदन और अश्रु प्रवाह था।

शहर से कई मिल दूर एक छोटे से घर में एक बूढ़ा और बुढ़िया अंगिठी के सामने बैठे आग सेककर जाड़े की रात काट रहे थे। बूढ़ा नारियल पीता था और बीच-बीच में खांसता रहता था। बुढ़िया दोनों घुटनियों में सिर डाले आग की ओर ताक रही थी। एक मिट्टी के तेल की कुप्पी ताक पर जल रही थी। घर में न चारपाई थी न बिछौना। एक किनारे थोड़ी सी पुआल पड़ी हुई थी। इसी कोठरी में एक चूल्हा था। बुढ़िया दिन भर उपले और सुखी लकड़ियाँ बटोरती थी और बूढ़ा रस्सी बनाकर बजार में बेच आता था। यही उनकी जीविका थी। उन्हें न किसी ने रोते हुए देखा और न हँसते हुए। उनका सारा समय जीवित रहने में ही कट जाता था। मौत द्वार पर खड़ी थी, रोने या हँसने का कहाँ फुर्सत। बुढ़िया ने पूछा कल के लिए सन तो है ही नहीं काम क्या करोगे?

जाकर झगडू साह से दस सेर सन उधार माँग लाऊँगा?

उसके पहले के भी तो पैसे दिए नहीं, और उधार न देगा।

न देगा न सही। घास तो कहीं गई नहीं, दोपहर तक क्या दो आने की भी न काटूँगा? इतने में एक आदमी ने द्वार पर आवाज दी। भगत, वो भगत क्या सो गए? जरा किवाड़ तो खोलो। भगत ने उठ कर किवाड़ खोल दिए। एक आदमी ने अंदर आकर कहा-कुछ सुना, डाक्टर चड्ढा बाबू के लड़के को सांप ने काट लिया। भगत ने चौक कर कहा-चड्ढा बाबू के लड़के को! वही चड्ढा बाबू है न जो छावनी में बँगले में रहते हैं? हाँ, हाँ वहीं। शहर में हल्ला मचा है जाते हो तो जाओ आदमी बन जाओगे।

बूढ़े ने कठोर भाव में सिर हिलाकर कहा- मैं नहीं जाता! मेरी बला जाय! वही चड्ढा है, खूब जानता हूँ। भैया लेकर उन्हीं के पास गया था। खेलने जा रहे थे। पैरों में गिर पड़ा था कि एक नजर देख लीजिए, मगर सीधे मुँह से बात तक न की। भगवान बैठे सुन रहे थे। अब जान पड़ेगा कि बेटे का गम कैसा होता है। कई लड़के हैं। नहीं जी, यही तो एक लड़का था। सुना है सबने जबाब दे दिया है। भगवान बड़ा कारसाज है। उस बखत मेरी आँखें से आँसू निकल पड़े थे, पर उन्हें तनिक भी दया न आयी थी। मैं तो उनके द्वार पर होता, तो भी बात न पूछता।

तो न जाओगे? हमने जो सुना था, सो कह दिया।

अच्छा किया, अच्छा किया कलेजा ठंढा हो गया, आंखे ठंढी हो गई, लड़का भी ठंढा हो गया होगा, तुम जाओ। आज चैन की नींद सोऊँगा। बुढ़िया से जरा तम्बाकू ले लें। एक चिलम और पीऊँगा। अब मालूम होगा लाला को! सारी साहबी निकल जायगी। हमारा क्या बिगड़ेगा। लड़के मर जाने से कुछ राज तो नहीं चला जाएगा। जहाँ छः बच्चे गये थे, वहाँ एक और चला गया, तुम्हारा तो राज सूना हो जाएगा। उसकी के वास्ते सब का गला दबा-दबा कर जोड़ा था न। अब क्या करोगे? एक बार देखने जाऊँगा; पर कुछ दिन बाद, मिजाज का हाल पूछुँगा। आदमी चला गया भगत ने किवाड़ बंद कर लिए तब चिलम पर तम्बाकू रख कर पीने लगा।

बुढ़िया ने कहा-इतनी रात गए जाड़े पाले में कौन जाएगा ? अरे दोपहर ही होता तो मैं न जाता। सवारी दरवाजे पर लेने आती तो भी मैं न जाता। भूल नहीं गया हूँ। पन्ना की सूरत आँखों में फिर रही है। इस निर्दयी ने उसे एक नजर देखा तक नहीं। क्या मैं न जानता था कि वह न बचेगा? खूब जानता था। चड्ढा भगवान नहीं थे कि उनके एक निगाह देख लेने से अमृत बरस जाता। नहीं खाली मन की दौड़ थी। अब किसी दिन जाऊँगा और कहूँगा कि क्यों साहब कहिए क्या रंग है? दुनिया बुरी कहेगी, कहे, कोई परवाह नहीं, छोटे आदमियों में तो सब ऐब होते हैं। बड़ों में कोई ऐब नहीं होता। वे देवता होते हैं।

भगत के लिए यह जीवन में पहला अवसर था कि ऐसा समाचार पाकर वह बैठा रह गया हो। अस्सी वर्ष के जीवन में ऐसा कभी न हुआ था कि सांप की खबर पाकर वह दौड़ा न गया हो। माघ-पूस की अंधेरी रात, चैत-बैशाख की धूप और लू, सावन-भादों की चढ़ी हुई नदी और नाले, किसी की भी उसने परवाह न की। वह तुरंत घर से निकल पड़ता था -निस्वार्थ, निष्काम! सैकड़ों निराशों को उसके मंत्र ने जीवन-दान दे दिया था। पर आज वह घर से कदम न निकाल सका। यह खबर सुनकर सोने जा रहा था।

बुढ़िया ने कहा -तमाखू अंगीठी के पास रखी हुई है। उसके भी आज ढाई पैसे हो गए देती न थी। बुढ़िया यह कह कर लेटी। बूढ़े ने कुप्पी बुझाई। कुछ देर खड़ा रहा था जैसे उसकी कोई चीज खो गई थी। जैसे सारे कपड़े गीले हो गए हों या पैरों में कीचड़ लगा हो, जैसे कोई उसके मन में बैठा हुआ उसे घर से निकालने के लिए कुरेद रहा है। बुढ़िया जरा ही देर में खर्राटे भरने लगी। बूढ़े बाते करते-करते सोते हैं और जरा सी खटपट होते ही जागते हैं। तब वह भगत उठा। अपनी लकड़ी उठा ली और धीरे से किवाड़ खोले।

बुढ़िया ने पूछा - कहा जाते हो?, कहीं नहीं, देखता था कि कितनी रात है? अभी बहुत रात है सो जाओ। नींद नहीं आती। नींद काहे को आवेगी, मन में तो चड्ढा के घर पर लगा हुआ है। चड्ढा ने मेरे साथ कौनसी नेकी कर दी है, जो वहाँ जाऊँ। उठे तो तुम उसी इरादे से हो। नहीं री, ऐसा पागल नहीं हूँ कि जो मुझे काँटे बोए, उसके लिए फूल बोता फिरूँ? बुढ़िया फिर सो गई। भगत ने किवाड़ लगा दिए फिर आकर बैठ गया। पर उसके मन की कुछ ऐसी दशा थी जो बाजे की आवाज कान में पड़ते ही उपदेश सुनने वालों की होती है। आँखें चाहें उपदेशक की ओर हों पर कान बाजे की ही ओर होते हैं। दिल में भी बाजे की ध्वनि गूंजती रहती है। शर्म के मारे जगह से नहीं

उठता। निर्दयी प्रतिघात का भाव भगत के लिए उपदेशक था। पर हृदय उस अभागे युवक की ओर था, जो इस समय मर रहा था, जिसके लिए एक-एक पल का बिलम्ब घातक था। उसने फिर किवाड़ खोले। धीरे से, इतने धीरे से कि बुढिया को भी खबर न हुई। बाहर निकल आया। उसी वक्त गांव का चौकीदार गश्त लगा रहा था। बोला कैसे उठे हो भगत? आज तो बड़ी सरदी है, कहीं जा रहे हो क्या? भगत ने कहा नहीं जी, जाऊँगा कहाँ, देखता था अभी कितनी रात है। भला कै बजे होंगे। चौकीदार बोला-एक बजा होगा। और क्या, अभी थाने से आ रहा था तो डाक्टर चड्ढा बाबू के बंगले में बड़ी भीड़ लगी हुई थी। उनके लड़के का हाल तो तुमने सुना ही होगा, कीड़े ने छू लिया है। चाहे मर भी गया हो तुम चले जाओ तो साइत बच जाए। सुना है दस हजार तक देने को तैयार हैं।

भगत- मैं तो न जाऊँ चाहें दस लाख भी क्यों न दें। मुझे दस हजार या दस लाख लेकर क्या करना? कल मर जाऊँगा, फिर कौन भोगने वाला बैठा हुआ है।

चौकीदार चला गया। भगत ने आगे पैर बढ़ाया। जैसे नशे में एक आदमी को अपने देह पर काबू नहीं रहता है पैर कहीं और रखता है और पड़ता है कहीं और। कहता कुछ है, पर जबान से निकलता है कुछ, वही हाल है इस समय भगत का था। मन में प्रतिकार था, पर कर्म मन के अधीन न था। जिसने कभी तलवार नहीं चलाई, वह इरादा करने पर भी तलवार नहीं चला सकता। उसके हाथ कांपने लगते हैं, उठते ही नहीं। भगत लाठी खट-खठ करता लपका चला जाता था। चेतना रोकती थी पर उपचेतना ठेलती थी। सेवक स्वामी पर हावी था। आधीरात निकल जाने के बाद सहसा भगत रूक गया। हिंसा ने क्रिया पर विजय पायी। मैं यूहीं इतनी दूर चला आया। इस जाड़े पाले में मरने की मुझे क्या पड़ी थी? आराम से सोया क्यों नहीं? नींद न आती न सही, दो चार भजन ही गाता। व्यर्थ इतनी दूर दौड़ा आया। चड्ढा का लड़का रहे या मरे मेरी बला से । मेरे साथ उन्होंने ऐसा कौन सा सलूक किया था कि उनके लिए मरुँ। दुनिया में हजारों मरते हैं, हजारों जीते हैं। मुझे किसी के मरने व जीने से क्या मतलब। मगर उपचेतना ने एक दूसरा ही रूप धारण कर लिया था। जो हिंसा से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। वह झाड़फूंक करने नहीं जा रहा था। वह देखेगा कि लोग क्या कह रहे हैं। डाक्टर साहब का रोना पीटना देखेगा, किस तरह से सिर पिटते हैं, किस तरह से पछाड़ खाते हैं, वे लोग तो विद्वान होते हैं, सबर कर जाते होंगे, हिंसा भाव को यों धीरज देता हुआ वह आगे बढ़ा। इतने में दो आदमी आते दिखाई दिए। दोनों बातें करते चले आ रहे थे-चड्ढा बाबू का घर उजड गया, वही तो एक लड़का था। भगत के कान में यह आवाज पड़ी। उसकी चाल और भी तेज हो गई। थकान के मारे पांव न उठते थे। शिरोभाग इतना बढ़ा जाता था, मानो अब मूँह के बल गिर पड़ेगा। मगर इस तरह कोई दस मिनट चला होगा कि डाक्टर साहब का बंगला नजर आया। बिजली की बत्तियाँ जल रहीं थी, मगर सन्नाटा छाया हुआ था। रोने-पीटने की आवाज भी न आती थीं। भगत का कलेजा धक-धक करने लगा। कहीं मुझे बहुत देर तो नहीं हो गई? वह दौड़ने लगा। अपनी उम्र में वह इतना अभी तक तेज कभी न दौड़ा था। बस, यही मालूम होता था कि मानो उसके पीछे मौत दौड़ी आ रही है।

दो बज गए थे। मेहमान विदा हो गए थे। रोने वालों में केवल आकाश के तारे रह गए थे। और सभी रो-रो कर थक गए थे। बड़ी उत्सुकता के साथ लोग रह-रह कर आकाश की ओर देखते थे कि किसी तरह सुबह हो और लाश गंगा की गोद में जाए। सहसा भगत ने द्वार पर पहुँच कर आवाज दी। डाक्टर साहब समझे कोई मरीज आ गया है। किसी और दिन उन्होंने उस आदमी को दुत्कार दिया होता मगर आज वह बाहर निकल आए। देखा एक बूढ़ा आदमी खड़ा है, कमर झुकी हुई है, पोपला मुंह, भौंहे तक सफेद हो गई है। लकड़ी के सहारे कांप रहा था। बड़ी नम्रता से बोले क्या है भाई, आज तो हमारे ऊपर ऐसी मुसीबत आ पड़ी है कि कुछ कहते नहीं बनता। फिर कभी आना। इधर एक महीना तक तो शायद किसी मरीज को न देख सकूँगा।

सुन चुका हूँ बाबू, इसलिए तो आया हूँ। भैया कहाँ है जरा मुझे दिखा दीजिए। भगवान बड़ा कारसाज है। मुर्दे को भी जिला सकता है, कौन जाने अब भी उसे दया आ जाए।

चड्ढा ने व्यथित स्वर में कहा चलो, देख लो, मगर तीन-चार घंटे हो गए, जो कुछ होना था, हो चुका। बहुतेरे झाड़ने फूँकने वाले देख कर चले गए।

डाक्टर साहब को आशा तो क्या होती। मगर बूढ़े पर दया आ गई। अन्दर ले गए । भगत ने लाश को एक मिनट तक देखा। तब मुस्कुराकर बोला, अभी कुछ नहीं बिगड़ा है बाबू जी! यह नारायण चाहेंगे तो भैया आध घंटे में उठ बैठेंगे। आप नाहक दिल छोटा कर रहे हैं। जरा कहारों से कहिए पानी तो भरें।

कहारों ने पानी भर-भर कर कैलाश को नहलाना शुरु किया। पाइप बंद हो गया था कहारों की संख्या अधिक न थी। इसलिए मेहमानों के अहाते के बाहर कुएँ से पानी भर-भर कर कहारों को दिया। मृणालिनी कलश से पानी ला रही थी। बूढ़ा भगत खड़े-खड़े मंत्र पढ़ रहा था। मानो विजय उसके सामने खड़ी थी। जब एक बार मंत्र समाप्त हो जाता तब वह एक जड़ी कैलाश के सिर पर डालता। और न जाने कितनी बार भगत ने मंत्र फूंका। आखिर जब उषा ने अपनी लाल-लाल ऑखें खोली तो कैलाश की भी अपनी लाल-लाल आँखें खुल गईं। एक क्षण में उसने अंगड़ाई ली, पानी पीने को मांगा। डाक्टर चड्ढा ने दौड़कर नारायणी को गले लगा लिया। नारायणी भगत के पावों पर गिर पड़ी और मृणालिनी कैलाश के सामने आँखों में आंसू भरकर पूछने लगी अब तबीयत कैसी है?

एक क्षण में चारों तरफ खबर फैल गईं। मित्रगण मुबारकवाद देने लगे। डाक्टर साहब बड़े श्रद्धा भाव से हर सबके सामने भगत के यश गाते फिरते थे। सभी लोग भगत के दर्शनों के उत्सुक थे। मगर अंदर जाकर देखा भगत का कहीं पर अता पता न था। नौकरों ने कहा यहीं बैठ कर चीलम पी रहे थे। हम लोग तमाखू देने लगे, तो नहीं ली, अपने पास से तमाखू निकाल कर चिलम भरी। यहाँ पर भगत की चारों ओर तलाश होने लगी, और भगत लपका हुआ घर चला जा रहा था कि बुढ़िया के उठने से पहले घर पहुँच जाऊँ।

जब मेहमान चले गए। तो डाक्टर साहब ने नारायणी से कहा-बूढ़ा न जाने कहाँ चला गया। एक चिलम तम्बाकू का भी रवादार न हुआ। नारायणी- मैने सोचा था इसको बड़ी रकम दूँगी।

रात को तो मैंने नहीं पहचाना पर जरा साफ होने पर मैंने पहचान लिया। एक बार एक मरीज को लेकर मेरे पास आया था। मुझे अब याद आता है कि एक दिन खेलने जा रहा था और मरीज देखने से इंकार कर दिया था। आज उस दिन की बात याद करके मुझे इतनी ग्लानि हो रही है उसे मैं प्रकट नहीं कर सकता। मैं उसे अब खोज निकालूँगा और उसके पैरों पर गिर कर अपना अपराध क्षमा कराऊँगा। वह कुछ लेगा नहीं, मैं यह भी जानता हूँ। उसका जन्म यश की वर्षा करने के लिए ही हुआ है। उसकी सज्जनता ने मुझे ऐसा आदर्श दिखा दिया है जो अब जीवनपर्यंत मेरे सामने रहेगा।

गीता बाल भारती विद्यालय गौरवान्वित

सत्र 2019–20 में गीता बाल भारती वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शंकर नगर दिल्ली के तीन विद्यार्थियों –1. प्रियांक वार्ष्णेय, 2. पलक गुप्ता, 3. अश्विनी यादव ने 'नीट' परीक्षा उत्तीर्ण कर मेडिकल साइंस तथा एक विद्यार्थी यश ने 'जी एडवांस' परीक्षा उत्तीर्ण कर आई.आई.टी. कम्प्यूटर सांइस में प्रवेश लिया। यह विद्यालय व विद्या भारती परिवार के लिए अत्यंत गौरव का विषय है।

ये भैया, बहिन विद्या भारती के अखिल भारतीय मंत्री डॉ. शिव कुमार जी से मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद लेने विद्या भारती कार्यालय में अपने विद्यालय के वरिष्ठ आचार्यों श्री राजकुमार शर्मा, श्री राकेश मलिक व श्रीमती मधु गुरुनानी के साथ आए।

डॉ. शिव कुमार जी ने सर्वप्रथम विद्यार्थियों से उक्त परीक्षा की तैयारी, परिणाम, लक्ष्य, लक्ष्य के अनुरूप सतत साधना और डॉक्टर बन जाने के बाद समाज सेवा की दृष्टि निरंतर बनी रहे आदि विषयों पर भावनात्मक संवाद किया। भविष्य में भी इस प्रकार के संवाद की उन्होंने कामना की।

विद्यालय की छात्रा पलक गुप्ता ने डॉ. शिव कुमार जी के साथ संवाद में आई अवधारणा, सार्थकता व सफलता को उत्तम उदाहरण द्वारा समझाने के लिए आनन्द व्यक्त किया। डॉ. शिव कुमार जी ने बताया कि सफलता का यह प्रथम प्रवेश द्वार है। सफलता का पैमाना सभी के लिए एक जैसा नहीं होता। कोई सफलता पैसे में, तो कोई पद में, कोई समाज में अपने जैसा श्रेष्ठ नागरिक तैयार करने में समझता है। इस संबंध में उन्होंने श्री सुदर्शन जी, पूर्वराष्ट्रपति अब्दुल कलाम आदि नामों का उल्लेख किया। कठोर परिश्रम और ध्येय के प्रति समर्पण को मूलमंत्र बताया। एक दीपक और पारस पत्थर में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कौन है, इस बारे में उन्होंने यह बताया कि पारस पत्थर दूसरे को सोना बना सकता है किन्तु अपने जैसा पारस पत्थर नहीं जबकि एक दीपक खुद जलता हुआ अनेक दीपक जला सकता है और अनेक दीपक, अन्य दीपक जला सकते हैं। इस संवाद में उन्होंने अनेक उदाहरणों से सफलता और सार्थकता के बीच अंतर को समझाया। विद्यार्थियों ने इस सफलता का श्रेय माता–पिता और अपने अध्यापकों को दिया जो इस लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक बने।

तप्त है फिर से जवानी

जयंती

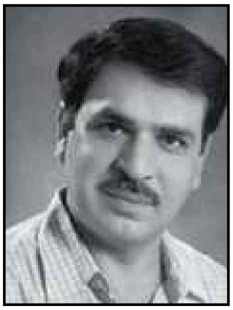

प्रो. हरीश अरोड़ा
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी
विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र
सुप्रसिद्ध साहित्यकार, आलोचक

संपर्क
मो. 8800660646

तुमने पिरोये शिल्प की सारी कलाओं के सुमन,
धन्य-धन्य वीर सेनानी, तुम्हें शत-शत नमन।।

एकता के सूत्र बाँधे, प्रीत के सम्बन्ध से,
बो गये अंकुर विजय का रक्त के अनुबंध से।
लिख गए तुम वक्ष पर विजयोत्सव इतिहास के,
वीर पुत्रों की धरा पर जागरण के छंद से ।
इस समर्पण पर्व की झुकती धरा, झुकता गगन,
धन्य-धन्य वीर सेनानी, तुम्हें शत-शत नमन ।

क्रान्ति के जिस दीप को तुम दे गए अगणित शिखाएँ,
आँधियों में भी अटल हैं, थम गई पागल हवाएँ।
फिर उठी है शंख लेकर, हिन्द की आजाद सेना,
घोष से 'जयहिन्द' के फिर गूँजती सारी दिशाएँ।
पर्वतों को चीरकर फिर मस्त है पागल पवन।
धन्य-धन्य वीर सेनानी, तुम्हें शत-शत नमन।

चीखती संतप्त वाणी, दहकता सरवर का पानी,
गूँजती संदेश बनकर, विश्व में तेरी कहानी।
इन भुजाओं में अभी भी बह रही है लाल धारा,
धधकती मिट्टी धरा की तप्त है फिर से जवानी।
रोकना मत, लक्ष्य को पाने चले उसके चरण,
धन्य-धन्य वीर सेनानी, तुम्हें शत-शत नमन।

राष्ट्र के इस यज्ञ में, जीवन समिध अपना किया,
अपने पौरुष से सदा, माँ-भाल न झुकने दिया।
चीरकर दुश्मन की छाती, कर गए हस्ताक्षर,
मृत्यु के संघर्ष में, अमरत्व तुमने पा लिया।
गा रही शौर्य कथा, सूर्य की हर एक किरण,
धन्य-धन्य वीर सेनानी, तुम्हें शत-शत नमन।

सत्य का भीषण छलावा, छल रहा फिर से हमें,
झूठ का फणधर विषैला, खल रहा फिर से हमें।
जानता हूँ मृत्यु को छलकर कही अदृश्य हो,
हर भुजा में आग बनकर, लौटना है फिर तुम्हें।
संकल्प रक्षाबंध के फिर चाहता है ये वतन,
धन्य-धन्य वीर सेनानी, तुम्हें शत-शत नमन ।

School - A Centre for social change and service

NEP-2020

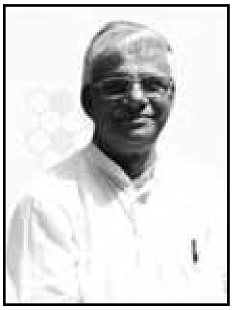

Shri D. Ramakrishna Rao
President, Vidya Bharati
Akhil Bhartiya Sikhsha Sansthan
Education Administrator,
Thinker & Writer
Rtd. Principal & Director
Vijana Vihara Residential School
Gudilova A.P.

Contact
Mob. 8008015950

NEP-20 did come out with a concept that Schools are to be promoted as 'samajik chetna kendras', is an indication to enhance social responsibilities of education institutions. Ofcourse we have been discussing that the education by 2050 is to guide and focus more on life skills and social orientation. This is a step forward in this direction.

Not an Island:

A school is not simple a place where a student is shaped to be academically excellent with an all-round development of personality by building value and spiritual base, but also be trained to become a creative, innovative. , experimentative and producer of knowledge. This is one aspect but other important one is that a school is not an ivory tower or island to work in isolation, but an agent of social change and transformation. We should not forget that educational institution is also a part of the system to bring reforms in the socio-cultural-economic fabric of the village. While defining the goals of education a student is to be integrated to the society and nation at large, was mentioned repeatedly in all the educational polices right since1968.

Influencing mindset of the society:

Schools shall leave a positive influence on the society by shaping the morals, mentalities and culture of the society. It can lead the society in some areas by becoming the chief instrument in a scheme of changes in human life. Vocational or technical education helps is the process of industrialization. Education changes the outlook of the people on social issues and also sharpen the skills and knowledge of the people. Hence mindset of the society can be changed by the school.

Schools should reach out the society beyond the gates in the community and conduct number of programs. Activities are to be designed to bring the society to the school for involvement, enrichment and empowerment of the people

Stake holders with a social responsibility:

Principal, teachers, management, alumni, parents and students can all become agents of social change and service, with proper orientation. All these stakeholders have both individual as well as institutional social responsibility to serve and a role defined.

Some of the suggested activities and enterprises are given here under

1. **Adopting a village or slum by the school:**

At microlevel a village in rural areas and slums or seva basthis in urban dwellings are to be adopted, for which we undertake a detailed socio-cultural-economic survey after which prioritizing the problems, challenges and activities for transformation are chalked out by involving social, cultural and economic leadership of the village as well. Then action plan follows

2. **Undertaking service schemes in surrounding villages/ basthis:**

Students are not only be techno-informative, modern and highly knowledgeable but also have a value base. Hence service activities like balasamskar kendras, vidyardhi vikasa kendras (tution centers), matru mandalis, adult education centers, Vocatianl training/skills development centers, tasks of self reliance are to be planned with the help of parents, staff, students and sajjana shakthi of the society.

3. **Participation in community and cultural festivals of the villages :**

School should link itself to the society by participating in socio-cultural functions of the village. Our cultural, national and social values can be transmitted through these programmes.

4. **Students exposing to the conditions of under privileged sections, along with important service and rural development projects:**

Students should be encouraged to visit the sensitive areas to observe the health, hygiene, living environment and economic conditions to make a feel about their social responsibility. Important service, rural development and transformatory projects are to be visited to get a better understanding about the methods and process of service.

5. **Adoption of surrounding schools for an educational change:**

One or two schools may be adopted and benefits of school complex to enhance cooperation and sharing of resources for initiating a positive educational change in our area. Ways and means along with modus operandi can be thought as per the local needs and requirements. Especially in this technology driven world innovative mechanisms, ICT and other training modules can better be shared.

6. **Better utilization of school's infrastructure:**

School's infrastructure may be better made available and utilized, by conducting summer camps, yoga training, social awakening activity, cultural exchange programmes and skill development activities etc.

7. **Planning pursuits for bringing society to school:**

Involvement of society in different activities which are being held in the school may be an impetus and encourage enthusiastic proud participation to take a clue from time to time from other stake holders of the school. Eg: social and health awareness programmes, Environment and water management training activity etc.

8. **Arranging Tasks for strengthening social harmony.**

When these narrow minded caste approach is occupying the upper minds of the people, Places of worship and schools can be ideal institutions where people can be involving with broad minded submission in all the endeavours. Social harmony (Samajik Samarasatha) in principle and practice at individual, families, institution, work place and social life level is very much essential for unity and integrity of the nation. Education can be a catalyst for this type of change and can bring a big reform.

Focus on sensitive areas

In conclusion we can declare that national goals can also be transmitted and achieved by educational institutions. No school should become a victim of the mad race of competition but by focusing on strategic, sensitive, border and challenging problematic areas, the benefits can reach the unreached people and areas on which the progress of the nation depends.

Let us all work in the field of education for ultimate integration avoiding present differentiation and divisive trends. Ultimately my presentation is just an indication and direction but not all comprehensive. This is only to initiate and activate the thinking process.

Schools have an important role in value education

Schools have an important role in value eduction. But their inmportance should neither be exggerated nor denied altogether. Moral development will be taking place constantly both within and outside the school , influenced by a complex network of environmental factors –home, peer group, media and community at large. The extent to which schools function effectively as training ground for values depends on their physical condition and the professional idalism of teachers among other things. To the extent the school factors –teacher-teacher, teacher-pupil, teacher-parent and the various other group interactions, the school traditions and values, the curricular and co-curriculor activites, the school tone and climate-influence the moral development of children, schools have a responsibility in excercising control over these and creating condusive conditions for the moral development of children.

DECODING NEW EDUCATION POLICY (NEP)

NEP-2020

Shri Madhu Ved
Educationist
Former principal sr Sec school
Director JPS
Gen. Sec. CED-GTE

Contact
Mob. 9899211336

After 34 years of long delays and wait but recent 6 years of discussions, debates deliberations cabinet finally approved of NEP 2020. It is undoubtedly a wonderful visionary document. Lets welcome it try to be open minded to ADOPT DOABLE IDEAS N AVOID UNDOABLE IDEAS.

We are required not to be CYNICAL ,though it is my perspective only ,you are open to decide what you can start with what you can ignore. Moreover it is a policy not govt guidelines. It will take time to be implemented because of so many wishful ideas described in a draft. Here I will not touch all details but definitely share some of the important details, through the eyes of a lay man.

In fact NEP is set to bring numerous changes to the landscape of both school and higher education. It addresses many growing developments which is imperatives to our country and moreover its aligned to the 2030 Agenda for SUSTAINABLE EDUCATIONAL DEVELOPMENT. This policy is built on the fundamental pillars of ACESS, EQUITY, QUALITY, AFFORDABILITY AND ACCOUNTABILITY.

It recommends many TRANSFORMATIONAL IDEAS for our youth at school n college .

It promotes active PEDAGOGY, DEVELOPMENT OF CORE CAPACITIES AND LIFE SKILLS, 21st century skills in particular EXPERIMENTAL LEARNING at all stages, LOW STAKE BOARD EXAMINATION, HOLISTIC PROGRESS CARD, TRANSFORMATION IN ASSESSMENT TO PROMOTE CRITICAL AND HIGHER ORDER THINKING (HOT) SKILLS, REFORMS IN TEACHER EDUCATION etc.

For conceptual clarity, foundation years of education will be in mother tongue. This is a WONDERFUL STEP.

Focus will be on understanding rather than ROTE LEARNING.

5+3+3+4= 15 years of schooling.

5 years means Play way+nursery+kg+1st+2nd classes

+3 years means 3rd,4th,5th classes

+3 years means 6th,7th,8th classes

+4 years 9th,10th,11th,12th classes

CODING VOCATIONAL EDUCATION INTERNSHIP FROM 6th class onwards. No doubt a wonderful step and most appreciable one . IT WILL MAKE OUR STUDENTS EMPLOYABLE N SKILLED.

In addition there will be NO STREAMS for senior classes, means Liberty in choosing subjects. Now there will be BLENDING OF SUBJECTS FROM 9th class onwards. For example phychology can be opted with music and biology or Physics can be opted with economics or computer. This WILL MAKE OUR YOUTH MORE PASSIONATE ABOUT THEIR JOBS .

Focus on teachers recruitment and empowerment and on career growth opportunities which are key features. Also plus point is RIGHT TO EDUCATION (RTE) FROM 3RD YR TO 18TH YR, earlier it was till the age of 14 years. The best part for senior students will be NO RIGID SEPARATION BETWEEN ART AND SCIENCE, BETWEEN CURRICULAR

AND EXTRA CURRICULAR ACTIVITIES, BETWEEN VOCATIONAL AND ACADEMIC STREAMS. 10+2 is replaced by new age wise grouping .

NEP promotes MULTILINGUALISM and TECHNOLOGY BASED education.

UG DEGREE WILL HAVE MULTIPLE EXIT OPTIONS. In case if student has to leave college for some reason then he can continue further studies even after break, from.where he left off. A certificate will be given after the completion of first year, diploma after the second year complition and degree after third or fourth years of completion.

MPHIL COURSES WILL BE DISCONTINUED. (I myself have certain reservation regarding this)

There will be shared rules for private and public higher educational institutions.

After FOUR YEAR DEGREE PROGRAMME student CAN DO masters degree then a PHD DIRECTLY WITHOUT AN MPHIL. Same with foundation classes. THE FOCUS WILL BE ON LITERACY AND BASIC NUMERACY.

Though Examination will be at low stakes but there will be test of actual knowledge instead of ROTE LEARNING. REPORT CARDS WILL BE A COMPREHENSIVE REPORT ON SKILLS AND CAPABILITIES INSTEAD OF JUST MARKS AND STATEMENTS.

New opportunities of jobs will be opened in Agriculture area. There will be blend of traditional knowledge and emerging technologies in new innovative ideas . TECHNICAL SKILLS WILL ENHANCE THE MARKET.

Our youth will be FUTURE READY IF NEP is implemented in its true spirits. It will set up the foundation for 21st century india A NEW INDIA . I totally agree with the concept of WHAT TO THINK TO BE REPLACED BY HOW TO THINK. Every child will get space to follow his passion. CREDIT BANK is the most fascinating facility for seniors. RESKILL AND UPSKILL IS THE BEAUTY OF NEW CHANGES IN NEP.

Translation and interpretation will create a new genre for job seekers, which is among the key areas for jobs.

Our youth will be FUTURE READY IF NEP is implemented in its true spirits. It will set up the foundation for 21st century india A NEW INDIA . I totally agree with the concept of WHAT TO THINK TO BE REPLACED BY HOW TO THINK. Every child will get space to follow his passion. CREDIT BANK is the most fascinating facility for seniors. RESKILL AND UPSKILL IS THE BEAUTY OF NEW CHANGES IN NEP.

The true spirit of NEP approved on July 29 ,2020 by THE UNION CABINET is Teach to Transform, Educate to Empower and Learn to Lead.

But there is still a waiting period for the policy to be put into practice.

I hope I have decoded the major areas, if read carefully there will be no doubts in understanding NEP.

I am always open for further discussion debate on the content.

YOGA , THE HOLISTIC SOLUTION

Yoga offers a holistic solution . The first level handling is at the body level to use techniques of relaxation. Simple asanas provide mastery over different groups of muscles by increasing the elasticity of the muscles fibers and releasing tentions and stresses . The releases of stresses at body level will give up deep rest to all the organs and systems in our body. Thereby, the basic defence system will have much greater opportunity for a faster recoup and revitalisation than in a stressed-up condition.

The second level operation is slowing and balancing of breath. Sukha Pranayam, Nadi suddhi and Bhramari can slow down the breath effectively and restore balance of breath between the two nostrils. Associating a feeling of deep relaxation can work winders especially in cancer cases.

National Education Policy and Teacher Education

NEP-2020

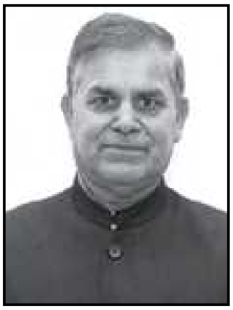

Shri Deshraj Sharma
Educationist, Writer,
Adminstrator, Principal
Mahamnatri Vidya Bharati
Uttar kshetra

Contact
Mob. 9478000698

The National Education Policy 2020 needs to be implemented by teachers for it to be highly effective as required with active involvement of educators who are to be multidisciplinary and multilingual themselves.

We know that the Govt. of India announced a long-awaited education policy on July 29, 2020 to improve access, equity and quality of education in the country.

The NEP is visionary, practical, progressive and comprehensive. It has a range from early childhood to higher education, professional education to vocational education, teacher training to professional education.

As policy envisages that the teacher must be the center of the fundamental reforms in the education system, the new education policy must help reestablish teachers, at all levels as the most respected and essential members of our society because they truly shape our next generation of citizens. It must do everything to empower teachers and help them to do their jobs as effectively as possible.

As the teachers are the major factors infringing about the change in this new pedagogical structure, consistent training would have to be conducted and concurrent change will be expected to be made. New pedagogical and curricular Structure of school education (5+3+3+4) 3 years in anganwari/ pre-school and 12 years in school is sought to be introduced. In the secondary stage there will be multidisciplinary study, critical thinking, flexibility and flexibility in choice of subjects. Experiential learning in science, mathematics, art, social science and humanities in the Middle stage. Play discovery, activity based and interactive classroom learning in preparatory stage. Foundational stage will consist of multilevel i.e. play /activity based learning. To achieve the purpose of the policy, teachers should be the experts in the field of art integration, multidisciplinary, artificial intelligence, experiential learning and they should know how to develop, design thinking, problem - based learning, cooperative learning, gamification, project-based learning, and soft skills.

How teachers can transform the learning process ?

Teachers can transform the learning process if the mapping of curriculum is done by them. The focus will be on practical application- based learning. Stress shall be on the importance of literacy and numeracy skills. So it is supposed that teachers will have to rework in these areas to bring about a transformation in the teaching strategies so that these foundational skills can be developed, strengthened and achieved by Grade 3. Innovative teaching would be essential to achieve reading, writing and learning of basic mathematical concepts.

Wherever possible, students in primary and preferably up to 8th should be taught in home language/mother tongue/ Local language to achieve the best outcomes. So teachers should be encouraged and empowered to be bilingual to achieve the best outcomes.

To discourage rote- learning and memorizing teachers will have to adopt the new approach of shifting from syllabus completion to defining learning goals through innovative pedagogy. Teachers must look at integrating subjects, streams and technology

"Regarding the 360-degree assessment of a student, progress cards will include self-assessment, peer-assessment and teacher assessment. A multi-dimensional report card will be generated that will reflect the progress and uniqueness of each learner in the cognitive, affective and psycho-motor domains."

to create a holistic learning experience for students along with the component of digital literacy, scientific temper and computational thinking.

Regarding the 360-degree assessment of a student, progress cards will include self-assessment, peer- assessment and teacher assessment. A multi-dimensional report card will be generated that will reflect the progress and uniqueness of each learner in the cognitive, affective and psycho-motor domains.

Skill/ Vocational training and coding will start from Class 6. Accordingly all the teachers should have the knowledge of ICT and it will be necessary to identify the skills in every teacher and parents to achieve the same.

It is recognized that there may be several pedagogical approaches internationally for teaching particular subjects. NCERT in collaboration will SCERT, NIOS etc. will study, research, document, and compile the varied international pedagogical approaches for teaching different subjects and make recommendations on what can be learnt and assimilated from these approaches into the pedagogies being practiced in India.

As per the new policy, by 2030, the minimum degree required for teaching will be a four-year integrated BEd. Apart from this, the Teacher Eligibility Test (TET) will also be changed as per the new school system.

Earlier, the TET was divided into two components — part 1 and part 2. Now that the school structure has been divided into four parts — foundational, preparatory, middle, and secondary — TET will also be developed accordingly. For subject teachers, suitable TET or the National Testing Agency (NTA) test scores in the corresponding subjects will also be taken into account for recruitment. The NTA will hold exams for all subjects and a common aptitude test.

Those who qualify TET will have to give a demonstration or appear in an interview, and show their knowledge of the local language, as per the new policy. As per the NEP, “Interview will become an integral part of teacher hiring”. These interviews would also assess comfort and proficiency in teaching in the local language. It would be a must for teachers in private schools as well to qualify TET.

Teacher education is vital in creating a pool of schoolteachers that will shape the pew generation. Teacher preparation is an activity that requires multidisciplinary perspectives and knowledge, formation of dispositions and values, and development of practice under the best mentors. Teachers must be grounded in Indian values, languages, knowledge, ethos, and traditions including tribal traditions, while also being well-versed in the latest advances in education and pedagogy.

In order to improve and reach the levels of integrity and credibility required to restore the prestige of the teaching profession, the Regulatory System shall be empowered to take stringent action against substandard and dysfunctional teacher education institutions (TEIS) that do not met basic educational criteria, after giving one year for remedy of the breaches. By 2030, only educationally sound, multidisciplinary, and integrated teacher education programmes shall be in force.

Since schools will need teachers who can teach in multiple languages and have knowledge of new-age courses like computational thinking, coding etc., introduced at the school level under the NEP, BEd courses will also be changed accordingly. The BEdcourses will be of four-year duration. Dual BEd degrees with a focus on one language and having bilingual lectures will be offered too. BEd programmers will allow specialization in the education of ‘gifted children’.

One and two-year BEd options will also be available. Two-year-BEd will be for candidates having a Bachelor’s degree, and one-year BEdprograms will be offered only to those who have completed the equivalent of four-year multidisciplinary Bachelor’s degree or who have obtained a Master’s degree. These candidates will be later hired as subject teachers in the area of specialty (or the subject pursued at UG or PG level).

"Since schools will need teachers who can teach in multiple languages and have knowledge of new-age courses like computational thinking, coding etc., introduced at the school level under the NEP, BEd courses will also be changed accordingly."

Additionally, shorter post-B.Ed. certification courses will also be made widely available, at multidisciplinary colleges and universities.

All BEd program will include strong practicum training in the form of classroom teaching at local schools. All BEd programs will also emphasize the practice of fundamental duties of the Indian Constitution along with other constitutional provisions while teaching any subject or performing any activity. It will also appropriately integrate environmental awareness and sensitivity towards its conservation and sustainable development. It is recognized.

In order to maintain uniform standards for teacher education, the admission to pre-service teacher preparation programs shall be through suitable subject and aptitude tests conducted by the National Testing Agency, and shall be standardized keeping in view the linguistic and cultural diversity of the country.

Teachers who have already been hired will be expected to participate in at least 50 hours of continuous professional development (CPD) every year.

The merit-based structure of tenure, promotion, and salary structure will be developed. The parameters will be developed by each state and will include peer reviews, attendance, commitment, hours of CPD, and other forms of service to the school and the community.

A common guiding set of National Professional Standards for Teachers (NPST) will be developed by 2022, by the National Council for Teacher Education. The professional standards will be reviewed every 10 years.

The Kothari Commission, 1966 said, 'Of all the different factors which influence the quality of education and its contribution to national development, the quality, competence and character of teachers are undoubtedly the most significant.' The NEP 2020 also says, 'Teachers truly shape the future of our children – and, therefore, the future of our nation' thereby implying that teachers play the most important role in nation-building by creating high quality of human resource in their classrooms.

Based on the recommendations of NEP 2020 on teacher education and training, a National Curriculum Framework for Teacher Education, NCFTE 2021 will be drafted to guide all teacher education, pre-service and in-service, of teachers working in academic, vocational & special education stream.

TERM EVALUATION

There is some confusion concerning the meaning of the term evaluation . In some instances, it is used as a synonym for the terms like examination, periodical test, used of objective type test or measurement. When the meaning of term evaluation analysed, it is to understand how and why these misconceptions regarding it have crept in the minds of teachers.

From an insrtuctional standpoint, evaluation may be defined as a systematic process of determining the extent to which instructional objectives are achieved by pupils. There are four important aspects of this definition. First, evaluation implies a systematic process as opposed to the casual tests and observations. Secend, evaluation always presupposes some instructional objectives. Without previously determined and defined objectives, it is impossible to judge the nature and extent of pupil learning. Thiird, evaluation is much more comprehensive and inclusive term than measurement. In includes both qualitative and quantative descriptions of pupil behaviour plus value judgement concerning the worth and desirability of that behaviour . Measurement is limited to quantitative descriptions of pupil bevavior and excludes qualitative discriptions and judgements concerning the worth of values of the behaviour measured.

PRIMARY EDUCATION IN MOTHER TONGUE: NATIONAL EDUCATION POLICY

NEP-2020

Smt. Vidya Deshpande
M.A. in Philosphy,
Mangement Comitee Member
Maharshi Kave Stree Sanathan
Special Interest-Quality Education
& Skill Education for all

Whenever there is a discussion on the medium of instruction for pre-primary and primary school education, mother tongue has always been the preferred medium of instruction. We need to focus on two important concepts first Education and second Mother tongue. Let's begin with the analysis of these concepts in the modern context. The challenges have taken a different shape with the changing technologies, modes of transport, economy, needs of society, lifestyle etc. The role of education too has undergone a lot of change. It is now accepted that education is the only key to prosperity and stability. Any job one seeks or any career one intends to persuade implies specific knowledge or some training. Thus, some kind of formal education is essential for everyone. In a way schooling is inevitable for everyone.

Education starts at a very early stage. New education policy acknowledges the role of pre-primary education too. It starts right from the age of 3 of a child. The policy has a structured plan of education at this stage. It covers first five years of schooling. These are the years of building the basic abilities of a child which is supposed to provide good foundation. The next three years are treated to be a preparatory phase of formal education.

Many physical, mental and intellectual abilities are to be developed in these two stages. Medium of instruction is an important component for these stages. Usually the language one speaks at home is treated to be the most suitable medium for communication because a child is familiar with it. It is very easy to follow the instruction and act accordingly. This is true in a simple scenario but the times aren't so simple now. A child is exposed to various elements that influence his understanding like TV or cell phone, which are very common examples. Similarly, the mother tongue too is influenced by number of different variables. Parents and other members of the family too have exposure to these things which keep making impressions and enhancing expectations of all the stakeholders.

The concept of mother tongue itself has undergone a great change. The country like ours enjoys maximum diversity in all possible way, has to tread very carefully on the issue of mother tongue. We have a number of spoken languages that have their own scripts. Our states have their identity attached to regional languages but every few kilometers, the shade and colour of this language changes. Only the script remains same, the usage and language games are different. Connotation and even syntax changes to the extent that the language becomes unintelligible too. Even if one has good knowledge of Hindi, understanding it in Haryana or in Rajasthan is difficult. The entire Hindi belt is the best example of this phenomenon. So is the case of Marathi. Standard Marathi seems like a foreign language in many parts of Maharashtra as various versions of Marathi across the state have a number of local flavors to it.

Besides this every state has many dialects which have no scripts. Thus, use of the language known to all, becomes impossible. All have to be brought to the level of common language. If it is not available, it is to be identified. Text books are to be prepared, exams are to be conducted, instructions are to be given, and oral skills

are to be judged. There are many such tasks to be completed and children are to be made ready for higher education and ultimately to perform one's role in the society. A very senior government official working in tribal area while discussing the issue of separate books for tribal children stated that such policy will isolate them more. He was of the opinion that these students will have to interact and compete with the rest of the students when they seek jobs or undertake activities for their sustainability. They will have to learn the standard language of the state. Ultimately one learns the language needed for communication. All the officials who get transferred throughout the country, learn languages which they use as a vehicle to communicate. They undertake the learning exercise every time when they get transferred to a new place. Young professionals too have to learn new language because their careers path can take them to different countries. They acquire the working knowledge of the new language.

Even our workers move throughout the country in search of good opportunities. They too acquire the skill of communicating in the regional dialects. They shift along with their families too to the new destination. The children join the local schools. One such article described the situation where teachers and children found an interesting solution to a problem. Migrant children were finding it difficult to learn the vernacular language which has a separate script. The local children taught the compulsory vernacular language to migrant children and the migrant children helped them with Hindi as they being from Hindi belt. The most interesting aspect is that the results of both the subjects improved to the pleasant surprise of teachers. The story came from a remote village of Kerala.

Arunachala Pradesh brought a very interesting aspect of the issue to light in one of the visits. If one has good knowledge of Hindi, one faces no problem in the state as all could converse in Hindi. One has to carefully listen to them as their pronunciation is influenced by their mother tongues. One elderly lady from Tawang caught our attention. When she found that we were from Maharashtra, she told us about her visit to famous world heritage site of Ajanta caves. These caves depict some events of Buddha's life and Buddhism being the religion of majority of people, they always wanted to visit the caves. We thought she spent a considerable time outside the Arunachala Pradesh as she was speaking fluent Hindi. On the contrary, she told us that as there are a number of dialects spoken by many small groups of people in the state which are totally different from each other. Hindi being one such language which is understood by all, communication without it is next to impossible. Probably due to the need of common language, English had been selected as the medium of instruction at all the levels in the state historically.

significant point to be brought to the notice is of all is, If we travel in the border areas of any state, one finds a unique shade of language. There is a very fascinating fusion of languages where both the languages influence each other to the extent of changing the syntax and the language games. Expressions change, words are borrowed from each other to a great extent, intonation changes, most of the people become bilingual too but many of our states share their borders with multiple other states at the same time. Thus, these phenomena can be experienced in all such areas and in varied such complexities.

There are many countries where people speak one language through out the length and breadth of the territory. It may be a practical option for them but in the country like ours where diversity is a fact, we need to handle the challenge with a deft hand. We cannot let our education system to be an experimental ground for a theory like this unless the data comes from a nation as diverse as ours. It would hurt our society beyond imagination. We need to develop our own model to suit our reality.

We need to evolve our own model according to our requirements and it may take its own time to evolve. There is no simple solution to such a complex phenomenon. It would be fallacy to jump to the answer. Social realities cannot be explained by using just one theory. Very few theories are that inclusive which have capacity to interpret all the aspects of a complex reality like our society. The huge number of students too pose a challenge which cannot be ignored easily. Thus, we need to be very careful in weighing our options while selecting a social theory or a hypothesis in the field of education which has a far-reaching effect.

We need to focus on the quality Education imparted. We need to train our teachers well to make use of modern technology and the changed role of education. Our society needs a variety of roles to be played for a smooth running. Ours is a progressive society and there will not be permanent kind of jobs any more. Education too will be an ever-changing system. Our educators and the entire system should be a changing phenomenon; all need to keep catch up with the needs of the system. An effective and continuous upgrading of skills of all the components would be a key.

Re-examining the Regulatory System of Indian Schools

OPINION

Shri Chandra Bhushan Sharma
Professor of Education at the School of Education, Indira Gandhi National Open University, New Delhi

Contact
Mob. 9810512605

Government as well as private providers are sharing the responsibility of providing schooling facility to the children of the country. So, both the government as well as private providers are competitors in the business of schooling. However, the government is the regulator as well. The question that most stakeholders are raising is that the government is not providing level playing field. It changes the goal post as per its convenience. There is a strong demand from the parents, teachers and private school owners that government either be a regulator or a player. It cannot be both.

Why we need an independent Statutory and Autonomous body

All stakeholders want an independent and reliable data on schools in the country. This will help them choose the best schools for their children. There are two major providers of education in the country – the government (i.e. public) and the private providers. The private providers are mostly 'not for profit' organisations who promise to provide education without making any profit. No one believes the private providers that they are not making profit – either for someone or an organisation. Most of the schools are established through a Trust or a Society, established and registered through a deed approved by the Registrar of Societies. Ask anyone who has anything to do with schooling and he/she will say private schools are making huge profits which is siphoned off for the benefit of individuals or organisations. If the majority perception is so then why have the Governments not regulated to halt this malice?

Government is a major provider of school education and it is the regulator as well. The power to regulate school education is entirely with the governments – Central and States. As education is in the Concurrent list both the governments have right to regulate education. The Central Government regulates for the institutions established by the Ministry of Education, GoI and the State Governments legislate for the institutions established in theirrespective state. But the Governments are education providers too. It has been observed and questioned as well that every time the Government defaults it changes rules and regulations. Let's take the example of the Right to Education Act 2009. The Act promised to provide a trained teacher to all children in five years i.e. 31st March 2015. This promise was not fulfilled till 2017 because the government did not provide adequate facilities to in-service teachers to get trained. The major reason was that a large number of private schools where untrained teachers were teaching were with schools said to be opposed to the ideology of the government of the time i.e. Congress. The Government in 2017 went to the Parliament and amended the Act and said we will provide training opportunities to all teachers, teaching in public or private schools to acquire a Diploma in Elementary Education (D.EL. Ed) by 31st March 2019. Nearly thirteen lakh in-service teachers were trained through distance mode by the National Institute of Open Schooling (NIOS) during 2nd October 2017 to 31st March 2019. This was passed in supersession of the Justice J. S. Verma Commission (a commission established by the Hon'ble Supreme Court) reportwhich was accepted by the government, saying first teacher education degree cannot be acquired through distance mode. The decision of the Government in 2017 was a great relief to the thirteen lakh teachers but what is

"It is suggested that an autonomous body by the name of School Education Commission (SEC) be established through an Act of Parliament. This will have the same status for school education that of the University Grants Commission has for higher education."

important for our case here is the erroneous manner in which governmentsregulate based on political considerations. Why was the RTE Act passed in 2009 if the Government did not have the will to undertake training of teachers? And why did the Government supersede the J. S. Verma Commission recommendations if the recommendations were in the interest of the students and school system. All the decisions are questionable. It can be summarised that the decisions are apparently political and/or hasty without considering larger pedagogic issues. Children and their welfare and learning is nowhere a matter of concern for the decision makers.

It is suggested that an autonomous body by the name of School Education Commission (SEC) be established through an Act of Parliament. This will have the same status for school education that of the University Grants Commission has for higher education.

The Organisational Structure of SEC

The SEC will be a small body with a very slick staff structure. Unlike the existing statutory bodies it should remain away from inspections and accreditation. Bodies which have been given the powers to regulate and accredit both, have slipped into corruption very fast. The case of National Council for Teacher Education (NCTE) is in point. The NCTE was created in 1993 and started functioning in 1995. The NCTE developed norms and regulations for establishing teacher training colleges and frequently changed the norms, obviously on the instructions of the government or some strong pressure. The NEP 2020 has to agree with the observation of the Justice J. S. Verma Commission (2012) that "… - over 10,000 [colleges] in number are not even attempting serious teacher education but are essentially selling degrees for a price. Regulatory efforts so far have neither been able to curb the malpractices in the system, nor enforce basic standards for quality." (NEP 2020, Section 15.2). The job of the SEC will be to continuously interact with the stakeholders of the school sector and design regulations for school education. So a major activity of SEC will be to research on various areas of schooling for developing regulatory framework for school education. SEC will hire services of researchers through research grant funding to feed it with latest trends, to make researched and considered decisions. The existing bodies like the CBSE and state boards will keep accrediting schools as per the norms and regulations developed by SEC. Disputes will be settled by the government departments or the courts but SEC will not get into dispute settlement as well.

The Organisational Structure of SEC
The Governing Council
The Executive Council
Chairperson SEC
Vice Chairperson SEC (Three)
Administrative Officer; Finance Advisor; Directors (Five)

The position of Chairperson, Vice-Chairpersons, Administrative officer, Finance Advisor and the Directors will be filled on deputation basis for a pre-decided period. The position of Directors will be Director Academic, Director Research, DirectorVocation Education, Director Quality Assurance and Director Teacher Education. The Academics department will have four verticals each looking after Early Childhood education, Middle Level Schooling, Secondary Schooling and Special Education. The Vice-Chairpersons will be nominated by the Chairperson on the pattern practiced in the Indira Gandhi National Open University in the appointment of Pro-Vice-Chancellor. Each of the departments will have a structure decided by an expert committee.

Funding SEC

A major tool of arm twisting institutions funded by government is to cut the budget or release the budget so late that institutional head has to run from pillar to post for grants. While establishing the Indira Gandhi National Open University the

There are examples from other parts of the world where institutions funded by the government have exercised complete autonomy from government pressure in spite of the budget coming from the public exchequer. Governments like to make acts and Memorandum of Association of institutions which put institutions in a subservient position and ultimately fail to perform. Public funds should be allowed to flow to public institutions without obstacles from the party in power and the government of the day.

The NCERT had developed learning outcomes and also conducted the National Assessment Survey (NAS). For a transparent and rigorous process the learning outcomes should be developed by an agency other than the one which designs the curriculum for inculcating the competencies which are identified. The schools are assigned with the task to transact the curriculum.

government had made a conscious effort to free IGNOU of this constant irritation and made a provision through which the annual budget of IGNOU came directly from the Ministry of Education and the audited report of IGNOU is placed before the Parliament of India. There are examples from other parts of the world where institutions funded by the government have exercised complete autonomy from government pressure in spite of the budget coming from the public exchequer. Governments like to make acts and Memorandum of Association of institutions which put institutions in a subservient position and ultimately fail to perform. Public funds should be allowed to flow to public institutions without obstacles from the party in power and the government of the day. One method can be to fix a pre-agreed amount with five percent increase every year or the amount be fixed by the CA&G on the basis of annual audit report. It may not be a bad idea that very school student be asked to pay five rupees a year as SEC charges. Every two years one rupee may be added to the charge. We can ensure transparency through rigorous audit mechanism.

Quality Maintenance in Schools

The SEC will also undertake design and development of 'learning outcomes' and the National Curriculum Framework (NCF) for school education. The NCERT had developed learning outcomes and also conducted the National Assessment Survey (NAS). For a transparent and rigorous process the learning outcomes should be developed by an agency other than the one which designs the curriculum for inculcating the competencies which are identified. The schools are assigned with the task to transact the curriculum. A third party should assess whether the competencies as identified in learning outcomes are reflected in the text books are properly transacted and the competencies developed. Identification of the agency to conduct NAS should be left to the SEC. The score of the NAS will give the SEC feedback to review and revise the learning outcomes.

SEC	NCERT	Schools	Third Party (private)
Develop leaning outcomes and National Curriculum Framework (NCF)	Develop text books	Transact curriculum	Conduct NAS

The Governing Council

The following may be the members of the Governing Council of the School Education Commission

i. Chairman SEC — Chairman

ii. Secretary, SE&L, Ministry of Education, — Member

iii. Member CABE,
Expert in School Education — Member
(To be nominated by the MOE)

iv. FICCI Representative — Member

v. CII Representative — Member

vi. Chairman CBSE/NIOS — Member
(Alternatively to be invitedby Chairman SEC for a period of 3 years)

vii. Director, NCERT — Member

viii. Chairman of a State School Board — Member
(To be nominated by the Chairman SECfor a period of 3 years)

ix. Professor of Education
(Eminent Educationist) — Member
(To be nominated by the Chairman SEC for a period of 3 years)

x. Vice-Chairman SEC — Member
(One of the Vice-Chairman to be nominated by the Chairman SEC for a period of 3 years)

xi. Director Academic, SEC — Member
Secretary

Executive Council

The Executive Council of SEC may have the following Members:

i. Chairman SEC — Chairman (One)

ii. Representative of Secretary SE&L — Member (One)

iii. Vice-Chairman SEC Member (up to Three)

iv. Directors SEC Member (Five)

v. Representatives of Govt./Public Schools: KendriyaVidyalayaSangathan, JawaharNavodayaVidyalaya, Army/Sainik Schools, State Govt. Schools, Central Tibetan School Association (CTSA), Railway Schools, Members (Three)

vi. Representatives of Private Schools: Network of schools with more five hundred schools: DPS/DAV/Vidya Bharti Member (Three)

vii. Eminent Educationists Member (Three)

viii. Media specialist (Expertise in Educational Media) Member (One)

ix. Psychologist (Child psychology/Counsellor) Member (One)

x. Special Educator (Representative of RCI &MoSJ) Member (Two)

xi. Vocational Education (Rep of Min. of Skill) Member (Two)

xii. Sports specialist Member (One)

xiii. Artists (Creative areas: Painting, Dancing etc.) Member (Two)

xiv. Finance Expert (Experience of auditing school/Board) Member (One)

xv. Finance Officer, SEC Member (One)

xvi. Administrative Officer SEC Member Secretary (One)

[Eminent educationists: Professor of Education (serving or retired); Awarded School teachers/principals]

{It will be ensured that half the members are female. A proper mix of science, arts,vocational, co-curricular areas will be kept in mind while nominating members.}

Location of SEC

The SEC will be an autonomous organisation continuously working in isolation without the political interference of the government on improvement of the school system of the country. The office of SEC will be a residential campus which may be situated in a town like Ranchi or Raipur which are upcoming and can provide one hundred acres for the establishment of the SEC.

In Conclusion

The Government reimburses school fees of its employees. Common person is questioning this decision of the government. On the one hand we pay education cess to subsidise primary and secondary education on the other hand employees who get salary from public exchequer are reimbursed for getting their children educated in private schools. Should it not be compulsory for all those who get salary from public fund to send their children to government schools? Governmentservants will continue to take irresponsible decisions for government schools until it becomes compulsory for them to send their children to government schools.

We either let experts decide on school policies or if the government wants to continue with the same structure of school governance then it should be made compulsory for all those who get paid from public fund to send theirchildren to government schools.

References:

Government of India (2020) National Education Policy 2020, Ministry of Human Resource Development. New Delhi.

Government of India (2012).Vision of Teacher Education in India – Quality and Regulatory Perspective (Vol. 1, 2 &3). Ministry of Human Resource Development, New Delhi.

Sharma, Chandra Bhushan (2021), ‘Academia’s Wish List’ in The Pioneer, 04 January 2021, http://www.dailypioneer.com/2021/columists/academia-s-wish-list.html

Sharma, Chandra Bhushan (2020)‘A New Direction’ The Millennium Post, 25 December 2020 http://www.millenniumpost.in/opinion/a-new-direction-427459

Professor Chandra Bhushan Sharma teaches at the School of Education, Indira Gandhi National Open University, New Delhi. He can be reached through his email cbsharma01@gmail.com

Rabindranath Tagore: Modern Vaggeyakara

INDIAN

KNOWLEDGE TRADITION

Dr. Ved Mitra Shukla
Assistant Professor,
Department of English
Rajdhani College,
University of Delhi
New Delhi –110015.

Contact
Mob. 9599798727

Rabindranath Tagore (1861-1941) is a celebrated personality not only for his literature but also for his music, painting, performances and so many other things, each of which owns a brilliant and spirited merit quarried from the depths of human sensibility. As a whole his personality is a unique blend of many artistic qualities that come forth through his writings and other mediums of expression before us. Dinkar Kowshik addresses him 'the Universal Man'. He writes:

> The very vastness of his [Tagore's] output – in poetry, novels, dramas, letters, essays; or in music, where he composed more than two thousand songs and set them to his own melodies, his innumerable experiments in ragas and talas; or in painting where he produced, at an advanced age, over two thousand five hundred pictures and drawings, pictures which are marvels of playful fancy and imagery and technique that defied limitations of age and lack of training; his experiments in education which remain as valid today as when they were first initiated; his philosophical insight into the mysterious joy of living; his magnificent, handsome physical frame, and his mystic realization of the unity of life – all these surely bring us to acknowledge his stature as a universal man. (103)

As far Tagore as a poet is concerned, he is a world-poet. It was his highest achievement in the field of poetry when he was awarded the Nobel Prize in Literature in 1913 for Song Offerings (Gitanjali). It was a selection of his Bangla poems that he had translated into English. His poetry is a beautiful blend of words and music (in other words, literature and music). Such poetry is beyond the capacity of an ordinary poet. In this regard, Strickland-Anderson's remark is note worthy:

> Dr. Tagore's relationship to Indian music is unique. Without losing any of its essential character, he has modernized the form by giving a definite subject to his songs; that is, in setting his own verses to music he has given it body and substance and an acceptable brevity more in accordance with modern conceptions. (465)

Some scholars (like Strickland-Anderson and Subhas Sarkar) address him a 'poet-composer' or a 'singer-poet'. In Indian musicology tradition, there is a Sanskrit word, vāggeyakāra, in order to signify such multifaceted personality. The word is a compound-word made up of three words, vāka(word), geya(musical), and kara(one who makes). B. C. Deva says that avāggeyakāra has to possess a thorough grounding in linguistic grammar, a mastery over the lexicon, a command of prosody, a profound knowledge of the rasa theory, an insight into the sixty-four arts, a fine voice, intimacy with traditional and contemporary trends, a capacity to render gamak¬¬a-s in all the octaves and such other capacities. In the world, there are not many names that fall in this category. As far as Indian tradition is concerned, Jayadeva (ca 1200 AD), Purandaradas (1484-1564), Tyagaraja (1767-1847), Haridas (ca 1480-1575) and Rabindranath Tagore (1861-1941) like poet-composers can be acknowledged as the vāggeyakāra. (Deva 65) Keeping in mind Tagore as a vāggeyakāra, a study of his poetrycan provide an exclusive experience to the scholars. In the present paper, there is an attempt to analyze an extraordinary

relationship between his poetry and music. A true and meaningful marriage of words and music offers a literary excellence to his poetry. Tagore himself writes: “I want that music, the companion of poetry, should be liberated from the iron fetters and they should be given marriage (Sangeet chinta 2).” With this sort of fusion, it is rather hard to apprehend which one is superior. It also comes into the form ofthe Rabindra sangeet that flourishes not only the Indian music, but also the Western music. The paper will also focus on Tagore’s experimentations with his poetry which made him a world celebrated Noble laureate.

From his boyhood, Tagore’s passionate love for songs wanted to manifest itself and it appeared in the form of his unique poetry. He believes that the richness of expression of human being cannot be had in words alone. There should also be music. As far as music in Bengal is concerned, as an independent entity (merely musical composition like gata, a rāga based composition without following words of any song), it is extinct. According to Tagore, music has its seat beside the very words. Kirtan, a kind of song sung in the praise of God by the people, is an appropriate example of such poetry in which a beautiful blend of music and built-in rhymed lines of poetry exist. Many other examples can be cited from the traditional poetry. Under the great influence of such poetry, Tagore aspires to unify words with music as his prime objective. In this regard, he says:

The development of music in association with poetry in Bengal would be a peculiar thing. There would be no customary unity of raga-raginisin it, as the same is not to be found in kirtan. In other words, songs would lose their distinctive features; there would be pitfalls of rules because it would have to negotiate the claim of words. But, in such a marriage between music and words, if reciprocal peculiarities are not mutually consolidated in synchronization, union becomes sans loveliness. For this, in a song, words are to compromise with it for the sake of the lyric; they are to become purposeful of the tune. However, poetry and fine arts of this type would, as I think, gradually become extensive. At least, in the history of my own poetics, I see that to compose songs that is to unify words with music only has now become my prime meditation. (Ghosh 3)

It is the wonderful fusion of music and poetry that makes him popular not only in Bengal, but all over the country. His poems are sung and loved by the lowest as well as the highest class. Strickland-Anderson, a critic of Tagore, tries to trace out the reason of Tagore’s popularity, and writes that his compositions are free from the endless reiteration and monotony of subject as found in the old Indian modes or methods. “Instead of the rambling, raga-bound extemporaneous accounts of the super human activities of the gods on Mt. [Mountain] Meru, he has set his own beautifully descriptive poems to the music that is a part of them. And these songs reach a diversified public, from the little boys at the Shanti Niketan School to the high type of audience who heard his music at the recent Rain Festival. His songs, like his poetry, have the universal quality of charm (465-66).”Strickland-Anderson further quotes a few examples from the songs of rain-festival (Gitanjali, No. 22; Lover’s Gift, No. 35; Crossing, No. 34; etc.), and also describes how these were sung in Shanti Niketan during the rain-festival. He writes that “the entire Music Festival was given from memory. There was no written score for orchestra or singers (472).” But, the beautiful presentation of these songs with fluent gestures upheld an incredible atmosphere for the audiences.

In order to have an approved perceptive on Tagore’s thoughts on music and poetry, it is imperative to go through his three essays: (i) “Music and Idea” in Bharati (May 1881), (ii) “The Origin and Necessity of Music” in Bharati (Sep. 1881), and (iii) “Music and Poetry” inBharati (Jan. 1882). All these essays were written in the context of a musical drama, Valmiki-Pratibha (The Genius of Valmiki1881), composed by Tagore. He composed it for performance under the influence of the European vocal music. Santidev Ghosh, a close associate of Tagore, calls the songs of this drama “the English-oriented Bengali songs”. He also gives an example of the song, “Kalikali bolo re aaz” (Speak Kali Kali today). “In the song, prior to their going a hunting, the band of burglars are conveying their prayer to their worshipped goddess Shyama-ma (Mother Shyama) in an intoxicated language. In the first four lines of the song, there is a broken rhyme of slow lay (movement), but the lay from the fifth line ‘oighormattakarenritya’ (Yonder the dancing does deeply intoxicate) to ‘Ha haha’ is drut (quick); one will have to sing in madhya lay (mid-movement) and by breaking the rhyme from ‘Aare bal re Shyama mayer joy’ (say, victory to mother Shyama) to the rest of the song (48).” Through this example, he wants to show that Tagore “was inspired with composing songs worth singing from beginning to end by considering the ideas of lines one after another at a stretch without setting the tunes through the system of division of lines as done in the Indian music. He [Tagore] also understood that it is also necessary to change lay at places, keeping an eye to the idea of words at the time of singing (49).” In all the three essays, Tagore in the name of theorizing his musical play discusses the work as well as the role of a vāggeyakāra

or a poet-composer in the field of music and literature. In his first essay, "Music and Idea", he strongly favors a union between poetry and music. He writes:

What was the aim of raga-ragani? Certainly, it was nothing but to express ideas. When we speak, even then there are tonal variations and diverse mysteries of either in the voice… Those tonal variations and mysteries of ether are heightened in excellence in music. Music is, therefore, only the best medium of mental expression ……. Musing is nothing but reading out poems in the best way. The idea that we incompletely express through speed is expressed more completely in raga-raginis. So the purpose of raga-raginiis to express ideas only……. The experts in music draw every one's attention to that idea. Please find out why a special idea occurs in a special raga-ragini. Take, for instance, why in Puravi alone we remember the evening and in Bhairavi only, the morning. (Ghosh 29)

In the second essay, "The Origin and Necessity of Music",Tagore speaks in continuation of his first essay, "Music and Idea", and maintains the same idea of the unique blend of music and poetry. In the same line, a close reading of the essay suggests that there is a thought expressed over the importance and need of a vāggeyakāra, which is more than a poet or musician. Tagore writes:

We simultaneously speak twofold words of ideas and feelings. The language of emotions in us can achieve clarity with the immediate pleasure that music affords us. The language of emotions alone is the origin of music. ……. The music of our country… has so far gone away from normalcy as separation between feeling and music has taken place, only a lump of quagmire of tunes and remnants in the forms of the patterns and structures of raga-raginis are left. Music has turned into muddy image – lifeless, heartless …… Our indigenous feelingless music is of the worst type. So long as we will not be able to bring forth feelings in it, we will fail to identify ourselves as musicians of the high order. (Ghosh 33)

This essay was written in the response of Herbert Spencer's "The Origin and Function of Music" in which he commented: "It is the function of music to facilitate the development of this emotional language; we may regard music as an aid to the achievement of that higher happiness which it indis tinctively shadows forth (75)." We find that like Spencer, Tagore also takes music as the language of emotion.

The third essay, "Music and Poetry", sheds more light on his concept of musicians of the high order, i.e.vāggeyakāra-s.Tagore seems to criticize merely music (like gata) as well as only words (poems) without tunes due to its fixed and motionless nature. In order to appreciate the blend of music and poetry he says that "the idea of words depends on the tunes. The same word expresses many meanings in different tunes. Both words and tunes can be considered to be existent side by side within expression of ideas. Our languages of feeling are built by a unison of the language of tune [i.e. music] and that of words [i.e. poetry]". (Ghosh 34)

For the implementation of his theory in poetry, Tagore takes recourse to the north Indian classical musical tradition as well as local folk musical traditions (like tappa, tarja, kabigan, panchali, jatra, baul, bhatiyali, kirtan, thumari, etc.). At the many places, in Sangeet chinta, he talks about his affinity for the folk music, and its influence on his poetry. Baul music is one of the various forms of Indian folk music. In the same book, he writes about the impact of Baul songs on his poetry. He writes:

Those who have read my writings know that I have expressed my devotion to Baul Padavalis in many of my writings. When I was at Shelaidah, I used to meet and talked with the group of Bauls. In many of my songs, I have accepted the tunes of the Bauls, and in many songs the unison of the Baul tunes with other tune-patterns with or without my knowledge. From this, it may be understood that the tunes and words of the Baul shave, at a certain period, easily mingled within me…. I do not believe that there is any such brilliance as available in folk literature.…. (Sangeet chinta311)

Musicality is an essential characteristic of his all kinds of works. Even the work of translation is not an exception. W. B. Yeats, Edward Thompson, Buddha dev Bose and many other critics have great admiration for the ever lasting music of Tagore's Song Offerings (Gitanjali in English). In the introduction of the book, Yeats writes:

Rabindranath Tagore, like Chaucer's forerunners, writes music for his words, and one understands at every moment that he is so abundant, so spontaneous, so daring in his passion, so full of surprise, because he is doing something which has never seemed strange, unnatural, or in need of defence. These verses will not lie in little well-printed books upon ladies' table, who turn the pages with indolent hands that they may sigh over a life without meaning, which is yet all they can know of life, or be carried about by students at the University to be laid a side when the work of life begins, but as the generations pass, travelers will hum them on the highway and men rowing upon rivers. Lovers, while they wait one

another, shall find, in murmuring them, this love of God, a magic gulf where in their own more bitter passion may bathe and renew its youth. (x-xi)

In order to have his poetry as well as music in Western staff notations, Tagore associated Arthur Geddes, a Scottish musician, and Arnold Adriaan Bake, a Dutch musician, with himself. They transcribed his songs in staff notations. (Farrell 160) Moreover, with the purpose of approving 'Tagore's lively interest in music and its compelling influence upon his poetry', SubhasSarkar points out 'recurring associations of music' in Song Offerings, 'i.e., 'this flute of reed,' 'melodies eternally' (poem no. 1), 'commandest me to sing,' 'melts into one sweet harmony,' 'Drink with the joy of singing' (poem no. 2), 'the light of thy music illumines,' 'to join thy song' (poem no. 3), 'this chanting and singing' (poem no. 11), 'Un stringing my instrument' (poem no. 13), 'life can only break out in tunes' (poem no. 15), 'then thy words will take wing in songs,' 'melodies will break forth in flowers' (poem no. 19) etc. (178-179)'.

Here, it is noticeable that in order to provide musicality to his poetry, Tagore never loses 'the simplicity of greatness, the mysticism of the spiritually introspective, the indefinable mystery of old India, and the beauty of nature' in his songs. An in herited atmosphere of art, literature and music, and his own brightness facilitate an excellent combination of the music and literature in his creations. In parts, he can be taken as a musician, a literary figure, an artist, a philosopher, an educationalist, and so on. But, as a whole, he is a vāggeyakāra, i.e. a poet-composer of the first water.

References:

Deva, B. C. Indian Music. New Delhi: New Age International (P) Ltd., 2002. Print.

Farrell, Gerry. Indian Music and the West. New York: Oxford UP, 1997. Print.

Ghosh, Santidev. Rabindra sangeet Vichitra. Trans.Mohit Chakrabarti. New Delhi: Concept Pub.Company, 2006. Print.

Kowshik, Dinkar. "Rabindranath – the Universal Man."Rabindranath Tagore and the Challenges of Today.Ed. by Bhudeb Chaudhuri and K. G. Subramanyan. Shimla: IIAS, 1988. pp. 95-111. Print.

Sarkar, Subhas. "Music in Tagore's Poetry: An Insight into Song Offerings." Studies on Rabindranath Tagore.Ed.Mohit K. Ray.Vol. I. New Delhi: Atlantic Pub. and Distr., 2004. pp. 172-180. Print.

Spencer, Herbert. Literary Style and Music. London: Watts & Co., 1950. Print.

Strickland-Anderson, Lily. "Rabindranath Tagore—Poet-Composer: An Appreciation." The Musical Quarterly, Vol. 10, No. 4. Oxford UP, Oct. 1924. pp. 463-474. Print.

Tagore, Rabindranath. Sangeetchinta. Kolkata: Visva-Bharati, 1966. Print.

Yeats, W. B. Introduction. Song Offerings.By R. N. Tagore. Delhi: Macmillan, 1913. Print.

Santi Niketan

Shanti Niketan has a museum, archives, library and other units. It houses a major part of Rabindranath's manuscripts, correspondence, paintings and sketches, 40,000 volumes of books and 12,000 volumes of bound journals, photographs and numerous items associated with the poet's life. It is generally one of the first points of interest for anybody visiting Santi Niketan. Santi Niketan as a centre for culture with the objective of exploring the arts, language, humanities, music etc. Specialised institutes came up in different fields: Cheena Bhavana, Hindi Bhavana, Kala Bhavana, Sangit Bhavana, Bhasa Bhavana, Nippon Bhavana, Many of these institutes with myriad structures have been decorated by illustrious artists.

Shanti Niketan was founded and developed by members of the Tagore family. It was founded by Debendranath Tagore, His son, Rathindranath Tagore was one of the first five students at the Brahmacharya asrama at Santi Niketan. After the death of his father in 1941, Rathindranath took over the burden of all responsibilities at Santi Niketan. When Visva Bharati was made a central university in 1951, Rathindranath was appointed its first vice-chancellor. Rabindranath Tagore wrote many of his literary classics at Santi Niketan.

क्षेत्रीय विज्ञान मेला 2021, प्रयाग मे मंचस्थ अधिकारी वृन्द व स्मृति चिन्ह देते हुए क्षेत्रीय संगठन मंत्री माननीय हेमचन्द्र जी

विद्या भारती पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र की क्षेत्रीय खेलकूद की बैठक गाजियाबाद में भाग लेते हुए प्रतिभागी अधिकारी वृन्द

कोराना काल में गणतंत्र दिवस के अवसर पर रंगमंचीय कार्यक्रम में गीता निकेतन आवासीय विद्यालय कुरूक्षेत्र के भैया-बहिन

ISSN 2395 - 6267 कुल प्रकाशित पृष्ठ 68 RNI NO. 37111/1981

विद्या भारती अखिल भरतीय शिक्षा संस्थान

प्रचार विभाग की अखिल भारतीय बैठक – अहमदाबाद दिनांक 30–31 जनवरी 2021

प्रचार विभाग की अखिल भारतीय बैठक, अहमदाबाद में दीप प्रज्वलन करते हुए मा. जे. एम. काशीपति जी

वंदना सत्र में मा. जे. एम. काशपति जी, अ. भा. संगठन मंत्री, मा. अवनीश भटनागर, अ. भा. मंत्री एवं श्री रवि कुमार जी, अ. भा. सह प्रमुख

सत्र में भाग लेते हुए मा. जे. एम. काशीपति जी, अ. भा. संगठन मंत्री, मा. अवनीश जी भटनागर अ. भा. मंत्री एवं श्री रवि कुमार जी, अ. भा. सह प्रमुख, प्रचार विभाग एवं प्रतिभागी

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्रीराम आरावकर के द्वारा विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान (स्वामी) के लिए जेनिसिस प्रिंटर, सी 74, ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली–110020 (प्रेस) से मुद्रित एवं प्रज्ञा सदन, जी. एल. टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065 (प्रकाशन स्थल) से प्रकाशित।

सम्पादक–डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी